हर खबर की हमें खबर आज की खबर कल पर नजर

R.N.I.NOUPHIN/2014/56940

पब्लिक लहर

आम आदमी की आवाज

कोरोना वायरस से निपटने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य सरकार के कंट्रोल रूम नंबर 0522 / 2230006 2230009 2616482 26110066
टोल फ्री यूपी सरकार . 18001805145
हेल्पलाइन भारत सरकार. 91–11–23978064

वर्ष : 07 अंक : 85 पृष्ठ–4 Email: publickilehar@gmail.com लखनऊ, मंगलवार 15 सितम्बर, 2020 मूल्य 1 : रुपये

सार संक्षेप

21 सितंबर से स्कूलों में फिर लौटेगी रौनक

(एजेंसी) नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कक्षाओं में शिक्षण गतिविधियों के संचालन के लिए दिशानिर्देशों की घोषणा की है। केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री, अश्विनी कुमार चौबे ने रविवार को अपने ट्विटर हैंडल पर दिशा–निर्देशों की एक तस्वीर साझा की। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कौशल प्रशिक्षण संस्थानों के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी किया, उच्च शिक्षा संस्थानों ने 21 सितंबर से प्रयोगशाला कार्य की आवश्यकता वाले तकनीकी कार्यक्रमों में पाठ्यक्रम आयोजित किए हैं। दिशानिर्देशों के अनुसार, कुर्सियों, डेस्क के बीच 6 फीट की दूरी सुनिश्चित करने के लिए बैठने की व्यवस्था की जानी चाहिए। गाइडलाइन्स में कहा गया है कि कक्षा में गतिविधिया अलग–अलग समय पर होंगी, पर्याप्ट शारीरिक दूरी होगी और क्लारूम में अच्छे से साफ सफाई होनी चाहिए।

एक व्यक्ति के अहंकार के कारण देश भर में फैल गया कोरोना : राहुल

(एजेंसी) नयी दिल्ली । कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व अध यक्ष राहुल गांधी ने कोविड–19 महामारी को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर सीधे–सीधे निशाना साधते हुये आज कहा कि उनके 'अहंकार के कारण' यह महामारी देश भर में फैल गई है। श्री गांधी ने एक ट्वीट में लिखा, " कोरोना संक्रमण के आंकड़े इस सप्ताह 50 लाख और सक्रिय मामलों की संख्या 10 लाख पार कर जायेगी। अनियोजित लॉकडाउन एक व्यक्ति के अहंकार की देन है जिससे कोरोना देशभर में फैल गया।" उन्होंने प्रधानमंत्री पर कोविड–19 को गंभीरता से नहीं लेने का आरोप लगाते हुये कहा, " मोदी सरकार ने कहा आत्मनिर्भर बनिये यानि अपनी जान खुद ही बचा लीजिये क्योंकि प्रधानमंत्री मोर के साथ व्यस्त हैं।" च्ड मोर के साथ व्यस्त हैं।

डीएमके, दूसरे दलों ने की नीट परीक्षा रद्द करने की मांग

(एजेंसी) नई दिल्ली । नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (नीट) आयोजित होने के एक दिन बाद संप्रग सहयोगियों ने सोमवार को संसद के बाहर विरोध ा प्रदर्शन कर परीक्षा रद्द करने की मांग की। मानसून सत्र की शुरूआत से कुछ घंटे पहले किए गए इस प्रदर्शन में डीएमके प्रमुख रूप से सक्रिय रहा। डीएमके सांसद गौतम सिगमनी ने आईएएनएस को बताया कि कोविड –19 के कारण कई छात्र नीट की तैयारी अच्छे से नहीं कर सके। इसके अलावा तमिलनाडु में कई छात्र परीक्षा केंद्रों तक नहीं पहुंच सके। विपक्षी सदस्यों ने नीट परीक्षा को तुरंत रद्द करने की मांग की है। उन्होंने केंद्र सरकार से आग्रह किया है कि देश में जब परिवहन और अन्य सुविधाएं पूरी तरह से बहाल हो जाएं उसके बाद फिर से परीक्षा आयोजित करानी चाहिए।

भाषाई विविधता हमारी सांस्कृतिक धरोहर : नायडू

(एजेंसी) नई दिल्ली । उप राष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू ने देश की भाषाई विविधता पर गर्व करने का आह्वान करते हुए कहा कि भाषाएं हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं और उनका समृद्ध साहित्यिक इतिहास रहा है। श्री नायडू ने सोमवार को अपने निवास से श्मधुबन एजुकेशनल बुक्सश के समारोह को ऑनलाइन संबोधित करते हुए कहा कि आज ही के दिन 1949 में हमारी संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस संदर्भ में उपराष्ट्रपति ने 1946 में 'हरिजन' में गांधीजी के लेख को उद्धृत करते हुए कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं की नींव पर ही राष्ट्रभाषा की भव्य इमारत खड़ी होगी। राष्ट्रभाषा और क्षेत्रीय भाषाएं एक दूसरे की पूरक है विरोधी नहीं। श्री नायडू ने कहा कि महात्मा गांधी और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का मार्ग ही हमारी भाषाई एकता को सुदृढ़ कर सकता है। उन्होंने कहा कि हमारी हर भाषा वंदनीय है। कोई भी भाषा हमारे संस्कारों की तरह शुद्ध और हमारी आस्थाओं की तरह पवित्र होती है। उन्होंने बल दिया कि समावेशी और स्थायी विकास के लिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी ही चाहिए इससे बच्चों को स्वयं अभिव्यक्त करने में और विषय को समझने में आसानी होने के अलावा पढ़ने में रुचि पैदा होती है। इस संदर्भ में उन्होंने प्रसन्नता जाहिर की कि नयी शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के महत्व को स्वीकार किया गया है। श्री नायडू ने कहा कि इसके लिए हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अच्छी पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध ा करानी होंगी और इसमे प्रकाशकों की भी अहम भूमिका रहेगी। उपराष्ट्रपति महामारी के कारण बन्दी के दौरान लोगों से अधिक से अधिक भारतीय भाषाओं को सीखने का आग्रह करते रहे हैं। उन्होंने कहा कि सभी भारतीय भाषाओं का विकास साथ ही हो सकता है। हम अन्य भारतीय भाषाओं के कुछ न कुछ मुहावरे, शब्द या गिनती जरूर सीखें। साथ ही उन्होंने सलाह दी कि हिन्दी में भी छात्रों को अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य और प्रख्यात साहित्यकारों से परिचित कराया जाय तथा हिंदी के साहित्यकारों, उनकी कृतियों से अन्य भाषाई क्षेत्रों को परिचित कराया जाय। उन्होंने जोर दे कर कहा कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं को सीखना आसान होगा क्योंकि राष्ट्र के संस्कार, विचार तो समान ही हैं। इस अवसर पर उपराष्ट्रपति ने विद्यार्थियों से कहा कि वे अपनी मातृभाषा का सम्मान करें, रोजमर्रा के कामों में उसका प्रयोग करें। हिन्दी और देश की भाषाओं का साहित्य पढ़े, उसमें लिखे। तभी हमारी भाषाओं का विकास होगा, वे समृद्ध होगीं।

संसद के मानसून सत्र में कई अहम फैसले लिए जाएंगे : मोदी

(एजेंसी) नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद का मानसून सत्र शुरू होने से पहले सोमवार को पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि जब तक कोरोनावायरस के खिलाफ वैक्सीन नहीं आ जाता तब तक हमें सावधान रहने की जरूरत है। मोदी ने कहा संसद के इस सत्र में कई बड़े फैसले लिए जाएंगे और कई अहम मुद्दों पर चर्चा भी होगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि मानसून सत्र ऐसे समय में हो रहा है जब पूरा देश कोरोनावायरस से लड़ रहा है और लोगों को कई तरह की बंदिशों से जूझना पड़ रहा है। देश में अभी तक कोरोनावायरस के 47,54, 357 मामले दर्ज हो चुके हैं। मीडिया से बात करते हुए मोदी ने इस सत्र में हिस्सा लेने वाले सभी सांसदों का आभार जताया और उनसे कहा कि वो वैक्सीन आने तक पूरी सावधानी बरतें। चीन को संदेश देते हुए प्रध ानमंत्री मोदी ने कहा कि पूरा देश आज सीमा पर तैनात जवानों के साथ खड़ा है।

संसद सत्र से पहले 17 सांसदों के कोरोना पॉजिटिव होने की पुष्टि

(एजेंसी) नयी दिल्ली। संसद का मानसून सत्र शुरु होने से पहले लोकसभा सदस्यों का कोरोना टेस्ट कराया गया जिसमें कुल 17 सांसदों के कोरोना पॉजिटिव होने की पुष्टि हुई है। कोरोना पॉजिटिव सांसदों में भारतीय जनता पार्टी के 12, वाईआरएस कांग्रेस के दो ,शिवसेना के एक , द्रविड़ मुनेत्र कषगम के एक और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के एक सांसद शामिल हैं। लोकसभा सदस्यों का कोरोना टेस्ट 13 और 14 सितंबर को संसद भवन में किया गया जिनमें से 16 के 13 सितंबर को कोरोना पॉजिटिव होने और भाजपा सांसद रोडमल नागर के 14 सितंबर को कोरोना पॉजिटिव होने की पुष्टि हुई। भाजपा की मीनाक्षी लेखी, रोडमल नागर, सत्यपाल सिंह, डॉ रामशंकर कठेरिया, प्रताप राव पाटिल, प्रधान बरुआ, विद्युत बारन महतो, जनार्दन सिंह सिगरीवाल, सुकांता मजूमदार, सुखबीर सिंह जौनपुरिया और अनंत कुमार हेगड़े , शिवसेना के प्रताप राव जादव, वाईएसआर कांग्रेस के एल रेड्डेप्पा रेड्डी तथा जी माधवी, द्रमुक के जी सेल्वम तथा आरएलपी के हनुमान बेनीवाल शामिल हैं।

अब भारत में ही बनाये जाएंगे लेजर हथियार

नई दिल्ली। भारत अब लेजर से हमला करने वाले हथियार बनाने की तैयारी कर रहा है। इन हथियारों को प्रत्यक्ष ऊर्जा हथियार (डायरेक्ट एनर्जी वेपन–डीईडब्ल्यू) कहा जाता है।इनके अलावा ऐसे हथियार भी बनाए जा रहे हैं जो माइक्रोवेव किरणें छोड़कर दुश्मन के इलेक्ट्रॉनिक, रेडियो सिस्टम, संचार सिस्टम आदि को नष्ट करने में सक्षम होंगे। युद्ध के दौरान संचार प्रणाली टूट जाने पर दुश्मन अपनी सेना को निर्देश न दे पाने की स्थिति में बेहद कमजोर हो जाता है और इसी का फायदा उठाकर उस पर हमला करने में आसानी होती है। इन हथियारों को बनाने में कितना समय लगेगा, यह तो नहीं पता चला है लेकिन इस प्रोजेक्ट को लक्ष्य निर्धारित करके पूरा किये जाने की योजना है। दरअसल बदलते तकनीक के इस दौर में युद्ध के तरीके और इस्तेमाल होने वाले हथियार भी बदल रहे हैं। पुरानी पीढ़ी के बजाय अब दूर से हमला करने वाले हथियार विकसित हो रहे हैं। पिछले दो दशकों में इलेक्ट्रॉनिक और कंप्यूटर सॉफ्टवेयर आधारित हथियारों का विकास हुआ है। अत्याधुनिक लड़ाकू विमानों में लगी प्रणाली भी इलेक्ट्रॉनिक चिप या सॉफ्टवेयर आधारित होती है। इसलिए आने वाले समय में युद्ध के तौर–तरीके और आधुनिक होंगे, जिसमें अत्यधिक ऊर्जा वाले हथियारों का इस्तेमाल किया। जिस तरह हॉलीवुड की फिल्मों में हथियारों का इस्तेमाल दिखाया जाता है, अब उसी तरह के हथियार बनाने की भारत

तैयारी कर रहा है। यह सब उसी परिकल्पना के आधार पर हो रहा है, जिसके तहत श्आत्म निर्भर भारतश बनाने का सपना देखा गया है। सैन्य बलों के प्रमुख सीडीएस बिपिन रावत ने भी देश के सैन्य उद्योग का स्वदेशीकरण करने और रक्षा गलियारों को आकार देने के लिए रक्षा सुधारों का समर्थन किया है। डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (डीआरडीओ) सूत्रों के अनुसार इन हथियारों को बनाने के लिए भारत सरकार ने एक राष्ट्रीय स्तर का प्रोग्राम बनाया है। इसमें अलग–अलग तरह के प्रत्यक्ष ऊर्जा हथियार होंगे,।

कोरोना संक्रमण के आंकड़े 48.46 लाख से अधिक

(एजेंसी)
नयी दिल्ली । देश में कोरोना महामारी के बढ़ते प्रकोप के बीच पिछले 24 घंटों के दौरान संक्रमण के 92 हजार से ज्यादा नये मामले सामने आने के बाद संक्रमितों का आंकड़ा 48. 46 लाख से अधिक हो गया हालांकि 77 हजार से अधिक लोग इस बीमारी से मुक्त भी हुए हैं। केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से सोमवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले 24 घंटों के दौरान 92,071 नये मामले सामने आने से संक्रमितों का आंकड़ा 48,46,427 पर पहुंच गया जबकि कोरोना संक्रमण से निजात पाने वालों की संख्या 77,511 बढ़कर 37,80,107 हो गयी। इसी अवधि में 1136 मरीजों की मौत हो गयी । देश में अब तक 79,722 कोरोना संक्रमित अपनी जान गंवा चुके हैं। स्वस्थ होने वालों की तुलना में संक्रमण के नये मामले अधि ाक होने से सक्रिय मामले 13,423 बढ़कर 9,86,598 हो गये हैं। देश के केवल 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में सक्रिय मामले कम हुए हैं जिनमें सबसे ज्यादा छत्तीसगढ़ में 1741 और उसके बाद तेलंगाना में 1075 मरीज कम हुए हैं। कोरोना महामारी से सबसे गंभीर रूप से प्रभावित महाराष्ट्र में सक्रिय मामलों की संख्या में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है और यह 10,578 बढ़कर 2,90,716 हो गयी तथा 416 लोगों की मौत होने से मृतकों का आंकड़ा 29,531 हो गया। इस दौरान 11,549 लोग संक्रमणमुक्त हुए जिससे स्वस्थ हुए लोगों की संख्या बढ़कर 7,40,061 हो गयी। देश में सर्वाधिक सक्रिय मामले इसी राज्य में हैं। आंध्र प्रदेश में इस दौरान मरीजों की संख्या 661 कम होने से सक्रिय मामले 95,072 रह गये। राज्य में अब तक 4912 लोगों की मौत हुई है। वहीं कुल 4,67,139 लोग संक्रमणमुक्त हुए हैं। दक्षिणी राज्य कर्नाटक में पिछले 24 घंटों के दौरान मरीजों की संख्या में 1388 की वृद्धि हुई है और राज्य में अब 99,222 सक्रिय मामले हैं। राज्य में मरने वालों का आंकड़ा 7265 पर पहुंच गया है तथा अब तक 3,52,958 लोग स्वस्थ हुए हैं। आबादी के हिसाब से देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में भी इस दौरान 167 मरीजों की वृद्धि हुई है जिससे सक्रिय मामले 68,122 हो गये हैं तथा इस महामारी से 4429 लोगों की मौत हुई है जबकि 2,39,485 मरीज ठीक हुए हैं। तमिलनाडु में सक्रिय मामलों की संख्या 47012 हो गयी है तथा 8381 लोगों की मौत हुई है। वहीं राज्य में अब तक 4,47,366 लोग संक्रमणमुक्त हुए हैं। तेलंगाना में कोरोना के 30,532 सक्रिय मामले हैं और 974 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि 1,27,007 लोग इस महामारी से ठीक हुए है। ओडिशा में सक्रिय मामले 31,539 हो गये हैं और 626 लोगों की मौत हुई है जबकि रोगमुक्त लोगों की संख्या 1,18,642 हो गयी है।

महाराष्ट्र में कोरोना से मरने वालों की संख्या फिर बढ़ी

(एजेंसी) मुंबई। महाराष्ट्र में कोरोनावायरस के मामलों में एक दिन की कमी के बाद रविवार को 400 से ज्यादा मौतें दर्ज की गई। इसके साथ ही महाराष्ट्र अब संक्रमण के मामले में रूस के काफी नजदीक आ गया है। पिछले 24 घंटों में राज्य में 22,543 नए मामले सामने आए जिसके बाद संक्रमितों की संख्या 10,60,308 हो गई है। राज्य में 416 मौतें दर्ज की गई हैं जिसके साथ ही मौतों का आंकड़ा 29,531 हो गया है। महाराष्ट्र अब संक्रमण के मामले में रूस से सिर्फ 2,503 अंक पीछे है। मौतों के मामले में महाराष्ट्र (29,531), रूस (18,578) से काफी आगे है। महाराष्ट्र में कोविड–19 से हर 3.4 मिनट पर एक मौत हो रही है और एक घंटे में 939 मामले बढ़ जाते हैं। राज्य में रिकवरी रेट भी काफी नीचे आ गया है। वो अब 70.02 फीसदी से गिर कर 69.08 फीसदी पर आ गया है, जबकि मृत्यु दर 2.79 फीसदी है जो कि राष्ट्रीय औसत से कहीं ज्यादा है। पिछले 24 घंटों में 11,549 मरीज ठीक होकर घर जा चुके हैं।

इसके बाद ठीक होने वाले मरीजों की कुल संख्या 740,061 हो गई है जबकि राज्य में एक्टिव मामले 290,344 हैं। नई मौतों में सबसे आगे नागपुर है जहां पिछले 24 घंटों में कोरोनावायरस से मरने वालों की कुल संख्या 73 है। इसके बाद पुणे (59), मुंबई (41), ठाणे (28) का नंबर आता है।

बॉलीवुड को लगी ड्रग्स की लत, भाजपा सांसद रवि किशन ने उठाई लोकसभा में आवाज

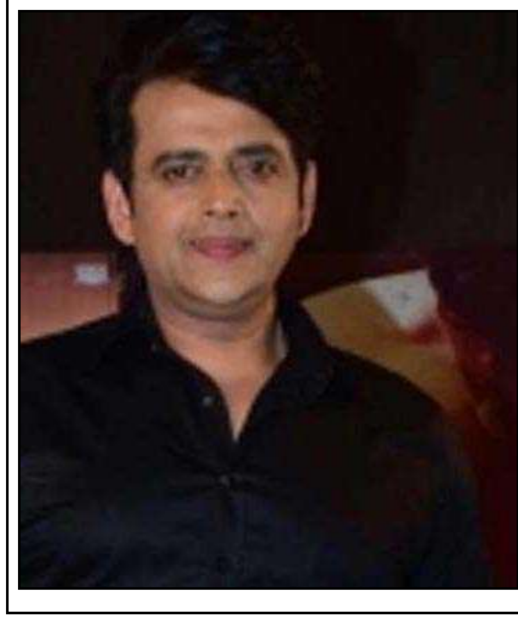

एजेंसी ,नई दिल्ली । फिल्म अभिनेता और गोरखपुर से भाजपा सांसद रवि किशन ने लोकसभा में सोमवार को ड्रग्स का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि बॉलीवुड को ड्रग्स की लत लग चुकी है। रवि किशन ने सुशांत सिंह केस में ड्रग एंगल की छानबीन कर रहीं एनसीबी की तारीफ की। भाजपा के लोकसभा सांसद रवि किशन ने कहा कि, ष्पाकिस्तान और चीन से देश में ड्रग्स की बड़े पैमाने पर सप्लाई होती है। देश में पंजाब और नेपाल के रास्ते ड्रग्स का खेल चल रहा है। जिसके कारण देश के युवा ड्रग्स का शिकार हो रहे हैं। फिल्म अभिनेता और सांसद रवि किशन ने ड्रग्स को बेहद गंभीर मुद्दा बताते हुए केंद्र सरकार से इस मामले में सख्त कार्रवाई की मांग की। उन्होंने सुशांत केस में चल रहे ड्रग एंगल में हुई गिरफ्तारियों को लेकर कहा कि नॉरकोटिक्स ब्यूरो सराहनीय काम कर रहा है। ड्रग नेटवर्क को तोड़ने के लिए कठोर कदम उठाना जरूरी है।

बर्फीले पहाड़ों पर युद्ध लड़ने में सक्षम हैं भारत के जांबाज

नई दिल्ली। कारगिल में 18 हजार फीट ऊंची बर्फ की चोटियों से पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ने का अनुभव रखने वाली भारतीय सेना के लिए लद्दाख की खून जमा देने वाली बर्फीली पहाड़ियां कोई मायने नहीं रखतीं। चीन से तनातनी फिलहाल आने वाले ठंड के दिनों तक खत्म होती नहीं दिखती, इसलिए सेना ने ठंड के दिनों में भी चीनियों से मोर्चा संभालने के इरादे से खुद को तैयार कर लिया है। लद्दाख के उच्च ऊंचाई वाले युद्ध क्षेत्र में विशेषज्ञता वाले भारतीय बल तैनात हैं। लद्दाख की बर्फीले पहाड़ियों पर उन्हीं भारतीय सैनिकों को तैनात किया गया है जिन्हें दुनिया के सबसे ऊंचे और सबसे ठंडे युद्ध क्षेत्र सियाचिन में ग्लेशियर पर (–) 50 डिग्री सेंटीग्रेड में रहने का वास्तविक अनुभव है। इसके विपरीत किसी भी चीनी सैनिक को अंटार्कटिक तरह की स्थिति में (–) 50 डिग्री सेंटीग्रेड में रहने का वास्तविक प्रशिक्षण नहीं है। यह इसलिए संभव हो पाया है क्योंकि भारतीय सेना ने अपनी रणनीति बनाने में इसका ध्यान रखा है। दरअसल भारतीय सैनिक पिछले 3 दशकों से कश्मीर की घाटी में हर रोज आतंकवाद रोधी अभियानों में लगे हुए हैं। एलएसी पर लंबी तैनाती के लिए तैयारी के लिहाज से रक्षा मंत्रालय ने भी सैनिकों के लिए खाद्य सामग्री, आवास, ईंधन, विशेष कपड़े, जूते के साथ ही अतिरिक्त सैनिकों और वाहनों की गणना करके इंतजाम शुरू कर दिए हैं। उच्च ऊंचाई वाले युद्ध के मामले में विशेषज्ञों का मानना है कि भारत चीन पर बढ़त बनाए हुए है। हॉवर्ड केनेडी स्कूल की बेलफर सेंटर फॉर साइंस एंड इंटरनेशनल अफेयर्स की एक रिपोर्ट बताती है कि हिमालयी रेंज में भारतीय सशस्त्र बल चीन की सेना को हरा सकते हैं और विशेषज्ञों को गलत साबित कर सकते हैं कि भारत सैन्य ताकत में चीन से पीछे है। कागज पर भले चीन भारत से अधि ाक मजबूत दिखाई दे सकता है लेकिन वास्तव में भारतीय सैनिकों को अत्यधिक ठंडी जलवायु में लड़ने के लिए बेहतर सुसज्जित और प्रशिक्षित किया जाता है। चीन के पास भारत की तुलना में बड़ा रक्षा बजट है लेकिन युद्ध पैसे से ज्यादा लड़ाकू जवानों के हौसले और जज्बे से लड़ा जाता है। चीन के पास अधि ाक हथियार हो सकते हैं, लेकिन ठंड में युद्ध लड़ने के अनुभव में भारत आगे है। भारत के पास लगभग 3.4 मिलियन सैनिक हैं जबकि चीन के पास 2.7 मिलियन हैं। हार्वर्ड केनेडी स्कूल में बेलफर सेंटर फॉर साइंस एंड इंटरनेशनल अफेयर्स भी कहता है कि भारत की वायु सेना बेहतर परिचालन क्षमताओं के कारण चीन की तुलना में बेहतर है। मिराज–2000 और सुखोई–30 ने भारतीय वायु सेना को चीन के जे–10, जे–11 और सुखोई–27 फाइटर जेट से बढ़त दिलाई है। भारत के पास सभी मौसम में इस्तेमाल होने वाले मल्टीरोल विमान भी हैं, जबकि चीन में केवल जे–10 में ही यह क्षमता है। अब तो भारत के पास राफेल जैसा ताकतवर लड़ाकू फाइटर जेट है जो बर्फीली पहाड़ियों वाली लद्दाख सीमा के हिसाब से फिट बैठता है। राफेल वह मल्टी रोल लड़ाकू विमान है जो पहाड़ों पर कम जगह में भी उतर सकता है।

सम्पादकीय

बढ़ती हिंदी के रूप अनेक

बाईस की उम्र तक मैं कलकत्ता (अब कोलकाता) में रहा। 1960 के दशक में उस शहर में, जहां बांग्लाभाषी लोग कभी हिंदी नहीं बोलते थे, अब बहुत बड़ा बदलाव दिखता है। मैं बांग्ला धारावाहिक आज भी देखता हूं। बीत गया वह दौर, जब बांग्लाभाषी घरों, कार्यक्रमों में हिंदी के प्रयोग को अच्छा नहीं माना जाता था। आज स्थिति यह हो गई है कि कोई धारावाहिक ऐसा नहीं बनता, जिसमें किसी हिंदी फिल्म का कोई गीत न हो या जिसमें हिंदी में कोई संवाद न हो। यह विगत दशकों में हुआ सुखद बदलाव है। सभी समझ रहे हैं कि अब हिंदी के बिना काम नहीं चलने वाला। हमें पूरी विनम्रता के साथ यह ध्यान रखना होगा कि साहित्य की भाषा तो समाज की भाषा से थोड़ी अलग ही रहेगी। मैं जब 1960 दशक में हैदराबाद में कल्पना पत्रिका में काम करता था, तब कल्पना में अनेक प्रदेशों के बड़े–बडेघ लेखक छपते थे। मुक्तिबोध, अज्ञेय लिखते थे, सोबती जी भी लिखती थीं। कल्पना की भाषा का अपना स्तर था, लेकिन आम भारतीय समाज में भाषा का अलग–अलग स्तर और स्वरूप हमेशा से है। जैसे, जब मैं हैदराबाद आ गया, तब वहां दक्खिनी हिंदी हमेशा से चलती रही है। 'किताबां', 'बाजारां', तो वहां आज भी ऐसे ही बोलते हैं। मैं बंगाल से गया था, दक्खिनी हिंदी मेरे लिए खुद ही अचरज थी। अपने पूरे देश में मैंने देखा है कि अलग–अलग प्रदेशों में हिंदी की स्थिति बहुत अलग–अलग है। आज से 15 साल पहले की बात है। अरुणाचल प्रदेश में चाय के लिए निकला, तो देखा कि महिलाएं पान की भी दुकान चलाती हैं। सब हिंदी बोल रही हैं। ध्यान आया कि इनके यहां तो कई बोलियां थीं, जिसके कारण यहां के लोग आपस में ही बात नहीं कर पाते थे, तो इन्होंने हिंदी को अपना लिया। मणिपुर जाता हूं, तो पाता हूं कि वहां बोलने का ढंग अलग है। इस ओर हमारा ध्यान जरूर जाना चाहिए, लेकिन जाता नहीं है कि हिंदी के कितने रूप बन रहे हैं! हम जानते हैं, दक्षिण के लोग हिंदी कैसे बोलते थे, हम उनकी नकल भी उतारते थे, लेकिन वह दुनिया बदल चुकी है। यह हास्य–व्यंग्य की चीज नहीं रह गई है। अब केरल जाइए, लड़कियां हिंदी इतने प्रेम से बोलती हैं कि लगता है, हमें इन्हीं की तरह हिंदी बोलनी चाहिए। अहिंदीभाषियों के मुंह से हिंदी सुनना बहुत अच्छा लगता है और जरूरी है, उन्हें और प्रोत्साहित किया जाए। आज शांति निकेतन के हिंदी विभाग में पचास प्रतिशत लड़के–लड़कियां बांग्लाभाषी हैं। हमारा ध्यान जाना चाहिए कि अहिंदीभाषी प्रदेशों में कितने लोग हिंदी पढ़ रहे हैं। यह मेरे लिए भी अचरज था, जब शांति निकेतन में सुबह टहलने निकला, तो एक लड़की सामने आ गई कि सर, मैं सुमित्रानंदन पंत पर शोध कर रही हूं, मुझे कुछ बता दीजिए। उसी बांग्लाभाषी लड़की ने मुझे बताया कि अहिंदीभाषी युवा कैसे चाव से हिंदी सीख रहे हैं। हिंदी की स्थिति आज इतनी विविध है कि उसका आकलन आसानी से नहीं किया जा सकता। बोलने के अर्थ में हिंदी का बहुत विस्तार हुआ है, और इसका एक बड़ा कारण मैं महिलाओं को मानता हूं। जब अंग्रेजों का जमाना था, तब केवल रेलवे और पोस्ट ऑफिस में तबादले होते थे, बाद में हर विभाग में होने लगे। निजी क्षेत्र के उद्यमों के भी कार्यालय खूब खुल गए। आप सोचिए, कोई महिला किसी नए प्रदेश में सब्जी लाने जाती है, तो किस भाषा में बात करेगी? मिसाल के लिए, एक मलयाली महिला है, उसे अंग्रेजी आती है, वह गुवाहाटी पहुंच जाए, लेकिन वहां की सब्जी वाली को तो अंग्रेजी नहीं आती, तो उसे हिंदी में ही बोलना पडेगा। हिंदी के अनेक उज्ज्वल पक्ष हैं, जो हमारी बहस से नदारद रहते हैं। आज गर्व है, मैं हिंदी का लेखक हूं। जब पेंशन नहीं, बचत नहीं, तब भी हिंदी का हूं, इसीलिए जी पा रहा हूं। अंग्रेजी ने मुझे कभी आतंकित नहीं किया।

एकता के सूत्र में पिरोने का माध्यम बने

हिंदी की समृद्धि की यात्रा अनवरत जारी है। सूचना क्रांति और आधुनिक तकनीक ने उसे विस्तार ही दिया है। कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि राजाश्रय में हिंदी की हनक बढ़ी है। लालकिले से लेकर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन तक में जब प्रधानमंत्री देश–दुनिया को हिंदी में संबोधित करते हैं तो उन्हें ध्यान से सुना जाता है। केंद्र सरकार की तमाम योजनाओं और नीतियों का नामकरण हिंदी वाले शब्दों में नजर आता है। बीच में राज्यों से संवाद को लेकर भी एक पहल हुई थी, जिसे राजनीतिक विरोध के चलते वापस लेना पड़ा था। बहरहाल, हिंदी में देश की आत्मा बसती है। देश के दक्षिण और पूर्वोत्तर में लोग भले ही हिंदी में पारंगत न हों, मगर वे फिर भी संवाद करने की कोशिश जरूर करते हैं। इस दिशा में फिल्मों व टीवी ने बड़ी भूमिका निभायी है। यह अतिशयोक्ति होगी कि कोई कहे कि वह हिंदी नहीं जानता। धाराप्रवाह न बोल सके, लेकिन टूटी–फूटी ही बोले, मगर संवाद कायम जरूर कर सकता है। कई बार ऐसे रोचक प्रसंग सामने आते हैं कि रूस, अफ्रीका और यूरोपीय देशों के लोग हिंदी न जानते हुए भी हिंदी गानों को निर्दोष उच्चारण में दोहराते हैं। कमोबेश दक्षिण भारत, कश्मीर व पूर्वोत्तर से आने वाले प्रतिभागी टीवी के गीत–संगीत के कार्यक्रमों में स्पष्टता से हिंदी शब्दों का उच्चारण करते हैं। सही मायनो में देश को एकता के सूत्र में पिरोने वाली भाषा की दरकार आजादी के बाद से ही रही है। यह लक्ष्य पूरा हो भी जाता, यदि इसको लेकर राजनीति न होती। बहरहाल, हिंदी का कुनबा लगातार विस्तार पा रहा है। इंटरनेट और मोबाइल फोन में हिंदी वर्णमाला की सुविधा ने हिंदी में संवाद की सुविधा को विस्तार दिया है। लेकिन चिंता इस बात की भी है कि हिंदी के व्याकरण और शुद्धता की लगातार अनदेखी की जा रही है। नयी पीढ़ी की संक्षिप्तीकरण की पहल के चलते हिंदी की दशा की चिंता होती है। वहीं पत्र–पत्रिकाओं का अंग्रेजी मिश्रित हिंदी का मोह यदाकदा परेशान करता है जब खबरों व लेखों के शीर्षकों को पढ़ते वक्त अवरोध पैदा होता है। बहरहाल, हिंदी को पांडित्यपूर्ण भाषा बनाने से परहेज भी होना चाहिए। देश में अनुवाद के नाम पर हिंदी को जो जटिल बनाने की कोशिश हुई, उसने अन्य भाषाओं के लोगों को हिंदी से दूर ही किया है। आज अगर हम चाहते हैं कि हिंदी का विस्तार हो तो जरूरत हिंदी के स्वरूप को विराट बनाने की है, जिसमें तमाम भारतीय भाषाओं के उन शब्दों को शामिल किया जाये जो देश में समझे–बोले जा सकते हैं। इसी सोच के साथ अंग्रेजी ने विस्तार पाया है और तमाम अन्य भाषाओं के शब्दों को अंगीकार किया है। जरूरत इस बात की है कि देश में विज्ञान व गणित पाठ्यक्रम हिंदी में उपलब्ध हो। तकनीकी पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता वाली हिंदी की किताबें तैयार की जायें, जिससे देश में वैज्ञानिक सोच का विकास मातृभाषा के जरिये हो सके। आज का दिन इस पर मंथन करने का है।

लुवास भर्ती परीक्षा के टॉप स्कोरर हुए बाहर, कम स्कोर वालों को नौकरी

(लुवास के लैब अटेंडेंट भर्ती परीक्षा के टोपर ने भर्ती परीक्षा में सौ में इक्यासी मार्क्स लिए इसके बावजूद उसकी जगह सत्तर अंक वाले उम्मीदवार का चयन होना इस बात का प्रमाण है कि वर्तमान सरकार की ये नीति मेरिट वाले बच्चों को खा रही है. उनका कैरियर बेवजह बर्बाद कर रही है.)

(हिसार)

हाल में हिसार के लाला लाजपतराय विश्विद्यालय ने अपने विभागों के लिए लैब अटेंडेंट भर्ती परीक्षा का अंतिम चयनित परिणाम जारी किया है. ये भर्ती पिछले दो साल से अटकी थी. लुवास के इन लैब अटेंडेंट के 12 पदों के हरियाणा एवं अन्य राज्यों के हजारों आवेदकों ने परीक्षा दी थी. परीक्षा परिणाम के आधार पर टॉप 250 आवेदकों को डॉक्यूमेंटेशन के लिए बुलाया गया. डॉक्यूमेंटेशन के दौरान दिए गए सोसिओ इकनोमिक स्टेटस के एक्स्ट्रा मार्क्स ने खेल खेला. भर्ती परीक्षा के टोपर सहित अन्य टॉप स्कोरर भी सरकारी नौकरी की दौड़ से भर बाहर और परीक्षा में कम अंक वालों को लुवास में सरकारी नौकरी मिल गई

हरियाणा सरकार ने 2015 के बाद हरियाणा में होने वाली ग्रुप सी और डी की भर्ती के लिए नियम बनाये है कि जिस आवेदक के माता–पिता, भाई –बहन और पत्नी या परिवार में अन्य कोई सरकारी नौकरी में नहीं है उस आवेदक को भर्ती में पांच एक्स्ट्रा मार्क्स दिए जायेंगे. इस नियम से बिना सरकारी नौकरी वाले आवेदकों को तो बहुत बड़ा फायदा होता है मगर सरकारी नौकरी वाले घरों के मेधावी आवेदकों को बेवजह सरकारी नौकरी से वंचित होना पड़ता है. लुवास के लैब अटेंडेंट भर्ती परीक्षा के टोपर ने भर्ती परीक्षा में सौ में इक्यासी मार्क्स लिए इसके बावजूद उसकी जगह सत्तर अंक वाले उम्मीदवार का चयन होना इस बात का प्रमाण है कि वर्तमान सरकार की ये नीति मेरिट वाले बच्चों को खा रही है. उनका कैरियर बेवजह बर्बाद कर रही है. ऐसा हरियाणा के केवल इस भर्ती में ही नहीं वर्तमान सरकार की हर भर्ती में हुआ है. आज जहां सरकारी नौकरी के लिए आधे–आधे अंक के लिए आवेदक दिन–रात में कर रहें है वहां कम अंक वाले आवेदकों को पांच–पांच अंक देकर नौकरी देना सीधा पक्षपात है.लुवास भर्ती के अन्य टॉप स्कोरर दीपेंदर, मनोज और प्रियंका जो टॉप दस में होने के बावजूद चयनित नहीं हुए का कहना है कि इस तरह एग्जाम में पांच–पांच मार्क्स लेने से जब टोपर ही बाहर बैठे है तो अन्य के लिए नौकरी के सारे रस्ते बंद हो गए है अब ऐसा लगता है कि जिन घरों में कोई सरकारी नौकरी में है उनके अन्य सदस्यों को कभी भी हरियाणा में नौकरी नहीं मिलेगी सरकार की इस पालिसी पर आवेदकों ने सवाल उठाते हुए पुछा है कि क्या ये सरकार ऐसा कानून भी बनाएगी जिसके तहत चुनाव में बराबर सीटें जीतकर आने वाली पार्टी में से उस पार्टी को एक्स्ट्रा पांच सीट दे दी जाये जिसकी अब तक को सरकार नहीं बनी और उसकी सरकार बन जाये. इन्होने ये बात हरियाणा के मुख्यमंत्री और देश के प्रधानमंत्री को खुले तौर पर कही है. अगर वो इस बात को स्वीकार कर लेंगे और तो हरियाणा के मेधावी विद्यार्थी भी एक्स्ट्रा पांच मार्क्स को सही मान लेंगे. इन एक्स्ट्रा पांच मार्क्स से आज वो घर भी दुखी है जहां किसी बच्चे को सरकारी नौकरी न होने कि वजह से कहीं कोई छोटी नौकरी तो मिल गयी लेकिन अब उस के अच्छी नौकरी और घर में किसी अन्य सदस्य को नौकरी के सारे रस्ते बंद हो गए. हरियाणा के मेधावी बच्चों की मांग को देखते हुए यहाँ की सरकार और उच्च न्यायलय को स्वत् संज्ञान लेते हुए इस मामले को तुरंत संतुलित करना चाहिए. वरना हरियाणा के हर घर में बेरोजगारी की थाली और घण्टिया बजती रहेगी और यहाँ के युवा आंदोलन की राह पकड़ लेंगे.

हिंदी के कोहिनूर- बाबा कामिल बुल्के

श्याम सुंदर भाटिया

बेल्जियम में जन्मे फादर कामिल बुल्के की जीवनभर कर्मभूमि हिंदुस्तान की माटी रही। हिंदी के पुजारी बुल्के मृत्युपर्यंत हिंदी, तुलसीदास और वाल्मीकि के अनन्य भक्त रहे। 'कामिल' शब्द के दो अर्थ हैं। एक– वेदी–सेवक जबकि दूसरा अर्थ है– एक पुष्प का नाम। फादर कामिल बुल्के ने दोनों ही अर्थों को जीवन में चरितार्थ किया। वह जेसुइट संघ में दीक्षित संन्यासी के रूप में 'वेदी–संन्यासी' थे और एक व्यक्ति के रुप में महकते हुए पुष्प। फादर बुल्के का हिंदी प्रेम जगजाहिर रहा। वह गर्व से कहते थे, संस्कृत राजमाता है, हिंदी बहु रानी है और अंग्रेजी नौकरानी है, लेकिन नौकरानी के बिना भी काम नहीं चलता है। वह बहुभाषा विद थे। बाबा बुल्के अपनी मातृभाषा 'फ्लेमिश' के अतिरिक्त अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, लैटिन, ग्रीक, संस्कृत और हिंदी पर भी संपूर्ण अधिकार रखते थे। हिंदुस्तान की माटी विशेषकर रांची उनके रोम–रोम में बसा था।1951 में भारत सरकार ने फादर बुल्के को बड़े ही आदर के साथ भारत की नागरिकता प्रदान की। बाबा बुल्के भारत के नागरिक बनने के बाद स्वयं को 'बिहारी' कहलवाना पसंद करते। कामिल बुल्के की हिंदी सेवाओं के लिए 1974 में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से नवाजा। फादर हिंदी के इतने सबल पक्षधर थे कि सामान्य बातचीत में भी अँग्रेजी शब्द का प्रयोग उन्हें पसंद नहीं था। उन्हें इस बात का दुरूख था कि हिंदी वाले अपनी हिंदी का सम्मान नहीं करते हैं। बाबा का विचार था– दुनिया भर में शायद ही कोई ऐसी विकसित साहित्य भाषा हो जो हिंदी की सरलता की बराबरी कर सके। उन्हें इस बात का दर्द था कि हिंदी भाषी और हिंदी संस्थाएं हिंदी को खा गए। जब भी कोई उनसे अंग्रेजी में बोलता था, वे पूछ लेते थे– क्या तुम हिंदी नहीं जानते? फादर कामिल बुल्के के छात्र रहे श्री गजेंद्र नारायण सिंह बताते हैं, मैं संत जेवियर्स कॉलेज में दाखिल हुआ तो एक दिन समय निकालकर फादर बुल्के से मिलने गया। उनके कमरे के बंद दरवाजे पर दस्तक लगाते हुए मैंने कहा– 'मे आई कम इन फादर।' मेरे इतना कहते ही दरवाजा खुला और एक अत्यंत ही शांत, सौम्य, साधु पुरुष गर्दन पर भागलपुरी सिल्क की चादर लपेटे हुए खड़ा था। उन्होंने धीरे से गम्भीर स्वर में कहा– अभी दरवाजे पर दस्तक लगाते हुए आपने किसी भाषा का व्यवहार किया? क्या आपकी अपनी कोई बोली या भाषा नहीं है? आप स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिक हैं, फिर भी विदेशी आंग्ल भाषा का व्यवहार हिंदी के एक प्राध्यापक के पास क्यों कर रहे हैं? आपकी मातृभाषा क्या है? प्रश्नों की झड़ी लगा दी उन्होंने। मैं अवाक खड़ा रहा। उन्होंने मुझसे पूछा कि– "आपकी मातृभाषा क्या है?" मैथली बताए जाने पर तो उन्होंने मुझसे निर्विकार भाव से कहा– "आइंदा जब आप मेरे पास आएं तो मैथली या हिंदी में ही बात करेंगे, अंग्रेजी में कदापि नहीं। बुल्के आजीवन हिंदी की सेवा में लगे रहे। हिंदी–अँग्रेजी शब्दकोष के निर्माण के लिए वे सतत प्रयत्नशील रहे। वर्ष 1968 में अंग्रेजी हिंदी कोश प्रकाशित हुआ जो आज भी सबसे प्रामाणिक शब्दकोष माना जाता है। उन्होंने इसमें 40 हजार शब्द जोड़े और इसे आजीवन अद्यतन भी करते रहे। कामिल बुल्के का अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश और बाइबिल का हिंदी अनुवाद 'नया विधान', हिंदी के महत्व और उसकी सामर्थ्य को सिद्ध करने के ही उपक्रम हैं। उनके 'अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश' ने अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी के प्रयोग की राह को सुगम बनाया है।बुल्के ने बाइबिल का हिंदी अनुवाद भी किया। मॉरिस मेटरलिंक के प्रसिद्ध नाटक 'द ब्लू बर्ड' का नील पंछी नाम से बुल्के ने अनुवाद किया। छोटी–बड़ी कुल मिलाकर उन्होंने करीब 29 किताबें लिखीं। हिंदी के इस पंडित का देहावसान गैंग्रीन के कारण 17 अगस्त, 1982 को दिल्ली में हो गया। फादर कामिल बुल्के का दूसरा जग–विख्यात पहलू है कि वे हिंदी के विद्वान, रामकथा के मर्मज्ञ और विदेश में जन्मे भारतीय थे। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 'रामकथा उत्पत्ति और विकास' पर 1950 में पी.एच.डी. की। इस शोध में संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी , बंगला, तमिल आदि समस्त प्राचीन और आधुनिक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध राम विषयक विपुल साहित्य का ही नहीं, वरन् तिब्बती, बर्मी, सिंघल, इंडोनेशियाई, मलय, थाई आदि एशियाई भाषाओं के समस्त राम साहित्य की सामग्री का भी अत्यंत वैज्ञानिक रीति से उपयोग हुआ है। तुलसीदास उन्हें उतने ही प्रिय थे, जितने अपनी मातृभाषा फ्लेमिश के महाकवि गजैले या अंग्रेजी के महाकवि शेक्यपियर। वे प्रायरू कहा करते थे– "हिंदी में सब कुछ कहा जा सकता है।" इस बात की पुष्टि करने के लिए उन्होंने सबसे पहले दर्शन, धर्मशास्त्र आदि विषयों की परिभाषिक शब्दावली का एक लघुकोश 'ए टैक्नीकल इंगलिश हिंदी ग्लौसरी' के नाम से प्रकाशित किया। इसके बाद 'अंग्रेजी–हिंदी कोश' 1967 में तैयार किया। फादर कामिल बुल्के का जन्म 1 सितम्बर, 1909 को बेल्जियम के पश्चिमी फ्लैंडर्स स्टेट के रम्सकपैले नामक गाँव में हुआ। उनके पास सिविल इंजीनियरिंग में बी.एस.सी डिग्री थी, जो उन्होंने लोवैन विश्वविद्यालय से प्राप्त की। 1934 में उन्होंने भारत का संक्षिप्त दौरा किया और कुछ समय दार्जीलिंग में रुके। उन्होंने गुमला अब झारखंड में पांच वर्षों तक गणित का अध्यापन किया। यहीं पर उनके मन में हिंदी भाषा सीखने की ललक पैदा हो गई, जिसके लिए वह बाद में प्रसिद्ध हुए। उन्होंने लिखा है– मैं जब 1935 में भारत आया तो अचंभित और दुरूखी हुआ। मैंने महसूस किया कि यहाँ पर बहुत से पढ़े–लिखे लोग भी अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति जागरूक नहीं हैं। यह भी देखा कि लोग अंग्रेजी बोलकर गर्व का अनुभव करते हैं। उन्होंने निश्चय किया कि आम लोगों की इस भाषा में महारत हासिल करुंगा। अंततः फादर कामिल बुल्के से बाबा कामिल बुल्के कहलाए जाने लगे। फादर कामिल बुल्के ने पंडित बदरीदत्त शास्त्री से हिंदी और संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की और 1940 में 'विशारद' की परीक्षा 'हिंदी साहित्य सम्मेलन', प्रयाग से उत्तीर्ण की। उन्होंने 1942–1944 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से संस्कृत में मास्टर्स डिग्री हासिल की। कामिल बुल्के ने 1945–1949 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में शोध किया, उनका शोध विषय था– 'रामकथा का विकास'। 1949 में ही वह 'सेंट जेवियर्स कॉलेज', राँची में हिंदी और संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष नियुक्त किए गए। कामिल

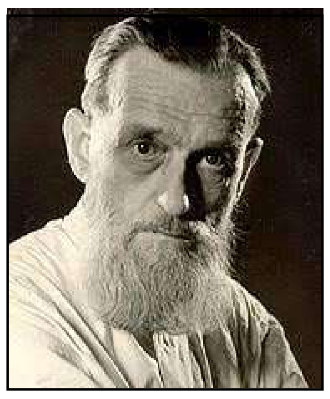

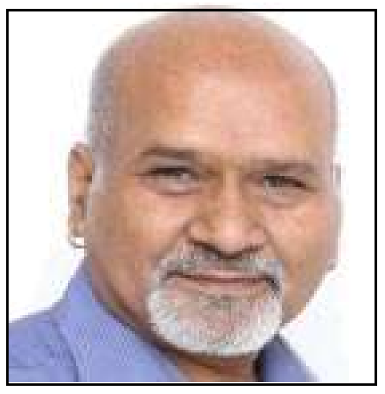

बुल्के सन 1950 में 'बिहार राष्ट्रभाषा परिषद' की कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए। वह सन 1972 से 1977 तक भारत सरकार की 'केन्द्रीय हिंदी समिति' के सदस्य रहे। कामिल बुल्के लंबे समय तक रांची के सेंट जेवियर्स कॉलेज में संस्कृत तथा हिंदी के विभागाध्यक्ष रहे, लेकिन बाद में बहरेपन के कारण कॉलेज में पढ़ाने से अधिक उनकी रुचि गहन अध्ययन और स्वाध्याय में होती चली गई। बुल्के का अपने समय के हिंदी भाषा के सभी चोटी के विद्वानों से संपर्क था। डॉ. धर्मवीर भारती, डॉ. जगदीश गुप्त, डॉ. रामस्वरूप, डॉ. रघुवंश, महादेवी वर्मा आदि से उनका विचार–विमर्श और संवाद होता रहता था। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा को अपना प्रेरणा स्रोत मानते हुए वे अपनी आत्मकथा 'एक ईसाई की आस्था, हिंदी–प्रेम और तुलसी–भक्ति 2' में लिखते हैं– "1945 में डॉ. धीरेन्द्र वर्मा की प्रेरणा से मैंने एम.ए. के बाद इलाहाबाद से डॉ. माता प्रसाद के निरीक्षण में शोध कार्य किया। इलाहाबाद के प्रवास को वे अपने जीवन का 'द्वितीय बसंत' कहते थे। महादेवी वर्मा को वे 'दीदी' और इलाहाबाद के लोगों को वे 'मायके वाले' कहते थे। बुल्के के प्रस्तुत शोध की विशेषता थी कि यह मूलतः हिंदी में प्रस्तुत पहला शोध प्रबंध है। फादर बुल्के जिस समय इलाहाबाद में शोध कर रहे थे, उस समय सभी विषयों में शोध प्रबंध केवल अंग्रेजी भाषा में ही प्रस्तुत किए जाते थे। फादर बुल्के ने आग्रह किया कि उन्हें हिंदी में शोध प्रबंध प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाए। इसके लिए अंततः शोध संबंधी नियमावली में परिवर्तन किया गया। पदमभूषण विजेता एवं मधुशाला के रचियता श्री हरिवंशराय बच्चन बाबा कामिल बुल्के का कितना सम्मान करते थे, उनकी इस कविता से साफ–साफ झकलता है –

फादर बुल्के तुम्हें प्रणाम!
जन्मे और पले योरुप में
पर तुमको प्रिय भारत धाम
फादर बुल्के तुम्हें प्रणाम!
रही मातृभाषा योरुप की
बोली हिंदी लगी ललाम
फादर बुल्के तुम्हें प्रणाम!
ईसाई संस्कार लिए भी
पूज्य हुए तुमको श्रीराम
फादर बुल्के तुम्हें प्रणाम!
तुलसी होते तुम्हें पगतरी
के हित देते अपना चाम
फादर बुल्के तुम्हें प्रणाम!
सदा सहज श्रद्धा से लेगा
मेरा देश तुम्हारा नाम
फादर बुल्के तुम्हें प्रणाम!

सृष्टि में व्याप्त कण-कण की अहमियत

अजय कुमार सेठ

सृष्टि की संरचना में सभी चर–अचर चीजों का योगदान रहा है। अब वो चीजें चाहे सूक्ष्मता ग्रहण किये हुए हों या विशालता, ब्रह्माण्ड से लेकर धरती के गठन में सब वस्तुओं का अपना–अपना महत्व रहा है। मगर आदमी की फितरत ऐसी है कि वह धरती का कर्ताधर्ता अपने आपको या फिर उन वस्तुओं को मानने लगा है जो चीजें मनुष्य की नजर में अच्छी या सुंदर हैं। अब जैसे हम फूल को अहमियत देते हैं मगर कांटों को नहीं। हम पेड़ को जीवनदाता मानकर पूजते हैं मगर पत्थर को तिरस्कृत मान लेते हैं। पत्थर को तो निर्दयता से तोड़ दिया जाता है। अगर कोई व्यक्ति किसी का दिल तोड़ दे या विश्वासघात कर दे तो उसे पत्थर दिल की संज्ञा दे दी जाती है। हम किसी को श्रेष्ठ तो किसी को तुच्छ मान बैठते हैं। ये सब अधूरे मानक हम अपने मन से तय कर देते हैं कि कौन–सी चीज अहमियत रखती है और किस चीज की अहमियत नहीं है। मगर विज्ञान और व्यवहार की दृष्टि से सही तथ्य यही है कि इस धरा पर कण–कण की अपनी अहमियत है। बात उस अहमियत को समझने और स्वीकार करने तक की है। अगर हम अपनी सोच और समझ का दायरा बढ़ाकर देखें तो हम पायेंगे कि हर वस्तु चाहे वह सजीव हो या निर्जीव, सबका हमारे जीवन में बहुत महत्व है। ऐसी ही एक कहानी से इसे समझ सकते हैं। एक समृद्ध व्यक्ति किसी पहाड़ी गांव में हरे–भरे पहाड़ों के बीच नदी के किनारे बने आलीशान घर में रहता था। पास में ही भगवान का मन्दिर भी था। हर सुबह–शाम वह व्यक्ति नदी में तैरता, फिर पहाड़ों के शिखर पर बैठकर उदय और अस्त होते सूर्य के अप्रतिम नजारे को निहारता। उसने घर में भी तरह–तरह के फूलों के पौधे लगा रखे थे। रोज सुबह–शाम मन्दिर में भगवान की आराधना किया करता था। एक दिन बारिश की ठण्डी रात में गहरी नींद सोया कि सुबह सूर्योदय से पहले नहीं जाग सका। देर से उठा और भागता हुआ पहाड़ी के तरफ चला। बीच में नदी का बहाव था। उसे नदी पार करके पहाड़ी पर जाना होता था। उसने नदी में छलांग लगाई तैरकर उस पार जाने लगा। बीच नदी के पानी का तेज बहाव आया। वो हड़बड़ाया और फिर एक बड़े पत्थर को पकड़ लिया। बहाव ज्यों ही कम हुआ तो उसने नदी पार की। अब भागता हुआ पहाड़ी पर चढ़ने लगा कि अचानक पैर नुकीले पत्थर से लगा। उसे चोट लगी। खून बहने लगा। वह बैठ गया और

तिलमिलाते हुए पत्थर पर चिल्लाते हुए बोलाकृये पत्थर भी न बीच रास्ते पड़े रहते हैं, नीरस और बेहूदा। कुछ काम के नहीं। रास्ते से दूर नहीं रह सकते। मैं कल इसे उखाड़कर फेंक दूंगा। वह आदमी इतना बोला ही था कि पत्थर से आवाज आईकृमहाशय! माफ कीजिये। आपको चोट लगी। मगर इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। अगर तुम देखकर चलते तो हादसा नहीं होता। व्यक्ति पहले तो सकपकाया फिर क्रोधित हुआ और पत्थर को कल देख लेने की धमकी देकर घर की तरफ चला। चोट पर मरहम पट्टी की। रात हुई। वह अनमने मन से सो गया। कुछ–कुछ नींद आई ही थी कि उसे लगा कि घर की दीवारें हिलने लगीं और दीवार का पत्थर–पत्थर बोलने लगाकृहम इस आदमी के साथ नहीं रहना चाहते। इसकी नजर में हमारा कोई महत्व नहीं है। हम जा रहे हैं। यह सुनकर आदमी घबराया और हड़बड़ाकर उठा। पसीने से तरबतर। घर से बाहर निकला और मन्दिर की तरफ भागा। भगवान की मूर्ति के आगे हाथ जोड़कर याचना करने लगादृ 'हे भगवान, ये सब क्या हो रहा है। घर पूरा हिल रहा है। कृपया रक्षा करो। दया करो, घर बच जाए मेरा।' तभी मूर्ति से आवाज आईकृहे मनुष्य! मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता क्योंकि यहां मेरा मूर्तरूप भी पत्थर का बना है। तुम्हें पत्थरों से कोई मतलब भी नहीं है। इसलिए तुम यहां से चले जाओ। अब मन्दिर भी हिलने लगा। आदमी का डर दोगुना हो गया। वह गिड़गिड़ाते हुए बोलाकृक्षमा करो प्रभु। बहुत बड़ी गलती हो गई। मैं अंधा हो गया था। मूर्ति से आवाज आईदृठीक है, तुम्हें माफी मिलेगी लेकिन पहले तुम मेरी बात ध्यान से सुनोगे। व्यक्ति बोलाकृजो आज्ञा प्रभु। मूर्ति ने कहाकृहे मनुष्य! मेरा यह मूर्तरूप पत्थर का ही बना है। तुम जिस आलीशान घर में रहते हो वह भी पत्थर का बना है। एक दिन नदी में डूबते वक्त तुमने जिसे पकड़कर जान बचाई थी, वह भी पत्थर ही था। और तो और जिन पहाड़ों पर घंटों बैठकर तुम आनंद का अनुभव करते हो वह भी पत्थरों से ही बने हैं। इस कहानी से यह बात निकलकर सामने आती है कि इस धरती पर सबकी अपनी–अपनी अहमियत है। तुच्छ कुछ भी नहीं है। तुच्छ मनुष्य की सोच है। कण–कण से सृष्टि से है। जिस दिन मनुष्य अन्य चीजों की अहमियत समझने लगेगा तभी उसके मन से अहम खत्म होगा। जैसे कि उस आदमी की आंखें खुल गई थीं। कहानी का सार यूं तो भगवान की मूर्ति के बयान से समझ गए हैं। फिर भी इस कहानी का सार यह भी है कि हमें 'मेरा' शब्द अपने जीवन से निकालकर 'हमारा' शब्द इस्तेमाल करना चाहिए और सबके साझे सहयोग की अहमियत को स्वीकार करना चाहिए। तभी हमारा अस्तित्व बना रहेगा।

हिन्दी दैनिक पब्लिक की लहर

अमेठी में थमने का नाम नहीं ले रहा कोरोना

अमेठी। कोरोना संक्रमण जिले में थमने का नाम नहीं ले रहा है। ताजा रिपोर्ट में 50 और लोग कोरोना

संक्रमित मिले हैं। इसी के साथ जिले में कुल संक्रमितों की संख्या 1873 हो गई है। वहीं सक्रिय केस भी बढ़कर 565 हो गए हैं। सभी को इलाज के लिए कोविड अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। इलाज के दौरान जहां 13 लोगों की जान जा चुकी है। वहीं 1ए293 मरीज अस्पताल से ठीक होकर वापस अपने घर पहुंच गए हैं। रविवार को 38 और मरीजों को ठीक होने के बाद अस्पताल से वापस घर भेजा गया है।

जिलाधिकारी अरुण कुमार ने बताया कि नौए 10 11 व 12 सितंबर को भेजे गए सैंपल में से 1378 व्यक्तियों की रिपोर्ट आई है। जिसमें 1324 लोगों की रिपोर्ट निगेटिव आई है। जबकि 50 लोगों की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई है। वहीं 38 संक्रमित मरीज ठीक होकर अस्पताल से वापस घर पहुंचे हैं। जांच के लिए भेजे गए चार सैंपल फेल हुए हैं। संक्रमित मिले लोगों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जांच में जहां भी नए केस मिले हैं। उस क्षेत्र को सील कर दिया गया है। जिलाधिकारी ने कहाकि संक्रमण को बढ़ने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने जिले के लोगों से संयम व आत्म नियंत्रण पर अधिक ध्यान देने की अपील की है।

फरियादियों से दुर्व्यवहार करने वाले थानेदारों को मिली चेतावनी

अमेठी। कर्तव्य पालन में लापरवाही बरतने और समाज के प्रतिष्ठित लोगों व थाने पहुंचे फरियादियों से बदसलूकी करने वाले थानाध्यक्षों की कुर्सी छिनेगी। शनिवार देर शाम कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित क्राइम मीटिंग में एसपी ने थानाध्यक्षों को अपराध में कमी लाने का निर्देश दिया।

जिले में लगातार हो रहे अपराधों पर अंकुश के लिए शनिवार देर शाम कलेक्ट्रेट सभागार में क्राइम मीटिंग आयोजित हुई। डीएम अरुण कुमार की अध्यक्षता में आयोजित अपराध गोष्ठी में सभी सर्किल सीओ के साथ ही थानों के प्रभारी निरीक्षकध्थानाध्यक्ष मौजूद रहे। क्राइम मीटिंग को संबोधित करते हुए एसपी दिनेश सिंह ने लंबित विवेचनाओं व भूमि विवादों का तत्काल निस्तारण कराने के साथ ही आपसी रंजिश व अपराध पर रोकथाम करने का निर्देश दिया। एसपी ने कहा कि अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए बदमाशों के खिलाफ पाबंदी के साथ गुंडा एक्टए जिला बदर एवं हिस्ट्रीशीट खोलने की कार्रवाई की जाए। डीएम अरुण कुमार ने कोविड.19 से सुरक्षित एवं सतर्क रहते हुए अपनी.अपनी ड्यूटी का निर्वहन करने को कहा।

गोश्ठी में एडीएम वंदिता श्रीवास्तवए एएसपी दयाराम सरोजए एसडीएम संजीव कुमार मौर्याए योगेंद्र सिंहए महात्मा सिंह व रामशंकर तथा सीओ अमेठी पीयूश कांत रायए सीओ मुसाफिरखाना संतोश कुमार सिंह व प्रतिसार निरीक्षक के साथ सभी थाना प्रभारी मौजूद रहे।

आमजन की थाली से दूर हुई हरी सब्जी

डा0बृजेश कुमार उपाध्याय

अमेठी। कोरोना संक्रमण के चलते लागू लॉकडाउन के दौरान जहां आलू की कीमत स्थिर बनी रही वहीं अनलॉक होते ही आलू की बढ़ती कीमत से अन्य सब्जियां भी बेस्वाद होती जा रही है। कीमतों में बेतहाशा बढ़ोतरी होने से आमजन की थाली से हरी सब्जी दूर होती जा रही है। इसके पीछे आलू की मांग बढ़ जाना और उत्पादन कम होना प्रमुख वजह बताई जा रही है।

सब्जियों का फुटकर भाव आलू . 40 प्रति किग्रा प्याज . 30 प्रति किग्रा टमाटर . 60 प्रति किग्रा तरोई . 30 प्रति किग्रा कद्दू . 30 प्रति किग्रा शिमला मिर्च. 80 प्रति किग्रा भिंडी . 40 प्रति किग्रा करैला . 40 प्रति किग्रा

कई वर्शों से किसानों को आलू का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा था। इस बार उत्पादन कम होने से बीते वर्शों की अपेक्षा भंडारण भी घट गया। मार्च में लॉकडाउन लगने के बाद मांग में कमी आने से आलू

की कीमत स्थिर हो गयी थी। लॉकडाउन के समय आलू 15 से 20 रुपये किलो बाजार में रही। वहीं हरी सब्जियों के भाव जमीन पर आ गिरे थे। अनलॉक के साथ.साथ बरसात का मौसम आने से हरी सब्जियों के दाम आसमान छूने लगे। हाल यह है कि बाजार में फुटकर आलू की कीमत 40 रुपये तक पहुंच गई है।

आंकड़ों पर एक नजर रू क्षेत्र में लगभग 10 हेक्टेयर रकबा में आलू की फसल की बोआई की जाती है। किसानों की माने तो प्रति विश्वा खेत में तीन से चार कुंतल आलू का उत्पादन होता है। यहां चिप्सोना जीएम व 3737 किस्म की आलू फसल मुख्य रूप से बोई जाती है।

महिला की खुदकुशी मामले में सास के खिलाफ मुकदमा

अमेठी। मुंशीगंज थाने के भुसियावा गांव में विवाहिता की आत्महत्या के मामले में नया मोड़ आ गया है। पुलिस ने विवाहिता के पिता की तहरीर पर सास के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का केस दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।सुल्तानपुर के धम्मौर थाना क्षेत्र के गांव बिकना गांव निवासी राधा मोहन सोनी की पुत्री रेनू का विवाह कुछ वर्श पूर्व मुंशीगंज थाने के भुसियावां गांव निवासी मथुरा सोनी से हुआ था। रेनू का पति दिल्ली में रहकर नौकरी करता है। घर में रेनू अपनी सात माह की पुत्री और सास चंद्रावती के साथ रहती थी। शनिवार सुबह रेनू का शव उसके कमरे की छत में लगे हुक में बंधे फांसी के फंदे पर लटका मिला था। चंद्रावती ने इसकी सूचना पुलिस के साथ ही रेनू के मायके वालों को दी थी। इस पर पुलिस ने शव फंदे से उतारकर पोस्टमार्टम कराया था। रविवार को मृतका के पिता की तहरीर पर सास चंद्रावती के खिलाफ रेनू को आत्महत्या के लिए उकसाने का केस दर्ज किया गया है। थानाध्यक्ष मिथिलेश सिंह ने बताया कि तथ्यों के आधार पर मामले की जांच की जा रही है।

योगी सरकार कर सकती है बड़ा फैसला

अमेठी। योगी सरकार भी पंचायत चुनाव को लेकर एक अलग ही तैयारी कर रही है। पिछले दिनों खबर आई थी कि राज्य में होने वाले त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव को लेकर योगी सरकार बड़ा फैसला ले सकती है। ग्राम पंचायत क्षेत्र पंचायत और जिला पंचायत के चनावों को लेकर योगी सरकार बड़ा संशोधन करने की तैयारी में है। दरअसल जनसंख्या नियंत्रण को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार दो से अधिक बच्चों वाले उम्मीदवारों के पंचायत चुनाव लड़ने पर रोक लगा सकती है् इसके साथ ही उम्मीदवारों के न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता भी निध ारित करने की तैयारी है। बता दें कैबिनेट के माध्यम से इस प्रस्ताव को मंजूरी दी जा सकती है।

क्या कहना है राज्य निर्वाचन आयोग का

उत्तर प्रदेश निर्वाचन आयोग के विशेश कार्याधिकारी जे पी सिंह का कहना है कि केन्द्रीय पंचायतीराज अधिनियम में पंचायत चुनावों के लिए जो मानक तय किए गए हैं उनमें प्रत्याशियों के चुनाव लड़ने को लेकर जो भी फेरबदल होंगे वह राज्य सरकारों पर छोड़ा गया है। अगर उत्तर प्रदेश सरकार प्रत्याशियों की योग्यता नए सिरे से तय करना चाहतीहै तो उसे विधान मण्डल का सत्र बुलाकर विधेयक पारित करवाना होगा। कैबिनेट की मंजूरी भी इशके लिए जरूरी है।

चिकित्सक व फार्मासिस्ट पर लटकी तलवार

अमेठी। पोस्टमार्टम ड्यूटी में लापरवाही चिकित्सक व फार्मासिस्ट को भारी पड़ सकती है। गौरीगंज विध ाायक की शिकायत पर सीएमओ ने दोनों को नोटिस जारी कर जवाब देने का निर्देश दिया है। सीएमओ ने जवाब से संतुश्ट नहीं होने की दशा में प्रतिकूल प्रविश्टि के साथ ही विभागीय कार्रवाई की संस्तुति करने की चेतावनी दी है।

मुसाफिरखाना के नंदौरा गांव निवासी कमला देवी की मकान की छत से गिरने के बाद इलाज के दौरान शुक्रवार को मौत हो गई थी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए उसी दिन असैदापुर स्थित पोस्टमार्टम हाउस भेजा था। शाम चार बजे तक शव पहुंचने के बाद साढ़े चार बजे तक जरूरी कागजात भी पोस्टमार्टम हाउस पहुंच गए थे।इसके बावजूद शुक्रवार को उसका पोस्टमार्टम नहीं किया गया। इतना ही नहीं शनिवार को भी उसका पोस्टमार्टम देर शाम किया गया। स्वास्थ्य विभाग के रवैए से खफा परिवारीजनों ने इसकी शिकायत गौरीगंज विधायक राकेश प्रताप सिंह से की। विध ाायक ने सीएमओ डॉ0 राजेश मोहन श्रीवास्तव को फोन कर लापरवाह स्वास्थ्य कर्मियों पर कार्रवाई करने को कहा। विधायक की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए सीएमओ ने चिकित्सक व फार्मासिस्ट को नोटिस जारी किया है। नोटिस में पोस्टमार्टम ड्यूटी में लापरवाही बरतने तथा समय से पोस्टमार्टम हाउस नहीं आने के संबंध में तीन दिन के भीतर जवाब मांगा गया है।सीएमओ ने जवाब से संतुश्ट नहीं होने पर प्रतिकूल प्रविश्टि के साथ ही विभागीय कार्रवाई की संस्तुति करने की चेतावनी दी है। सीएमओ की कार्रवाई से स्वास्थ्य विभाग में हड़कंप मचा हुआ है। सीएमओ की ओर से जारी नोटिस पीएम ड्यूटी के लिए नामित सीएचसी तिलोई के डॉण् दयाल शरण दुबे व फार्मासिस्ट अमित पटेल को रिसीव करा दिया गया है। सीएमओ ने बताया कि प्रथम.श्टया चिकित्सक व फार्मासिस्ट की लापरवाही प्रतीत हो रही है।

पंचायत चुनाव में 80 प्रतिशत मौजूदा प्रधान और जिला पंचायत के सदस्य होंगे चुनाव से बाहर

डा0बृजेश कुमार उपाध्याय

अमेठी। यूपी पंचायत चुनाव लड़ने का सपना देख रहे कई मौजूदा प्रधान बीडीसी और जिला पंचायत सदस्यों का सपना टूटने वाला है। 80 प्रतिशत से ज्यादा पंचायत प्रतिनिधियों ने चुनाव आयोग के दिशा. निर्देशों और नियमों का पालन नहीं किया है।

उत्तर प्रदेश में कोरोना संक्रमण को देखते हुए पंचायत चुनाव समय पर नहीं कराए जा सकते। चुनाव आयोग अब अगले साल की शुरुआत में पंचायत चुनाव कराने की कवायद शुरू कर दी है। बता दें कि राज्य के तकरीब 59 हजार ग्राम पंचायतों के कार्यकाल आगामी 25 दिसंबर को खत्म हो जाएगा। राज्य में पंचायत चुनाव को लेकर अभी तक वोटर लिस्ट पुनरीक्षण का काम भी शुरू नहीं हुआ है। निर्वाचन आयोग से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि अक्टूबर तक वोटर लिस्ट पुनरीक्षण अभियान शुरू हो जाएगा और अगले साल मई. जून तक चुनाव कराए जा सकते हैं। ऐसे में राज्य सरकार केंद्रीय पंचायतीराज अधिनियम में कुछ संशोधन करने वाली है। जिससे पंचायत चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों की मुश्किल बढ़ने वाली है।

सीडब्लूसी सदस्य बनाए जाने पर प्रमोद का भव्य स्वागत

नीतेश कुमार

लालगंज–प्रतापगढ। पूर्व राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी को कांग्रेस वर्किंग कमेटी में स्थाई सदस्य मनोनीत किए जाने पर शनिवार को बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता बध ााई देने के लिए लालगंज स्थित कैंप कार्यालय पहुंच गए। यहां पर मौजूद कांग्रेस के वरिश्ठ नेता प्रमोद तिवारी को 51 किलो की माला पहनाने के साथ ही शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। सभी ने एक.दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी बांटी।

इस मौके पर कांग्रेस के वरिश्ठ नेता पं0 श्याम किशोर शुक्ल ने कहा कि प्रमोद तिवारी प्रयागराज मंडल से ऐसे पहले नेता हैंए जिन्हें कांग्रेस वर्किंग कमेटी में स्थाई सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया है। वहीं अन्य कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भी इसे ऐतिहासिक पल बताते हुए कहा कि प्रतापगढ़ के गौरवशाली इतिहास में यह स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया। वहीं विधानमंडल दल की नेता एवं विध

ाायक आराधना मिश्रा मोना ने भी अपने पिता प्रमोद तिवारी को वर्किंग कमेटी का सदस्य मनोनीत किये जाने पर बधाई दी। कहा कि उनके पिता के 40 वर्शों के संसदीय ज्ञान का लाभ वर्किंग कमेटी में रहते हुए कांग्रेस पार्टी को मजबूती प्रदान करेगा। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अखिल भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधीए राहुल गांधी एवं राश्ट्रीय महासिचव प्रियंका गांधी ने पार्टी की सबसे महत्वपूर्ण राश्ट्रीय स्तर पर नीति निर्धारण अहम मसलों के लिए बनी कमेटी में सदस्य चुनकर उनकी पिता की निश्ठाए विलक्षण तार्किकताए योग्यता और संसदीय ज्ञान को अतुलनीय सम्मान से नवाजा है। इसके साथ ही अन्य कांग्रेस नेताओं ने भी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आभार जताया। इस मौके पर पूर्व राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने सभी कार्यकर्ताओं का आभार जताया। साथ ही उन्होंने कहा कि पार्टी नेतृत्व ने उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी हैए उसका वह पूरी ईमानदारी से निर्वहन करेंगे। वह जानते हैं कि देश को अगर कोई संकट से निकाल सकता हैए वह कांग्रेस पार्टी ही है और आने वाला समय कांग्रेस का है। स्वागत समारोह में मुख्य रूप से पूर्व महासचिव पं0 श्याम किशोर शुक्ल पूर्व जिलाध्यक्ष नरसिंह मिश्र डॉ लालजी त्रिपाठी कपिल द्विवेदी डॉ नीरज त्रिपाठी डॉ प्रशांत देव शुक्ल इरफान अली विजय शंकर तिवारी महेंद्र शुक्ल उज्ज्वल शुक्ल प्रेम शंकर द्विवेदी ज्योति तिवारी विधि देव शुक्ल मो0 हुजैफ दानिश माबूद इंद्रानंद तिवारी नागेंद्र पांडेय आकाश मिश्र सलमान खान विश्वास सिंह नूर आलम सहित आदि लोग उपस्थित रहे।

बाघराय पुलिस की पकड़ से दूर तेल चोर

प्रतापगढ। थाना बाघराय के बूढ़ेपुर ग्रामसभा के गौरा गांव का जहा पर बीते कुछ दिन पहले ट्रांसफार्मर से हुआ था तेल चोरी एकोई कार्यवाही नहीं हुई इससे चोरों के हौसले बुलंद हुए और 119–2020 की रात को फिर से ट्रांसफार्मर से तेल चोरी हो गयाए ग्रामीणों ने सूचना दी तो बिहार उपकेंद्र के जेई प्रदीप मौर्या ने बाघराय थाने में लिखित सूचना दी ए बाघराय पुलिस ने मुकदमा पंजी.त करके इतिश्री कर ली एदेखना है कब चोर आते है पकड़ में ए हाल ही में बिहार के ही एमा जाटूपुर में गांव हुआ था तेल चोरी उसकी भी लिखित शिकायत जेई प्रदीप मौर्या ने बाघराय थाने में की थी। कार्यवाही ना होने से चोरों के हौसले बुलंद है। विद्युत विभाग को लगातार लगा रहे है चूनाए हर 15 दिन में हो रहा विद्युत उपकेंद्र बिहार से संबंधित गांवों के ट्रांसफार्मर से तेल चोरी एदेखना है बाघराय पुलिस कब उन्हें भेजती है सलाखों के पीछे या सिर्फ मुकदमा पंजी.त करके हाथ पे हाथ रख कर बैठी रहती है।

किशोरी के साथ दुराचार

प्रतापगढ।संग्रामगढ़ थाना क्षेत्र के एक गाँव की किशोरी अपने घर मे सो रही थी तभी गांव के गैरबिरादरी का युवक छत के सहारे घर मे घुस आया और दुराचार की कोशिश करने लगा जब युवती ने इसका विरोध किया तो युवक ने तमंचा सटाते हुए जान से मारने की धमकी देते हुए युवती के साथ दुराचार किया और भाग गया जब युवती ने ये बात अपने परिजनों को बताई तो युवती के पिता सुबह थाने शिकायत करने के लिए निकले तभी युवक की तरफ से गांव के कुछ असरदार लोगो ने पंचायत बुलाकर लेनदेन की बात कहते हुए मामले को दबाने का प्रयास किया हालांकि मामला सोशल मीडिया में चलने से पुलिस ने मामले को संज्ञान में लेते हुए गांव पहुँची।

जमीन पर कब्जे को लेकर सपा जिलाध्यक्ष से कई वर्षो से चल रहा है विवाद

प्रदीप कुमार एडवोकेट

प्रतापगढ। जमीन पर कब्जे को लेकर पीड़ित और सपा जिलाध्यक्ष से कई वर्शों से विवाद चल रहा है। पहले भी जिलाध्यक्ष दबंगई कर चुके हैं।

मानिकपुर थाना क्षेत्र के बुलाकीपुर गांव निवासी गायत्री पत्नी अर्जुन का जमीन पर कब्जे को लेकर सपा जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव से करीब 10.12 साल से विवाद चल रहा है। पीड़ित अर्जुन ने बताया कि जिस जमीन पर छविनाथ यादव कब्जे का प्रयास कर रहे हैं। उस पर उसके पूर्वजों का कब्जा चला आ रहा है। उसने आरोप लगाया कि चार साल पहले प्रधान के बेटे छविनाथ यादव ने दबंगई से मोहम्मद शमीम निवासी लंगड़ा का पुरवा को इसमें से जबरन कुछ जमीन दे दी थी। इसकी शिकायत उसने अधिकारियों से की थीए लेकिन मानिकपुर पुलिस ने उल्टा उसका ही शांति भंग की आशंका में चालान कर दिया था।

अर्जुन के अनुसार छविनाथ यादव का कहना था कि उसकी पैतृक संपत्ति के बगल कुछ जमीन नवीन परती है। जिसका पट्टा करने का अधिकार प्रधान का होता है। आठ सितंबर को कानूनगो आए थे। उन्होंने नाप कराने के लिए कहा थाए लेकिन अगले दिन वह नहीं आए। उस जमीन पर उसकी दो कमरे की दीवार खड़ी थीए जिस पर छत डलवाने की वह तैयारी कर रहा था। इस बीच छविनाथ यादव अपने गार्डों के साथ पहुंचे और गाली गलौच करते हुए उसे मारा.पीटा।

सपा जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव का अपराध से पुराना नाता है। उनके ऊपर पहले से गैंगस्टरए मारपीटए एसटीएससी समेत 15 मुकदमें दर्ज हैं। उन पर आखिरी मुकदमा चार वर्श पूर्व 16 फरवरी 2016 को मानिकपुर थाने में दर्ज हुआ था। चार साल बाद एक बार फिर मानिकपुर थाने में गायत्री देवी पत्नी अर्जुन गौतम की तहरीर पर पुलिस ने सपा जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव और उनके निजी गार्डों पर एससी एसटी समेत अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज हुआ है। मानिकपुर थाने के रजिस्टर में छविनाथ यादव आइजेड गैंग नंबर 332 के सक्रिय सदस्य हैं।

भाजपा सरकार ने लोकतंत्र की हत्या की है। बदले की भावना से सपा कार्यकर्ताओं का उत्पीड़न किया जा रहा है। फर्जी मुकदमे में सपाइयों को जेल भेजा जा रहा है। सपा जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव की मां गांव की प्रधान हैं। गांव के छोटे मोटे विवाद की पंचायत प्रधान ही करते हैं। रही बात निजी सुरक्षा गार्ड लेकर चलने की तो जब पुलिस ने नगर हटा लिया तो जिलाध्यक्ष को अपनी सुरक्षा की व्यवस्था करनी ही पड़ेगी। अपर पुलिस अधीक्षक कहते हैं कि सपा जिलाध्यक्ष के साथ लोग असलहा लेकर चल रहे थेए जिसका वीडियो वायरल हुआ था। ऐसे में तो जिले में कई माफिया लाइसेंसी व अवैध असलहा लेकर घूम रहे हैं। उनकी गिरतारी क्यों नहीं की जा रही है। सपा कार्यकर्ताओं का उत्पीड़न कदापि बर्दाश्त नहीं करेंगे। इस कार्रवाई का लोकतांत्रिक तरीके से विरोध किया जाएगा। प्रो0 शिवाकांत ओझा।

सपा जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव और सभापति यादव के उत्पीड़न के विरोध में संघर्श किया जाएगा। फर्जी मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं। छविनाथ यादव की मां ग्राम प्रधान हैं और सभापति यादव की पत्नी ब्लाक प्रमुख हैं। एक पंचायत प्रतिनिधि को पुलिस अपराधी बना दे रही है। इन दिनों सपा के कार्यकर्ताओं के खिलाफ बदलने की जो कार्रवाई की जा रही हैए उसका मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। प्रदेश सरकार की दमनकारी .त्य से सपाई डरने वाले नहीं है। मुख्यमंत्री से मांग करते हैं कि सपाइयों के खिलाफ अन्यायपूर्ण कार्रवाई पर विराम लगाएंए अन्यथा सपा का एक. एक कार्यकर्ता संघर्श करने के लिए तत्पर है।संजय पांडेय सपा नेता।

दीवानी न्यायालय के बाहर सपाइयों पर पुलिस ने भांजी लाठी

प्रदीप कुमार एडवोकेट

मानिकपुर थाना क्षेत्र के बुलाकीपुर गांव की अनुसूचित जाति की गायत्री देवी पत्नी अर्जुन के घर धावा बोलकर की गई मारपीट के मामले में पुलिस सपा जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव और उसके गार्ड राम सिंह यादव को गिरतार करके शनिवार शाम चार बजे दीवानी न्यायालय में पेश करने आई थी। इस दौरान दीवानी न्यायालय परिसर के बाहर सपाइयों का जमावड़ा लग गया। सपाइयों ने कोर्ट परिसर में घुसने के लिए पुलिस कर्मियों से धक्कामुक्की की। बवाल की आशंका पर तीन थानों की फोर्स सहित शहर के सभी चौकी इंचार्ज बुला लिए गए। सीओ कुंडा व एएसपी पश्चिमी दिनेश चंद्र द्विवेदी भी न्यायालय परिसर पहुंच गए।

कोर्ट में पेश करने के बाद पुलिस जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव को लेकर जेल जाने लगी। पीडब्ल्यूडी तिराहा गेट पर भीड़ देखकर जिला जज न्यायालय के गेट की ओर से पुलिस कर्मी निकलने लगे। इतने में सपाई भागकर जिला जज न्यायालय गेट पर पहुंचे और पुलिस की गाड़ी को रोकने लगे। इस पर पुलिस कर्मियों ने सपाइयों पर लाठी भांजनी शुरू कर दी। उन्हें दौड़ा.दौड़ाकर पीटा। भागने के दौरान दो.चार सिपाही गिर पड़े। मौके पर भगदड़ मच गई। कुछ सपा कार्यकर्ता भी चुटहिल हो गए। इसके बाद पुलिस कर्मी जिलाध यक्ष व उनके निजी गार्ड को लेकर जेल चले गए।

इस दौरान दीवानी न्यायालय परिसर में पूर्व विधायक नागेंद्र सिंह यादव मुन्नाए जिला उपाध्यक्ष इरशाद सिद्दीकीए वासिक खानए विजय यादवए पूर्व चेयरमैन गुलशन यादवए मीडिया प्रभारी मनीश पालए हरीश शुक्लाए अनीश खानए गुलफाम खानए जगदीश मौर्याए रामअवध यादव काकाए फारुक खानए अब्दुल हईए अहमद अलीए प्यारेलाल खैरा आदि मौजूद रहे। सपाइयों ने जिलाध यक्ष की गिरतारी की निदा की है। कहा कि राजनीतिक साजिश के तहत जिलाध्यक्ष को फंसाया गया है। प्रदेश सरकार अपनी नाकामियों को छिपाने के लिए सपा नेताओं व कार्यकर्ताओं को फर्जी मुकदमों में फंसाकर उत्पीड़न कर रही है। कोर्ट परिसर के बाहर सपाइयों पर पुलिस ने लाठीचार्ज कियाए जिसकी निदा की जाती है। उधरए सपा जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव की गिरतारी की जानकारी होते ही मानिकपुर थाने के बाहर सपाइयों का जमावड़ा लग गया था।

करोड़ों की सरकारी जमीन पर अवैध कब्जे से तनाव

पट्टी– प्रतापगढ़ ।ग्रामीण इलाकों की सरकारी जमीनों पर राजस्व कर्मियों की मिलीभगत व उदासीनता से लगातार अवैध कब्जे होते चले आ रहे हैं। प्रशासन बार.बार दावा तो करता है लेकिन हर बार कुछ दिन अभियान चलकर थम जाता है। ऐसा ही एक मामला पट्टी तहसील क्षेत्र के सलाहपुर में प्रकाश में आया है। यहां ग्रामीणों ने गांव के एक व्यक्ति के खिलाफ राजस्व कर्मियों की मिलीभगत से करोड़ों की सरकारी जमीन पर अवैध कब्जे का आरोप लगाया है। मामले की शिकायत डीएम व मुख्यमंत्री से की गई है।

सलाहपुर के माता प्रसाद चौरसिया का आरोप है कि गांव के एक व्यक्ति द्वारा राजस्व कर्मियों की मिलीभगत से ग्राम पंचायत में बंधवा बाजार से उसरौलीए रेडीगारापुर जाने वाली रोड के किनारे स्थित करोड़ों रूपये की सरकारी जमीन पर पिलर बनाकर व मिट्टी डालकर

अवैध कब्जा किया जा रहा है। आरोप है कि तहसील प्रशासन व मुख्यमंत्री हेल्पलाइन नंबर 1076 पर कॉल करने के बाद भी आरोपित के खिलाफ न तो कार्रवाई की गई न ही अवैध कब्जा रोका जा रहा है। इससे ग्रामीणों में आक्रोश है। गांव के शिवनाथ वर्माए रामलाल पटेलए रमेश यादवए सुनील कुमारए पप्पू ए धर्मवीर पटेलए बलराम पटेल आदि ग्रामीणों ने करोड़ों की जमीन पर हो रहा अवैध कब्जा रोके जाने की मांग की है।

कार्यालय ग्राम पंचायत ऐंठा विकास खंड गौरीगंज जनपद –अमेठी

पत्रांक /मेमो /सा0 शौ0 पा0 /2020-21 दिनॉक:14/09/2020

अल्पकालीन निविदा /सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत ऐंठा विकास खंड - गौरीगंज ,जनपद -अमेठी में 15 वां /राज्य /14 वां वित्त आयोग के अंतर्गत वर्ष 2020 -21 के क्रम में सामुदायिक शौचालय निर्माण हेतु (04 सीट)सामग्री आपूर्ति करने हेतु निविदा इच्छुक फर्म दिनॉक 21-08-2020 से दिनांक 23-08-2020 तक निविदा फार्म ग्राम पंचायत से प्राप्त कर सकते हैं | तत्क्रम में दिनॉक 26-08-2020 को साय 3:00 बजे तक निविदा प्राप्त की जायेगी तथा उसी दिन 3:30 बजे निविदा दाताओ की उपस्थिति में निविदा खोली जायेगी | उक्त कार्य की Bill Of Quantity कार्यालय अवधी में प्राप्त की जा सकती हैं | सामग्री की दर मे GST सहित सम्मिलित हैं |

क्र0 सं0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत	धरोहर धनराशि	कार्य पूर्ण करने का समय
1	सामुदायिक शौचालय का निर्माण	405834.00	8500.00	02 माह

सचिव
दीक्षा द्विवेदी
ग्राम पंचायत ऐंठा
गौरीगंज -अमेठी

प्रधान
मो0 शमीम
ग्राम पंचायत ऐंठा
गौरीगंज -अमेठी

बंगला बचाने पत्नी के साथ एलडीए पहुचे सांसद अफजाल अंसारी, नक्शा निरस्त करने की दी गई थी नोटिस

संवाददाता,लखनऊ। सांसद अफजाल अंसारी अपनी पत्नी फरहत अंसारी के साथ सोमवार को एलडीए पहुंचे। एलडीए उपाध्यक्ष शिवाकांत

द्विवेदी से मिलकर उनके समक्ष अपने डालीगंज स्थित बंगले के बारे में पक्ष रखा। उन्होंने बंगले को नियमानुसार बना बताया। उन्होंने उपाध्यक्ष से कहा की उनके डालीबाग स्थित मकान का नक्शा निरस्त करने की नोटिस देना गलत है। वह एलडीए में करीब आधे घंटे रुके। अफजाल अंसारी व फरहत अंसारी का मकान जियामऊ के उसी गाटा संख्या 93 में बना है जिसमें मुख्तार अंसारी के दोनों बेटों अब्बास अंसारी व उमर अंसारी के मकान बने थे। जिलाधिकारी ने गाटा संख्या 93 की जमीन को निशक्रांत घोषित कर दिया है। इसी के चलते पिछले महीने एलडीए ने मुख्तार अंसारी के दोनों बेटों के मकान गिरा दिए थे। फरहत अंसारी के मकान का नक्शा एलडीए ने 2007 में पास किया था। तब फरहत अंसारी ने इस जमीन को अपनी बताया था। लेकिन अब जिलाधिकारी ने एलडीए को जो पत्र भेजा है उसमें जमीन निशक्रांत बताई है। एलडीए के अधिकारियों का कहना है कि इस पत्र के हिसाब से फरहत अंसारी का जमीन का मालिकाना हक खत्म हो गया है। इसीलिए उन्हें नोटिस दी गई थी। उपाध्यक्ष शिवाकांत द्विवेदी ने नोटिस की सुनवाई के लिए 14 सितंबर की तारीख नियत की थी। इसके चलते सांसद अफजाल अंसारी व उनकी पत्नी फरहत अंसारी सोमवार को सुनवाई में शामिल हुए। एलडीए अधिकारियों से उन्होंने कहा कि उनका नक्शा नियमानुसार पास है। जमीन के मालिक भी वही हैं। लिहाजा नक्शा निरस्त न किया जाए और बंगले को गिराने की कार्रवाई भी न की जाए। उन्होंने एलडीए को लिखित में भी जवाब दिया है। अब जल्दी है इनके बंगले के बारे में निर्णय लेगा। एलडीए के अधिकारी अफजाल अंसारी के जवाब से संतुष्ट नजर नहीं आए। जल्दी ही वह इस पर फैसला लेंगे। एक इंजीनियर ने बताया की प्रकरण बड़े लोगों से जुड़ा है। इसलिए मामले में उपाध्यक्ष शिवाकांत द्विवेदी की फैसला लेंगे। नक्शा निरस्त होने के बाद उनकी बिल्डिंग अवैध हो जाएगी। जिसके बाद एलडीए को इसे गिराने में कोई कानूनी दिक्कत नहीं आएगी।

कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग को सक्रियता से किया जाए संचालित - मुख्यमंत्री योगी

कोविड–19 के दृष्टिगत अस्पतालों एवं चिकित्सा संस्थानों में सभी आवश्यक दवाइयां पर्याप्त मात्रा में हो उपलब्ध

लखनऊ संवाददाता अमित शर्मा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग को पूरी सक्रियता से संचालित किया जाए। इस कार्यवाही को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए उन्होंने आवश्यकतानुसार सर्विलॉन्स टीम्स की संख्या में वृद्धि के निर्देश दिये हैं।

मुख्यमंत्री लोक भवन में आहूत एक उच्च स्तरीय बैठक में अनलॉक व्यवस्था की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने ड्रग कंट्रोलर को निर्देशित करते हुए कहा कि वे सुनिश्चित करें कि कोविड–19 के दृष्टिगत अस्पतालों एवं चिकित्सा संस्थानों में सभी आवश्यक दवाइयां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहें । इन औषधियों के बैकअप की व्यवस्था भी की जाए। कहीं भी दवाओं की जमाखोरी न होने पाए। यदि ऐसा हो तो दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। राज्य में स्थापित ऑक्सीजन प्लाण्ट्स प्रदेश के सभी मेडिकल कॉलेजों में निधारित दर पर ऑक्सीजन की आपूर्ति करें। ऑक्सीजन की दर वही रहनी चाहिए, जो कोविड–19 के पहले

थी। उन्होंने ऑक्सीजन की कालाबाजारी की शिकायत मिलने पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि अस्पतालों, मेडिकल कॉलेजों तथा चिकित्सा संस्थानों में ऑक्सीजन की कमी न होने पाए।

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिये कि जनपद लखनऊ, कानपुर नगर, प्रयागराज, गोरखपुर, वाराणसी तथा मेरठ में सभी मेडिकल कॉलेज तथा अस्पताल पूरी गुणवत्ता एवं क्षमता से कार्य करें। उन्होंने कहा कि ड्रग कंट्रोलर इन जनपदों में दवाई तथा ऑक्सीजन की सुचारु व्यवस्था बनाये रखें। ड्रग कंट्रोलर द्वारा प्रदेश में दवाओं एवं ऑक्सीजन की उपलब्धता व आपूर्ति के सम्बन्ध में मुख्यमंत्री कार्यालय को प्रतिदिन आख्या उपलब्ध करायी जाए। कोविड अस्पतालों में चिकित्सकों एवं पैरामेडिक्स की पर्याप्त संख्या में उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए लगातार प्रशिक्षण कार्य क्रम संचालित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य विभाग के अधीन कोविड चिकित्सालयों में बेड्स की संख्या में वृद्धि की जाए। के0जी0एम0यू0, एस0जी0पी0जी0आई0 तथा आर0एम0एल0आई0एम0एस0 द्वारा 1,000 आई0सी0यू0 बेड्स की व्यवस्था की जाए।कोविड–19 से बचाव व सुरक्षा के सम्बन्ध में लगातार जागरूकता अभियान संचालित किया जाए। उन्होंने निर्देश दिये कि सभी स्थानीय निकायों में पब्लिक एड्रेस सिस्टम स्थापित करते हुए इसके माध्यम से लोगों को कोविड–19 के सम्बन्ध में जागरूक किया जाए।

पुलिस और फोरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी में होंगे 10 विभाग, जल्द सृजित होंगे कुलपति, कुलसचिव व वित्त अधिकारी के पद

संवाददाता,लखनऊ। उत्तर प्रदेश पुलिस और फोरेंसिक साइंस विश्वविद्यालय के लिए 20 करोड़ रुपये का प्राविधान किया गया है। विश्वविद्यालय के लिए कुलपति, कुलसचिव एवं वित्त अधिकारी के पद जल्द सृजित किए जाएंगे। इसमें कुल 10 विभाग होंगे। यह जानकारी अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश कुमार अवस्थी ने दी। उन्होंने बताया कि भौतिकी, प्रलेख, विज्ञान, डीएनए, साइबर क्राइम, हैं। इन विभागों के लिए प्रोफेसर के असिस्टेंट प्रोफेसर के 42 पदों सहित हैं। विश्वविद्यालय की स्थापना में फोरेंसिक यूनिवर्सिटी गांधीनगर के करने की प्रक्रिया चल रही है। स्थित पिपरसण्ड गांव में

आग्नेयास्त्र, रसायन, विष, जीव व्यवहार एवं विधि विभाग शामिल 14, एसोसिएट प्रोफेसर के 14 व कुल 496 पद प्रस्तावित किए गए तकनीकी सहयोग के लिए गुजरात अलावा इजराइल से भी एमओयू लखनऊ के सरोजनीनगर थाना क्षेत्र विश्वविद्यालय के लिए 35.16 एकड़ भूमि का प्रबंध कर लिया गया है। एडीजी तकनीकी सेवाएं को विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए नोडल अधिकारी नामित किया गया है। स्थापना में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय लखनऊ से भी सहयोग लिया जा रहा है। अपर मुख्य सचिव गृह ने कहा कि साइबर अपराध से निपटने के लिए प्रदेश में फोरेंसिक लैब तथा साइबर थाने की स्थापना की जा रही है। ऐसे अपराधों की विवेचना एवं अभियोजन के लिए अपने पुलिस तंत्र एवं अभियोजकों को साइबर अपराध के क्षेत्र में दक्ष बनाया जाना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से फोरेंसिक साइंस विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है। विश्वविद्यालय में यूपी के अलावा देश के अन्य अन्य राज्यों के साथ ही पड़ोसी देशों नेपाल, भूटान, मालद्वीव व श्रीलंका आदि के छात्र भी पढ़ सकेंगे।

कोरोनो पॉजिटिव मरीजों के घर की अब लाल रंग से होगी पहचान,प्रशासन ने की विशेष व्यवस्था

संवाददाता,लखनऊ। कंटेनमेंट जोन में अब फिर पहले की सख्ती की जाएगी। इसीलिए इन जोन में पुलिस का कड़ा पहरा रहेगा और बेवजह कंटनमेंट जोन में आने–जाने पर रोक रहेगी। मुख्यमंत्री ने देर रात पुलिस कमिश्नर और डीएम को इस बारे में निर्देश दिए। इसके बाद फौरान पुलिस प्रशासन हरकत में आ गए। लखनऊ के इन्दिरा नगर, आशियाना समेत कई इलाके हाईरिस्क जोन बनाए गए हैं जहां सिर्फ पुलिस और होमगार्ड ही नहीं बल्कि, प्रशासन के अफसर भी वहां निरीक्षण करते हुए मातहतों की सक्रियता परखेंगे। कोविड मरीजों के घर के बाहर लाल रंग का फ्लेक्स यानी एक तरह का पोस्टर लगाया जाएगा। जो उनके सम्पर्क में आएं हैं उनके घर के बाहर पीले रंग का फ्लेक्स होगा। इसके अलावा कंटेनमेंट जोनों में सर्विलांस टीमें लगातार लोगों की खैर खबर ले रही हैं। रोजाना 25 हजार मास्क बांटे जा रहे हैं। लोग मास्क पहनें और नियम मानें इसके लिए 40 पुलिस की टीमें लगाई गई हैं। डीएम अभिषेक प्रकाश ने बताया कि हाईरिस्क जोन में बैरिकेडिंग लगाई जाएगी। नगर निगम को समय समय पर सैनिटाइजेशन करना होगा। सीसीटीवी से निगरानी की व्यवस्था की गई है। रिमोट मॉनीटर स्मार्ट सिटी मुख्यालय में रहेगा जहां से नजर रखी जाएगी। इसके अलावा संवेदनशील अस्पतालों के बाहर पुलिस व सुरक्षा बलों का पहरा होगा। विवेकानंद, इंटीग्रल, केजीएमयू, मेयो, टीएसएम, चन्दन, ओपी चौधरी, एरा, सहारा और मेदांता अस्पताल के बाहर पुलिस बल तैनात किया जा रहा है। पुलिस–प्रशासन के अनुसार मौजूदा समय इंदिरा नगर, गोमती नगर, आशियाना, अलीगंज, चिनहट और आलमबाग को रखा गया है। इन इलाकों में सर्वाधिक कोविड रोगी हैं। ऐसे में पुलिस इन स्थानों पर मजबूत बैरिकेडिंग लगाकर शिफ्ट के आधार पर 1302 कांस्टेबिल, 1302 होमगार्ड्स लगाए जा रहे हैं। इन इलाकों में 2017 ऐसे घर हैं जहां एक से अधिक कोविड रोगी हैं। पुलिस कमिश्नर ने 2700 और होमगार्ड्स के लिए शासन

से निगरानी के लिए मांग की है। राजधानी में 2500 ऐसे क्षेत्र हैं जहां एक स्थान या घर पर एक ही कोरोना संक्रमित है। इनकी संख्या रोजाना घटती बढ़ती रहती है। ऐसे रोगियों की निगरानी के लिए 40 थानाक्षेत्रों में 206 पॉलीगन यानी पुलिस बीट बनाई गई हैं। पिकेट पर पुलिस कर्मी भ्रमण करते हुए ऐसे घरों पर नजर रख रहे हैं। 30 घर ऐसे हैं जहां कोविड रोगियों के सम्पर्क में आने वाले रह रहे हैं। अब उन पर भी नजर रखी जाएगी। जो नए होम आइसोलेशन के मरीज हैं उनकी सूची जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग पुलिस को सौंपता रहेगा जिससे पुलिस उन पर भी निगरानी रख सके।

कोरोना काल में नई पहल : ट्विटर पर एक घंटा 10 मिनट में पूरी दुनिया देखेगी रामलीला

संवाददाता,लखनऊ। कोरोना संक्रमण के कारण काशी की प्रमुख रामलीलाएं भले स्थगित रहेंगी, लेकिन डिजिटल प्लेटफार्म पर पूरी दुनिया 30 दिन रामलीला देखेगी। प्रतिदिन दो मिनट 20 सेकेंड के एपिसोड में प्रत्येक प्रसंग को दर्शाया जाएगा। इस हिसाब से मात्र एक घंटा 10 मिनट में ही संपूर्ण रामायण प्रसारित हो जाएगी। काशी घाट वॉक के ट्विटर हैंडल पर रामलीला का प्रसारण पहली से 30 अक्तूबर तक किया जाएगा। डिजिटल प्लेटफार्म पर प्रसारण के लिए रामलीला की रिकार्डिंग शुरू हो चुकी है। विभिन्न पात्रों के संवाद भी डब किए जा रहे हैं। काशी घाट वॉक के संस्थापक, बीएचयू के न्यूरोलॉजिस्ट प्रो. वीएन मिश्रा ने बताया कि रामलीला का क्रम रामनगर की रामलीला के आधार पर निर्धारित किया गया है। वीडियो में दिखने वाले पात्र लुगदी से बने मुखौटे धारण किए दिखेंगे। उन्होंने बताया कि विदेशों में रामलीला करने वाले कलाकारों को भेजने के लिए मुखौटों के 35 सेट तैयार कर लिए गए हैं। प्रो. मिश्रा ने बताया कि बाजार में उतारने के लिए रामलीला के पात्रों पर आधारित मुखौटों का वृहद सेट भी तैयार किया गया है। एक सेट पर आठ हजार रुपए की लागत आ रही है। इन सेटों की मांग अमेरिका में रहने वाले एक एनआरआई ने भी की। पहला आर्डर होने के नाते उन्हें जब यह सेट निरूशुल्क भेंट करने का प्रस्ताव काशी घाट वॉक की ओर से दिया गया तो उन्होंने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि कलाकार भी इन दिनों कठिन हालात से गुजर रहे हैं इसलिए मैं आठ हजार रुपयों की जगह आठ हजार अमेरिकी डालर का भुगतान करूंगा ताकि और सेट तैयार करने में मदद मिले और कलाकारों को आमदनी भी हो। अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण की खुशी में विदेशी रामलीला कलाकारों को भेंट करने के लिए बनाए गए रामलीला के मुखौटे सबसे पहले काशी विश्वनाथ को अर्पित किए जाएंगे। 14 सितंबर को काशी विश्वनाथ मंदिर, संकटमोचन मंदिर और मां गंगा को अर्पित करने के बाद मुखौटों का सेट 15 सितंबर के बाद किसी भी दिन रवाना कर दिया जाएगा। मुखौटों की पहली खेप जिन देशों को भेजी जाएगी, उनमें अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, जापान, रूस, थाइलैंड, म्यांमार, कंबोडिया, फिलीपींस और श्रीलंका शामिल हैं। सेटों की मांग करने वालों में इंग्लैंड के एनआरआई दूसरे और ऑस्ट्रेलिया के तीसरे स्थान पर हैं। मुखौटों के साथ भेजे जाने वाले रामायण मैनुएल को 14 से बढ़ाकर 18 पेज कर दिया गया है। यह मैनुएल डॉ. संतोष द्विवेदी ने बनाया है।

सीतापुर में हाइटेंशन तार टूटा, किसान की मौत, परिवार चार और लोग झुलसे

संवाददाता,लखनऊ। सीतापुर में संदना कस्बे में सुंदरानंद आश्रम के करीब खेत में हाइटेंशन तार टूटकर गिर गया। बिजली के तार की चपेट में एक किसान की मौत हो गई। खेत में काम कर रहे एक ही परिवार के चार और लोग झुलसे हैं, इन्हें गंभीर अवस्था में स्वास्थ्य केन्द्र में भर्ती कराया गया है। संदना के कस्बे के सुंदरानंद आश्रम के करीब लोगों के खेत हैं। सोमवार करीब आठ बजे लोग खेतों में काम कर रहे हैं। खेतों के ऊपर से होकर गुजरा हाइटेंशन तार अचानक टूटकर गिर गया। विद्युत स्पर्शाघात होते ही खेतों में अफरातफरी मच गई। एक किसान बुरी तरह चपेट में आ गया। एक ही परिवार के चार और लोग

भी झुलस गए। किसी तरह ग्रामीणों ने संदना कस्बा वासी बनवारी 59 पुत्र जसकरन, सुरेन्द्र 45 पुत्र छोटेलाल, इनकी पत्नी चमेली देवी, पुत्री लक्ष्मी, पुत्र प्रदीप को गभीर अवस्था में स्वास्थ्य केन्द्र ले जाया गया। जहां बनवारी को चिकित्सकों ने बनवारी को मृत घोषित कर दिया गया। सुरेन्द्र, चमेली, लक्ष्मी और प्रदीप का उपचार चल रहा है। झुलसे ग्रामीणों की हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। ग्रामीणों द्वारा विद्युत विभाग के अधिकारियों को दी गई सूचना के बाद ही विद्युत आपूर्ति को रूकवाया जा सका। उपजिलाधिकारी मिश्रिख सहित अन्य अधिकारियों ने मौका मुआएना किया।

15 साल पुराने बिना रजिस्ट्रेशन वाहनों

पर 5000 जुर्माना, ऐसे करें बचाव

संवाददाता,लखनऊ। शहर में बिना पंजीयन दौड़ रहे वाहन आरटीओ के लिए सिरदर्द बन गया है। बार–बार नोटिस के बाद भी गाड़ी मालिक चेत नहीं रहे है। 15 साल उम्र पूरी के होने के बाद भी गाड़ी मालिक दो व चार पहिया वाहन सड़क पर बिना पंजीयन दौड़ा रहे हैं। अब ऐसे वाहन चेकिंग में पकड़े गए तो पांच हजार रुपये तक जुर्माना देना पड़ेगा। ऐसे वाहनों की संख्या लखनऊ में पांच लाख 32 हजार है तो प्रदेश में 46

लाख के पार बताई जा रही है। ये आकड़ा एक अगस्त 2020 तक का है। इनमें 50 फीसदी वाहन सड़क पर चलने का दावा किया जा रहा है। जोकि इनके चलने से शहर में प्रदूषण का स्तर बढ़ने का खतरा मंडरा रहा है। एआरटीओ (प्रशासन) अंकिता शुक्ला ने कहा कि बगैर पंजीकृत वाहन अपराध के श्रेणी में आते है। बावजूद गाड़ी मालिक लापरवाह बने हुए है। अब ऐसे वाहनों के पुनरू पंजीयन नहीं कराने पर चेकिंग में पकड़े गए तो पांच हजार रुपये तक जुर्माना लगना तय है। प्रदेश के 76 जिलो से मुख्यालय पहुंचा बिना पंजीकृत वाहनों की सूची चौकाने वाली निकली। सबसे ज्यादा बगैर पंजीकृत वाहन लखनऊ में पाए गए। जबकि दूसरे नंबर पर कानपुर व तीसरे पर वाराणसी रहा। इन तीनों शहरों में वाहनों से निकलने वाला सबसे ज्यादा प्रदूषण लोगों को बिमार कर रहा है। 15 साल उम्र पूरी कर चुके दो व चार पहिया वाहनों के प्रदूषण जांच के बाद गाड़ी मालिक को परिवहन विभाग के वेबसाइट पर जाकर आवेदन के साथ फीस जमा करना पड़ेगा। जिसका प्रिंट आउट लेकर संबंधित आरटीओ कार्यालय जाना पड़ेगा। वहां गाड़ी का ब्यौरा दर्ज करके पुनरू पंजीयन का प्रमाण पत्र मिलेगा। वहीं जिन्होंने गाड़ी कबाड़ में बेच दिया है ।

उम्मीद संस्था द्वारा आत्मनिर्भर की दिशा में शुरू किया गया स्वस्थ सब्जियां विक्रय का कार्य

लखनऊ संवाददाता अमित शर्मा आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए उम्मीद संस्था ने गरीब एवं बेसहारा लोगों की मदद के लिए आत्मनिर्भर प्लान के तहत हरी सब्जियां क्रय एवं विक्रय करने का निर्णय लिया है जिसके तहत सीधे किसानों से सब्जियां खरीद कर ग्राहक सीधे कम मूल्य में पहुंचाई जाएंगी शहरवासियों को सबसे सस्ती एवं स्वस्थ सब्जियों को प्रदान करने का कार्य उम्मीद संस्था द्वारा आत्मनिर्भर की दिशा में शुरू किया गया है। इस प्रयास से संस्था सीधे किसानों से स्वस्थ सब्जियां लेकर बाजार एवं ठेलेवालों से भी सस्ती सब्जियां शहरवासियों को देगी जिससे लोगो की जेब पर आर्थिक बोझ कम हो सकेगा एवम किसानों को भी सहयोग किया जा सकेगा। इस प्रयास से मिलने वाली राशि से संस्था द्वारा

लंगर सेवा, गरीब बच्चो को शिक्षा, रैन बसेरों में आवश्यकता हेतु इस्तेमाल किया जाएगा।

उम्मीद संस्था सभी शहर वासियों से निवेदन करती है आइये उम्मीद की सब्जी को लेकर इस सेवा में अपना योगदान दे। आर्डर के लिए 9651133333 पर सम्पर्क एवं व्हाट्स एप्प कर सकते है ।

वरिष्ठ भाजपा नेता ने दी शुभकामनाएं

पब्लिक की लहर

उत्तर प्रदेश सफाई कर्मचारी आयोग के सदस्य वरिष्ठ भाजपा नेता मनोज बाल्मीकि ने आदर्श नगर कॉलोनी निवासी भावना विमल का पीसीएस में चयन होने पर उनके निवास स्थान पर जाकर उनके परिवार सहित शुभकामनाएं दी उन्होंने कहा हमें भावना विमल से प्रेरणा और सीख लेनी चाहिए और युवाओं को एक संदेश दिया और कहां युवा ही देश का भविष्य है अगर युवा शिक्षित होगा तो देश तरक्की करेगा और देश में शिक्षा का प्रसार बड़ी तेजी से होगा क्योंकि देश की तरक्की में युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

जिला अधिकारी के निर्देश पर सीडीओ निर्देशन मे बन रहे मश्डल स्कूल

शिवली, कानपुर देहात। जिलाधिकारी के निर्देश पर मैथा विकास खंड क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरैया लालपुर पोषण वाटिका का निर्माण किया जाएगा जिसको लेकर सोमवार को खंड विकास अधिकारी मैंथा ने ब्लॉक क्षेत्र के समस्त पंचायत सचिवों के साथ पोषण वाटिका हेतु ग्राम प्रधान संजू सिंह की अगुवाई में भूमि पूजन किया इसके बाद विद्यालय में बच्चों को निशुल्क यूनिफॉर्म वितरित किए। सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं को संतुलित आहार उपलब्ध कराने की दृष्टि से संचालित मध्यान्हए भोजन योजना में पोस्टिक खाद्यान्न में सामग्री उपलब्ध हो सके और कम लागत में विद्यालय परिसर में ही सब्जियां उगा कर मध्यान भोजन में बच्चों को उपलब्ध कराए जाएं इस निर्देश के साथ जिलाधिकारी डॉ दिनेश चंद्र ने मुख्य विकास अधिकारी को निर्देश दिए थे जिसके क्रम में मुख्य विकास अधिकारी जोगिंदर सिंह विद्यालय में पोषण वाटिका लगा बनाने के निर्देश जारी किए थे जिसके तहत सोमवार को मैथा विकासखंड क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक लालपुर शिवराजपुर में पोषण वाटिका लगाए जाने हेतु खंड विकास अधिकारी सच्चिदानंद प्रसाद ग्राम प्रधान संजू सिंह ने भूमि पूजन किया ।

प्रकाशक, मुद्रक,स्वामी, एवं सम्पादक चन्द्र प्रकाश द्वारा,शिरीन प्रिंटिग प्रेस,भूसामंडी,कसाईबाड़ा,अमीनाबाद, लखनऊ से मुद्रित करा कर ३३ भगवती निवास पानदरीबा चारबाग, लखनऊ से प्रकाशित।

सम्पादक
चन्द्र प्रकाश
मो.9305619783
प्रधान सम्पादक
आशीष बाजपेई
मो.9616949122

R.N.I.NO
UPHIN/2014/56940

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

भाजपा राज में किसान, कामगार, श्रमिक और नौजवान सबसे ज्यादा बदहाल

अमरिया। पूर्व कैबिनेट मंत्री हाजी रियाज अहनद व सपा जिलाध्यक्ष आनन्द सिंह यादव ने क्षेत्र के एक दर्जन से अधिक गाँवो का दौरा करके कहा कि भाजपा राज में किसान, कामगार, श्रमिक और नौजवान सबसे ज्यादा बदहाल हैं।किसानों को राहत देने की जगह कर्ज पर जीने की सलाह दी जा रही है। पीलीभीत क्षेत्र के गांव निसरा,बरातबोझ, अमखड़िया,आडोली,चका, हरहरपुर हसन,करगैनी, करगैना, धुंधरी आदि में हाजी रियाज अहमद ने कहा कि भाजपा सरकार मंडिया खत्म करने के बाद किसान की खेती को भी कारपोरेट खेती में बदल डालेगी।उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार ने जनहित की योजना शुरू नहीं की है।थोथे वादे और झूठी घोषणा करने में बस प्रतियोगिता होती रहती है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में सत्ता संरक्षित अपराधों की बाड़ आ गई है।भाजपा के दम्भी विधायक और सांसद अधिकारियों के साथ खुले आम दुव्यर्वहार करने लगे हैं। महिलाएं एवं बच्चियाँ असुरक्षित हैं।अपराधी बेखौफ हैं। सरकारी शह पर फर्जी एनकाउंटर हो रहे हैं।आये दिन आर्थिक तंगी से परेशान लोग परिवार सहित आत्महत्या कर रहे हैं। सपा के नि. जिलाध्यक्ष आनन्द सिंह यादव ने कहा कि भाजपा मूल मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाने में माहिर है।वह भरम फैला कर चुनाव जीतती है।समाज के सदभाव को बिगाड़ना और नफरत का जाल फैलाना उसकी फितरत है। पिछड़ी जातियों–दलितों और सवर्ण जातियों के बीच नफरत फैलाई जा रही है। समाजवादी पार्टी के मुखिया श्री अखिलेश यादव जी ने शानदार योजनाओं को धरातल पर उतारा । इस मौके पर नि. विधानसभा अध्यक्ष असलम जावेद अंसारी ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर सैय्यद इरशाद मियां, जगपाल गुप्ता, अंजुम, हाशिम, इरशाद नेताजी, प्रगट सिंह, शाकिब रजा, सरबजीत सिंह, मगदूम शाह, रामचरण मौर्य,शायर अली, मकबूल शाह, धर्मपाल,मोहम्मद साबिर पूर्व प्रधान,इरशाद मंसूरी, मोहम्मद अहमद मंसूरी, इमरान मंसूरी, राशिद मलिक, जमशेद खाँ, जावेद अब्बासी,जमुना प्रसाद भारती, जगदीश श्रीवास्तव, जहूर अहमद,नबीजान खान आदि मौजूद रहे।

पीलीभीत पुलिस अधीक्षक द्वारा चौकी घुँघचिहाई, चौकी बलरामपुर, थाना पूरनपुर व चौकी जमुनिया थाना माधोटांडा व चौकी रिछोला थाना गजरौला का किया गया आकस्मिक निरीक्षण

पीलीभीत। पुलिस अधीक्षक जयप्रकाश द्वारा चौकी घुघचाई, चौकी बलरामपुर थाना पूरनपुर , चौकी जमुनिया थाना माधोटांडा व चौकी रिछोला थाना गजरौला का आकस्मिक निरीक्षण किया गया । द्वारा सभी चौकी परिसर में साफ सफाई रखने हेतु संबंधित को निर्देशित किया। चौकी रिछोला पर गंदगी देख द्वारा कड़ी नाराजगी व्यक्त की गयी व संबंधित को साफ सफाई हेतु निर्देशित किया गया । महोदय द्वारा प्रस्तावित नवनिर्मित थाना घुँघचिहाई का भी निरीक्षण किया गया व संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए ।

पीलीभीत पुलिस अधीक्षक द्वारा थाना अमरिया पर किया गया अर्दली रूम अपराध नियंतण एंव विवेचना आदि के सम्वंध मे

पीलीभीत। पुलिस अधीक्षक जयप्रकाश द्वारा थाना अमरिया पीलीभीत पर अर्दली रूम किया गया जिसमें अपराध नियंत्रण व विवेचनाओं की जानकारी ली। सर्वप्रथम पुलिस अधीक्षक ने थाना परिसर में लगी केविड–19 सेनेटाइजर मशीन का निरीक्षण किया थाना कार्यालय, सीसीटीएनएस कार्यालय की साफ–सफाई हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए,अभिलेखों की गहनता से जाँच की, इसके उपरांत पुलिस अधीक्षक महोदय ने कोरोना वायरस के दृष्टिगत सोशल डिस्टेन्सिंग का पालन करते हुये एक–एक कर सभी विवेचकों से विवेचनाओं की जानकारी ली और सभी विवेचकों से लंबित विवेचनाओं को शीघ्र निस्तारित करने एवं वांछित अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी के निर्देश दिये। महोदय द्वारा थाना प्रभारी को प्रार्थना पत्रों का गुडवत्तापूर्ण व समयवद्ध निस्तारण करने के निर्देश दिए। इस दौरान क्षेत्राधिकारी सदर , थाना प्रभारी उदयवीर सिंह व थाना अमरिया के समस्त सब इस्पेक्टर मौजूद रहे ।

'ग्राम पंचायत शेरपुर कला के सचिव बदले गए'

'अभी तक नही छोड़ा चार्ज'

पूरनपुर। पूरनपुर जिला अधिकारी के अनुमोदन से जिला पंचायत राज अधिकारी के निर्देश पर विकासखंड पूरनपुर की ग्राम पंचायत शेरपुर कला के सचिव मेहरबान सिंह राणा को हटा दिया गया एवं उनके स्थान पर विजय कुमार ग्राम विकास अधिकारी को किया गया 15 दिन हो गए लेकिन अभी तक मेहरबान सिंह राणा द्वारा ग्राम पंचायत का चार्ज नहीं छोड़ा गया।

भारत सरकार के पूर्व केंद्रीय मंत्री लोकप्रिय वरिष्ठ नेता श्री रघुवंश प्रसाद जी के निधन पर शोक सभा बैठक हुई'

पीलीभीत। आज दिनांक 13/09/2020 को समाजवादी पार्टी नि. जिलाध्यक्ष आनंद सिंह यादव की अध्यक्षता में लॉ कॉलेज के ग्राउंड में एक शोक सभा बैठक आयोजित की गई । शोक सभा बैठक को संबोधित करते हुए पूर्व केबिनेट मंत्रीः नि. प्रदेश अध्यक्ष समाजवादी अल्पसंख्यक सभा मा.

हाजी रियाज अहमद ने कहा पूर्व केंद्र मंत्री श्री रघुवंश प्रसाद जी के आज दिल्ली के 'एम्स' में हुए निधन से देश में गरीबों के लिए बुलंद आवाज से बात रखने वाले एक जमीनी संघर्षशील , समर्पित नेता को खो दिया है। नि. जिलाध्यक्ष आनंद सिंह यादव ने शोक सभा बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि समाज की अंतिम पंक्ति पर खड़े हर व्यक्ति की आवाज ,पूर्व केंद्रीय मंत्री ,लोकप्रिय वरिष्ठ नेता श्री रघुवंश प्रसाद जी का निधन अत्यंत दुखद एवं भारतीय राजनीति की अपूरणीय क्षति है। उनके निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए 2 मिनट का मौन रख उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की दिवगंत आत्मा को शांति एवं शोकाकुल परिवार को दुख सहने की शक्ति दे भगवान ! शोकसभा सभा बैठक में डॉ.राममूर्ति गंगवार ,विवेक यादव, रिंकू पांडे ,नफीस अहमद, नरेश गुर्जर, आशीष चौहान, राजकुमार,अरसद खाँ आदि मौजूद रहे।

भारत सरकार द्वारा राज्य के कौशल विकास को प्रोत्साहन प्रदान करने के उद्देश्य से ''संकल्प'' योजना शुरू

मदन चौरसिया जिला संवाददाता उन्नाव ।

उन्नाव 14 सितम्बर 2020 । आज जनपद उन्नाव में उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन द्वारा जिला अधिकारी कार्यालय में जिलाधिकारी श्री रवीन्द्र कुमार, मुख्य विकास अधिकारी डा0 राजेश कुमार प्रजापति, कौशल विकास मिशन उन्नाव के एम०आई०एस० प्रबंधक, श्री पवन कुमार व जिला कौशल समिति के सदस्यों की उपस्थिति में कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय एवं भारत सरकार द्वारा राज्य के कौशल विकास को प्रोत्साहन प्रदान करने के उद्देश्य से ''संकल्प'' योजना शुरू की जा चुकी है। इसके अन्तर्गत जनपद उन्नाव में नियुक्त महात्मा गांधी नेशनल फेलोशिप के प्रतिनिधि के द्वारा जिला कौशल समिति के समक्ष डी0एस0डी0पी0 (डिस्ट्रिक्ट स्किल डेवलपमेन्ट प्लान) प्रस्तुत किया गया। जिला समन्वयक, जिला कार्यक्रम प्रबंधन इकाई उन्नाव ने बताया कि इससे जिला उन्नाव में जिला कार्यक्रम प्रबन्धन इकाई कौशल विकास मिशन के द्वारा प्रवासी मजदूरों व अन्य कामगारों को कौशल प्रदान कर उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत उन्हें लाभ व रोजगार प्रदान कराया जा सके।

पटाका फैक्ट्री मे हुआ विष्फोट मासूम की मौत चार मासूम गम्भीर रूप से घायल

मदन चौरसिया जिला संवाददाता उन्नाव ।

उन्नाव ।मौरावां थानाक्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम सभा चन्दा खेडा के प्रसाद खेडा मे लगभग 30सालों से मानकों को ताख पर रखकर नवनिहालो से पटाका फैक्ट्री मे पटाका बनवा रहें ।जब इन नवनिहालो के हाथों मे कांपी और कलम होनी चाहिए ।उस समय उनसे बारूद के ढेर पर बैठाकर उनकी जिन्दगी के साथ किया जा रहा खिलवाड़ ।और श्रम विभाग के अधिकारी खुलेआम उडवा रहे श्रम कानूनो की धज्जियां ।इसी कडी मे आज प्रसाद खेडा मे आज फकरूद्दीन पुत्र कमरूद्दीन की पटाका बनाने की फैक्ट्री जो कि गांव के समीप खेतो मे बना रखीं थी ।उसमे समय लगभग 3बजे विष्फोट होने से एक नबालिग अरूण कुमार पुत्र कमलू उम्र लगभग 15साल की मौकेपर मौत हो गई ।और सुजीत कुमार पुत्र अशोक कुमार उम्र 14साल ,लवकुश पुत्र हरिश्चंद्र उम्र 12साल ,आशीष पुत्र घसीटें उम्र उम्र17साल, सौरभ पुत्र हरिश्चंद्र उम्र 11 विष्फोट मे घायल हो गए ।जिनको 108एम्बुलेंस से मौरावा स्वास्थ्य केन्द्र लाया गया ।जिनका इलाज डा .अखिलेश सोनी ने किया ।जिसमे सुजीत की हालत गम्भीर देख जिला अस्पताल रिफर कर दिया गया ।वहीं घायलो ने बताया कि रियाज नामक व्यक्ति हम लोगों को प्रतिदिन 10रूपये देकर बारूद पीसवाते थे ।यह कहकर कि यह मिट्टी है जैसे ही विष्फोट हुआ हम लोग दूर खेतों मे भाग कर गिर गए ।और हम लोगों के आगे अंधेरा ही अंधेरा छा गया विष्फोट इतना भयानक था कि आसपास के दूर गांव तक सुनाई पडी औरविस्फोटक इतना भयानक था कि उस मकान मे लगीं ईटें लगभग 100मीटर दूर तक बिखर गये ।और चीखपुकार मच गई वहीं घटना स्थल पर मौके पर पहुंचे उपजिलाधिकारी पुरवा राजेश चौरसिया ,मौरावा पुरवा असोहा थानो की पुलिस घटनापर पहुंच कर घटना स्थल का निरीक्षण किया। थानाध्यक्ष मौरावा राजेंद्र सिंह बिताया कि पटाका बनाने वले तीन लोगों को पकड कर लाया गया उनसे ।पूछताछ जारी ।और शव को कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिये जिला अस्पताल भेज दिया ।।

रनिया से चौबेपुर के बीच बन रही नवीन विद्युत लाइन के के कारण किसानों और बिजली विभाग के बीच अधिकारियों में चल रहे गतिरोध का समापन

शिवली, कानपुर देहात। उत्तर प्रदेश पावर ट्रांसमिशन के तहत रनिया से चौबेपुर विद्युत केंद्र के लिए बन रही नवीन विद्युत लाइन के टावर लगाने को लेकर बिजली विभाग व किसानों के बीच कायम गतिरोध को शिवली कोतवाली में एसडीएम ने दोनों पक्षों को बैठा कर आम सहमति से निर्णय निकाल लिया जिसके तहत किसानों को दो फसलों की छत पूर्ति के साथ सर्किल रेट की 85: धनराशि का बतौर मुआवजा दिया जाएगा जिससे अब टावर निर्माण का रास्ता साफ हो गया है।

शासन के निर्देश पर उत्तर प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कारपोरेशन लिमिटेड की ओर से विद्युत उपकेंद्र रनिया से चौबेपुर तक नवीन विद्युत टावर लगा कर लाइन जोड़ने का कार्य जारी है जिस पर विभाग द्वारा किसानों को सर्किल रेट के आधार पर टावर लगाने में प्रयुक्त भूमि का 85: सर्किल मुआवजे की दर से मुआवजा देने का प्रावधान था जिसको लेकर किसान लगातार विरोधा कर रहे थे और मुआवजे को बढ़ाने के साथ ही टावर लगाने एवं विद्युत लाइन खींचने के दौरान फसलों को हो रहे नुकसान की क्षतिपूर्ति की मांग कर रहे थे जिसको लेकर विभागीय अधिकारियों व किसानों के बीच गतिरोध जारी था और कार्य प्रभावित हो रहा था जिसका मामला बढ़ने पर डीएम दिनेश चंद्र के निर्देश पर सोमवार को एसडीएम मैथा राम शिरोमणि व कोतवाल शिवली वीरपाल तोमर की मौजूदगी में किसानों व उत्तर प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कारपोरेशन लिमिटेड के अधिकारियों के बीच संबंध में बैठक स्थापित करा कर दोनों पक्षों की बात सुनी गई किसान मुआवजा राशि बढ़ाए जाने की मांग कर रहे थे जिस पर अधिकारियों ने दखल देकर किसानों को टावर की प्रयुक्त भूमि का सर्किल रेट के आधार पर 85: मुआवजा देने एवं लाइन खींचने का टावर लगाने के दौरान फसलों की पूर्ति हेतु दो फसलों क्षतिपूर्ति करने की सहमति बनी जिससे किसानों को दो फसलों के नुकसान के क्षतिपूर्ति राशि के साथ सर्किल रेट की पचासी प्रतिशत की धनराशि बतौर मुआवजा मिलेगी जिससे किसानों का उत्तर प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कारपोरेशन लिमिटेड के बीच में शिर्डी जंग पर विराम लग गया और अब टावर लगाकर लाइन खींचने का काम किया जा सकेगा बैठक में क्षेत्रीय किसान गया सिंह प्रमोद कुमार त्रिजुगीनारायण कौशलेंद्र सिंह महेंद्र कुमार रंजन सिंह निवासी गण भतुआमऊ सहित दिनेश गुप्ता भाऊपुर, हाकिम सिंह यादव, बलवंत सिंह सहित पावर कारपोरेशन के अवर अभियंता चंद्रेश प्रताप सिंह मौजूद रहे बैठक में विभागीय अधिकारियों व किसानों के बीच आम सहमति बनने के बाद अब काम संपन्न हो सकेगा।

हमें गाय की सेवा मां के समान करनी चाहिए : केएनगोविंदाचार्य

शिवली, कानपुर देहात। शिवली कस्बे में रूरा रोड पर संचालित राघव गोवर्धन गोशाला में रविवार की देर रात पहुंचे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन के पुरोधा केन गोविंदाचार्य ने गौशाला में संरक्षित गायों को गुड़ व केला खिला कर पूजन किया तथा गौशाला उस के सफल संचालन को लेकर गौ सेवकों की प्रशंसा की। नगर पंचायत शिवली के रूरा रोड पर कस्बा निवासी धर्म नारायण शुक्ला की देखरेख में उनके पुत्र राघव के द्वारा राघव गोवर्धन गौशाला एवं अस्पताल का संचालन किया जा रहा है जिस गौशाला में लगभग 1 सैकड़ा से अधिक गायों का संरक्षण किया जा रहा है अपने निजी स्तर से राघव शुक्ला के द्वारा संचालित की जा रही गौशाला की जानकारी मिलने पर रात्र प्रवास कार्यक्रम के तहत देर रात करीब 9रू00 बजे के आसपास राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन के अध्यक्ष केएन गोविंदाचार्य शिवली पहुंच गौशाला संचालन देखा उन्होंने अपने हाथों से गौशाला में संरक्षित गायों को गुड़ व केला खिलाया और पूजन किया इस अवसर पर केएन गोविंदाचार्य ने कहा की गायों की सेवा करना एक पुनीत कार्य है आज के वर्तमान कलिकाल में लोग अपने मां–बाप की सेवा नहीं कर पा रहे हैं ऐसे में गायों की सेवा करना बड़ा कठिन है राघव गोवर्धन गौशाला का संचालन कर रहे राघव शुक्ला का उत्साह बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि निश्चित ही यह प्रयास आम लोगों के लिए नजीर बनेगा गायों की सेवा करने के लिए जहां सरकार पूरा प्रयास कर रही है वहीं निजी स्तर से गौशाला का संचालन करना यह बड़ा परोपकार है गायों की विषय में बताया कि हिंदू धर्म की मान्यता के आधार पर इसमें 33 करोड़ देवताओं का भी वास होता है गायों की सेवा करने से व्यक्ति का मन पवित्र होने के साथ ही उसके जीवन के अमंगल भी नष्ट हो जाते हैं इसलिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को गाय की सेवा करनी चाहिए हमारे धर्म ने गाय को मां का दर्जा दिया है और मां के कर्ज से कोई भी बच नहीं सकता है इसलिए मां की तरह ही गाय की सेवा करना ही हम सब का नैतिक धर्म व कर्तव्य है गौशाला में गाय पूजन के दौरान राष्ट्रीय स्वाभिमान आन्दोलन के संरक्षक के एन गोविंदाचार्य जी के साथ प्रमुख रूप से राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन के संयोजक पवन श्रीवास्तव , व शास्वत हिन्दू प्रतिष्ठान के संजय शर्मा एवं प्रदेश सह संयोजक बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ श्री अनीता दीक्षित एवं गौशाला अध्यक्ष धर्म नारायण शुक्ला एवं गौशाला प्रबंधक राघव शुक्ला एवं मां सावित्री जनहित सेवा समिति की प्रबंधक शालिनी शुक्ला राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांतीय कई कार्यकर्ता एवं क्षेत्रीय लोग उपस्थिति रहे।

ग्राम विकास अधिकारी को मिल रही हैं धमकियां

तीन दिन पूर्व हुआ था जानलेवा हमला
हमलावर क्षेत्र पंचायत सदस्य के सगे भाई
हमलावर अनैतिक तरीके से चाहते थे आवास

पब्लिक की लहर

पुरवा–उन्नाव। स्थानीय विकास खंड में तैनात ग्राम विकास अधिकारी संघ के ब्लॉक अध्यक्ष पुत्तन लाल पाल ने पुलिस कप्तान को संबोधित एक ज्ञापन एसडीएम को सौंपा। ज्ञापन में कहा गया है कि हमलावरों द्वारा अनर्गल दबाव बनाने एवं फर्जी मुकदमें में फंसाने की धमकियां मिल रही है। आपको अवगत करा दें कि विगत 11 सितम्बर को ग्राम पंचायत कसरौर के मजरा तारन खेड़ा में प्रधान मंत्री आवास की जांच के दौरान ग्राम विकास अधिकारी पुत्तन लाल पाल पर जानलेवा हमला हुआ था। हमलावर इसी गांव के निवासी क्षेत्र पंचायत सदस्य सरजू के सगे भाई शिवकुमार पुत्र शिवगुलाम व नीरज पुत्र शिव कुमार थे, जिन्होंने कुल्हाड़ी से वार करके प्राण घातक हमला किया था। जिसकी प्रथम सूचना रिपोर्ट पुरवा कोतवाली में दर्ज होकर मुकदमा पंजीकृत हुआ। मुकदमा पंजीकृत से बौखलाए सरजू बी डी सी व मुकदमे में पंजीकृत अभियुक्त श्री पाल के ऊपर सुलह समझौते का दबाव डाल रहे हैं। सुलह समझौता होने से मना करने पर श्री पाल को अभियुक्तगण हरिजन एक्ट, बलात्कर जैसे फर्जी मुकदमों में फंसाने की योजना बना रहे हैं। इससे संबंधित पुलिस अधीक्षक उन्नाव को संबोधित ज्ञापन उपजिलाधिकारी राजेश प्रसाद चौरसिया के माध्यम से ग्राम विकास अधिकारी संघ पुरवा के पदाधिकारियों के साथ दिया गया। ज्ञापन के माध्यम से मांग की गई है कि यदि श्री पाल के ऊपर कोई अप्रिय घटना घटती है तो इसके जिम्मेदार सरजू बी डी सी व आरोपित अभियुक्त होंगे। ज्ञापन देते समय अन्य ग्राम विकास अधिकारी अशोक भारती, राजेन्द्र, नरेंद्र पटेल, शिवबरन, सर्वेश, सुनील, आशीष विमल, पंकज, हरी समेत सभी ग्राम विकास अधिकारी एवं कई रोजगार सेवक मौजूद रहे।

'कोरोना कॉल में मरीजों के लिए वरदान है एंबुलेंस सेवा'

सुल्तानपुर–कोरोना जैसी वैश्विक महामारी में शासन प्रशासन के साथ साथ एंबुलेंस कर्मी भी जान की बाजी लगाकर काम कर रहे हैं जहां एक तरफ पूरा विश्व इस महामारी से परेशान है तो यह असली कोरोना योद्धा अपनी जान की परवाह न करते हुए मरीजों के पास ससमय पहुंच कर उनको सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं 108 एंबुलेंस के चालक बृजेश मिश्रा कहते हैं की कभी–कभी तो खाना खाते वक्त फोन आ जाता है तो उसको छोड़ कर मरीज को तुरंत सुविधा प्रदान करते हैं और इनके ईएमटी अनुपम राजपूत कहते हैं की मरीजों के पास पहुंच कर उसको ससमय सुविधा प्रदान करने में गर्व महसूस करता हूं इस सुविधा से जुड़े हुए हैं ईएमटी वीरेंद्र मौर्य दिवाकर विक्रम सिंह रजनीश यादव पायलट अखिलेश पाल, बजरंगी यादव, राकेश कुमार आदि कर्मचारी संस्था के प्रोग्राम मैनेजर सुमित प्रताप सिंह जिला प्रभारी अभिनंदन मिश्रा के कुशल निर्देशन में कोरोना की महामारी को भगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं सुमित प्रताप सिंह जी ने जिले में एम्बुलेंस कर्मचारियों को अच्छे ढंग से कार्य करने के लिए कुशल दिशा निर्देश भी दिए ।

दबंगों ने घर पर चढ़कर किया हमला

प्रतापगढ। निमंत्रण में गए युवकों से कहासुनी के बाद दबंगों ने घर पर चढ़कर किया हमला बाघराय थाना क्षेत्र के ग्राम देवरी हरदो पट्टी ग्राम के बगल में नांरगपुर गांव में देवरी के कुछ लोग निमंत्रण खाने के लिए गए थे वहां पर कुछ दबंग प्रवृति के लोगों ने देवरी से निमंत्रण खाने गए लोगों को भद्दी भद्दी गालियां देते हुए कहा इन्हें किसने बुलाया है। निमंत्रण के दौरान कहासुनी होने पर कुछ लोगों ने बीच.बचाव कर के मामले को शांत करा दिया। देवरी से गए लोग अपने घर लौट आए उसके कुछ ही देर बाद नारंगपुर के गांव के दबंग पहले से खार खाए बैठे अपने आधा दर्जन साथियों की संख्या में एक राय होकर देवरी गांव पर हमला बोल दिया। लाठी डंडे कुल्हाड़ी से दबंगों ने एक वृद्ध महिला व कुछ लोगों को मारकर घायल कर दिया। मामले को लेकर पीड़ित छेवगहिन पत्नी रामखेलावन सरोज ग्राम देवरी हरदो पट्टी ने घर में घुसकर मारपीट तोड़फोड़ का नारंगपुर के कुछ दबंगों पर आरोप लगाया है । और मामले को लेकर स्थानीय थाने बाघराय में तहरीर दिया है ।

समाजवादी पार्टी प्रदेश अध्यक्ष को प्रतापगढ़ पहुंचने से पहले गया रोका

प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल प्रतापगढ़ पहुंचने से पहले बछरावां थाने में बैठाए गए। पूर्व सांसद सी एन सिंह के घर शोक संवेदना व्यक्त करने आ रहे थे प्रदेश अध्यक्ष ! जिले के सपाइयों में उबाल ! प्रदेश की योगी सरकार के खिलाफ की नारेबाजी लगाए मुर्दाबाद के नारे कहा निकम्मी सरकार नहीं चाहिए नहीं चाहिए ! बिना मास्क लगाए सैकड़ों कार्यकर्ता सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जियां उड़ाते हुए अंबेडकर नगर चौराहे पर धरने पर बैठे बोले नेता जब तक नही छूटते तब तक धरना जारी रहेगा ! जिले में लागू है धारा 144 नहीं है कोई डर

महात्मा गांधी नरेगा योजनान्तर्गत 55 लाख मानव दिवस के लक्ष्य की पूर्ति पर कैबिनेट मंत्री मोती सिंह ने अधिकारियों को दी बधाई

प्रतापगढ। जिलाधिकारी डा0 रूपेश कुमार ने अवगत कराया है कि जनपद में महात्मा गांधी नरेगा योजनान्तर्गत वर्श 2020.21 में मानव दिवस सृजन का लक्ष्य 55 लाख का थाए कोविड.19 के कारण लॉकडाउन होने के फलस्वरूप कार्य 21 अप्रैल 2020 से प्रारम्भ किया गयाए माह मार्च 2021 तक मानव दिवस सृजन का लक्ष्य 55 लाख के सापेक्ष 12 सितम्बर 2020 तक 55 लाख मानव दिवस का सृजन करते हुये शत प्रतिशत लक्ष्य की पूर्ति कर ली गई है।

शासन प्रशासन के सपनों को उजाड़ रहे ग्राम प्रधान व जिम्मेदार अधिकारी

प्रतापगढ़ ।लक्ष्मणपुर विकास खण्ड के संडवा खास गांव में आवास व शौचालय के लाभार्थियों को दर दर ठोकरें खाने पर मजबूर किये प्रधान व सीक्रेटरी। जहां योगी सरकार गरीब परिवारो की सहायता के लिए नए नए योजनाओं को लाकर प्रत्येक लाभार्थियों को लाभ देना चाहती है वहीं ग्राम सभा के जिम्मेदार ग्राम प्रधान व सैक्रेटरी गोल माल कर रहे है। गरीब परिवार वालो से पैसा भी लेकर संडवा खाश के प्रधान नही दिए आवास व शौचालय ।कई बार पीड़ितों ने जिलाधिकारी समेत कई जिम्मेदार अधिकारियों से शिकायत भी पर आज तक न्याय नही मिल सका।

गुरुजी को मिलेगा टेबलेट, लगेगी बायोमेट्रिक हाजरी

कानपुर देहात– परिषदीय विद्यालयों के शिक्षक अब स्कूलों से अनुपस्थित नहीं रह पायेंगे। प्रेरणा ऐप का विरोध कर रहे शिक्षकों का शासन द्वारा तोड़ निकाला गया है। प्रत्येक परिषदीय विद्यालयों में बायोमेट्रिक अनुपस्थित व्यवस्था लागू होने जा रही है। इसके लिए प्रत्येक प्रधानाध्यापक को टैबलेट दिया जायेगा। टैबलेट से लोकेशन को ट्रैक किया जा सकेगा। बच्चों को टैबलेट से नित नई जानकारी भी दे सकेंगे। टैबलेट में सिग्नल की जानकारी भी मिलेगी। जनपद में 1604 प्राथमिक विद्यालयों व 674 उच्च प्राथमिक विद्यालयों व 10 खंड शिक्षा अधिकारियों कार्यालयों और 30 अकादमिक रिसोर्स पर्सन (एआरपी) को जल्द ही टैबलेट मिलेंगे। प्रधानाध्यापकों को दिये जाने वाले टैबलेट में हाजिरी के लिए बायोमेट्रिक उपस्थिति की व्यवस्था होगी। टैबलेट में शिक्षकों को बायोमीट्रिक हाजिरी देनी होगी वहीं स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को भी 15 दिन में एक बार इसके माध्यम से हाजिरी लगानी होगी। इसके लिए आधार का ब्यौरा लिक किया जायेगा और इसमें बायोमेट्रिक स्कैनर की व्यवस्था होगी। टैबलेट के साथ न्यूनतम 2 जीबी का डाटा मिलेगा। प्रेरणा पोर्टल, मानव सम्पदा आदि विभाग के अन्य साफ्टवेयर भी अपलोड किये जायेंगे। सरवनखेड़ा खंड शिक्षा अधिकारी अनूप कुमार सिंह ने बताया कि टैबलेट मिलने से शिक्षकों का कार्य आसान होगा। एमडीएम विवरण, बच्चों की उपस्थिति, शिक्षक डायरी व समय सारिणी आदि का भी निरीक्षण किया जायेगा। बेसिक शिक्षा अधिकारी सुनील दत्त ने बताया कि परिषदीय स्कूलों में शैक्षिक गुणवत्ता सुधारने के लिए पहल की गई है। इससे बच्चों को ई–लर्निंग में मदद मिलेगी और विभाग द्वारा स्कूलों की निगरानी भी की जा सकती है। टेबलेट की खरीद के लिए टेंडर प्रक्रिया हो गई है और दिसंबर तक स्कूलों को टेबलेट प्रदान कर दिये जायेंगे।

दो युवतियां गांव से फरार एक प्रेमि संग दूसरी भहनोई के साथ

सतीश त्रिपाठी संवाददाता

औरास उन्नाव। एक ही गांव की दो युवती जिसमें एक शादीशुदा और एक गैर शादीशुदा एक ने दूसरे को बहला–फुसलाकर घर घर से भाग जाने के लिए प्रेरित किया और उसके बाद खुद अपने प्रेमी के संग फरार हो गई जिसमें नगद व जेवरात भी लेकर साथ में भागी है परिजनों के ढूंढने पर एक युवती अपने बहनोई के घर मिली और दूसरी का अभी कुछ पता नहीं चल सका जिसकी पुलिस ने लिखित शिकायती प्रार्थना पत्र देकर आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की है । प्राप्त जानकारी के अनुसार मुन्ना पुत्र रामरतन पासी निवासी धनियाना ने अपनी पुत्री रागिनी को अपने परिवार के साथ रात में लेटी थी और शंका पड़ी तो देखा गया जिसमें रागिनी वहां नहीं मिली परिजनों के द्वारा इधर–उधर ढूंढने का काम किया गया उसके बाद पता चला कि गांव के ही संजय पुत्र केसनु बहला–फुसलाकर भगा ले गया और उसकी शादी 1 माह पूर्व हुए थे जिसने नगद ध्50000 व जेवरात लेकर फरार हो गई है उसी रात में होरीलाल की लड़की पूनम संदीप पुत्र राजू महिमापुर थाना माल लखनऊ भगा ले गया था जो अपने बहनोई के घर में मिली है उधर परिजनों ने आरोप लगाया कि संदीप पूनम के शिवाकत से ही रागिनी भागी है संदीप और संजय से पूछने पर पता चला कि संजय का बहनोई ही रागिनी को भगा ले गया है जो बेगमगंज संडीला का निवासी है जिसकी पुलिस लगातार खोजबीन कर रही है।

गमे इमाम हुसैन की याद में सालाना मजलिसे अजा आयोजित

बाराबंकी,संवाददाता। मान्यता प्राप्त पत्रकार सरवर अली रिजवी के इमामबाड़े में गमे इमाम हुसैन(अ) की याद में सालाना मजलिसे अजा आयोजित हुई । मजलिस का आरम्भ तिलावते कलामे पाक से किया गया। इस मजलिस में डॉक्टर रजा मौरानवी, अजमल किन्तूरी , मुहिब रिजवी, आरिज जरगावी , सरवर कर्बलाई ने अपने अपने कलाम पेश किये , मो जमानत अब्बास व रेहान अब्बास जैदी ने भी नजरानये अकीदत पेश किया। मजलिस को संबोधित करते हुए मौलाना इब्ने अब्बास ने हजरत इमाम हुसैन और उनके मजलूम बेटे इमाम जैनुल अबिदीन अलैहिस्सलाम के जीवन पर प्रकाश डाला... और कर्बला के 72 शहीदों पर हुए जुल्म को बयान किया। मौला इमाम हुसैन और इमाम जैनुल अबिदीन अलैहिस्सलाम पर हुए जुल्म की दास्तान सुनकर अजादार रों दिए। कोविड 19 के खतरे को देखते हुए मजलिस में सोशल डिस्टेंसिंग का अजादारों ने पालन किया और सेनिटाइजर और मास्क का प्रयोग किया। मजलिस के बाद अंजुमन पैगामे कर्बला व अन्जुमन हुसैनिया मोहम्म्दी ने नौहाख्वानी और सीनाजनी की। इस मौके पर मशहूर नौहाख्वान जिया रिजवी व आलिम रजा जैदी ने अपने खास अंदाज में नौहाख्वानी की। मजलिस के अंत मे पत्रकार सरवर अली रिजवी ने शुक्रिया अदा किया।

भारतीय जन एवं जनजाति किसान महासभा की हुए बैठक

बाराबंकी,संवाददाता। भारतीय जन एवं जनजाति किसान महासभा की बैठक कर आज दिनांक 13 9 2020 को ग्राम पंचायत अहमदपुर देवकली में संगठन विस्तार कर सदस्यता अभियान चलाकर मोहम्मद मुख्तार अली को तहसील अध्यक्ष रामसनेहीघाट व मोहम्मद वली को ब्लॉक अध्यक्ष बन्नी कोड़ा बनाया गया और जमीला बानो को महिला ब्लॉक अध्यक्ष और मोहम्मद शमशाद को ब्लॉक उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त कर सैकड़ों लोगों को सदस्यता दिलाई गई जिसमें मुख्य रुप से हमारे माननीय संयोजक मोहम्मद तुफैल संरक्षक शकील अहमद महिला जिला अध्यक्ष शाहजहां बानो मसौली ब्लाक अध्यक्ष ओम प्रकाश और बाराबंकी जनपद के जिला अध्यक्ष राजेश कुमार मौजूद रहे। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा फैजाबाद मण्डल की समीक्षा बैठक की गयी।

मोहरी पुरवा नाले का मुद्दा मुख्यमंत्री मके सामने उठाया

बाराबंकी,संवाददाता। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा फैजाबाद मण्डल की समीक्षा बैठक वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से की गयी थी। जिसपर जिले के यशश्वी सांसद उपेन्द्र सिंह रावत ने मोहरी पुरवा नाले का मुद्दा मुख्यमंत्री म के सामने उठाया था मुख्यमंत्री ने कमिश्नर अयोध्या मंडल को निर्देश दिए थे । कि तत्काल नाले की समस्या का समाधान करें। उक्त के क्रम में नाले की स्वीकृति मिल चुकी है स्वीकृति मिलने के उपरान्त मोहरी पुरवा क्षेत्र के लोगों ने आज सांसद को माला पहनाकर व पुष्प भेट कर बहुत–2 धन्यवाद दिया तथा कहा कि आपके अथक प्रयासों के द्वारा बहुत बड़ी समस्या से निजात मिलेगी। इस मौके पर लवकुश वर्मा, इंद्र कुमार वर्मा , अनिल वर्मा, दीप चन्द्र वर्मा, विनोद गुप्ता, आशीष, रवि, बब्लू वर्मा , स्वामी जी, संतोष वर्मा, अन्तरिक्ष रावत व निजी सचिव दिनेश चन्द्र रावत उपस्थित रहे।

पुलिस अधीक्षक ने चौकी रिछोला थाना गजरौला का किया आकस्मिक निरीक्षण

पीलीभीत,संवाददाता। रविवार को पुलिस अधीक्षक जयप्रकाश महोदय द्वारा चौकी घुघचाई, चौकी बलरामपुर थाना पूरनपुर , चौकी जमुनिया थाना माधोटांडा व चौकी रिछोला थाना गजरौला का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। सभी चौकी परिसर में साफ सफाई रखने हेतु संबंधित को निर्देशित किया। चौकी रिछोला पर गंदगी देख द कड़ी नाराजगी व्यक्त की गयी व संबंधित को साफ सफाई हेतु निर्देशित किया गया। प्रस्तावित नवनिर्मित थाना घुँघचिहाई का भी निरीक्षण किया गया व संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

आरटीआइ में मांगी सूचना, नगर निगम ने कहा वेबसाइट देखिए

अयोध्या,संवाददाता। नगर निगम के लिए जनसूचना अधिकार अधिनियम मजाक की तरह है। सूचना मांगिए कुछ और जवाब मिलता कुछ है। नगर निगम में आरटीआइ का मखौल बनाने वाला एक और प्रकरण सामने आया है। शासन से मिलने वाली मिली धनराशि से संबंधित जानकारी मांगने पर जवाब देने बजाय नगर निगम प्रशासन ने आरटीआइ मांगने वाले को वेबसाइट देखने की सलाह दे दी। नगर निगम के इस रवैये से आरटीआइ की सार्थकता पर सवाल

खड़ा हो गया है, वहीं इस व्यवस्था में विश्वास रखने वालों की उम्मीद को भी झटका लगा है। फिलहाल नगर निगम का जवाब देख कर आवेदक का सिर घूम गया। आरटीआइ कार्यकर्ता शिवकुमार फैजाबादी की ओर से सूचना मांगी गई कि नगर निगम को प्रदेशीय शासन की ओर से अब तक कितनी धनराशि अनेक मदों के अंतर्गत प्राप्त हुई और इसका कहां–कहां उपयोग किया गया? सवाल के जवाब में नगर निगम ने लिखा कि शासन की ओर से विभिन्न मदों में अवमुक्त धनराशि आदि का विवरण नगर निगम की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध है, जिसे अवलोकित किया जा सकता है। दूसरी सूचना नगर निगम की ओर से कराए गए पौधारोपण से संबंधित थी। कितने पौधे रोपित किए और कितने सुरक्षित हैं। इसके जवाब में नगर निगम ने सिर्फ रोपित किए गए 15 हजार पौधों की संख्या की उपलब्ध कराई। कितने पौधे सुरक्षित हैं, इसका जवाब ही नहीं दिया। शिवकुमार की ओर से सूचना दिसंबर वर्ष 2019 में मांगी गई थी, जिसका जवाब दसवें महीने में मिला। आवदेक की मानें नगर निगम की ओर से सूचना समय पर नहीं दी गई, जो सूचना दी गई वह भी आधी–अधूरी है।

केन्द्र और उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार होने के बावजूद जनता की पेरशानियों का कोई अंत नहीं है–राकेश कुमार

बाराबंकी,संवाददाता। केन्द्र और उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार होने के बावजूद जनता की पेरशानियों का कोई अंत नहीं है विकास कार्य पूरी तरह से ठप्प पड़े है महंगाई की बेतहाशा मार से लोग बेहाल है। उक्त विचार आज अपने कम्पनी बाग स्थित कैम्प कार्यालय पूर्व कारागार मंत्री राकेश कुमार वर्मा ने समाजवादी पिछडा प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष अखिलेश वर्मा द्वारा विधानसभा रामनगर व जैदपुर की कमेटी के नवनियुक्ति पदाधिकारियों को मनोनयन पत्र देने के पश्चात व्यक्त किये है। श्री राकेश वर्मा व जैदपुर विधायक गौरव कुमार रावत ने आज कम्पनी बाग स्थिति आवास पर समाजवादी पिछडा प्रकोष्ठ में विधानसभा जैदपुर अध्यक्ष कौशल यादव, महासचिव प्रमोद वर्मा, उपाध्यक्ष मोहम्मद इमरान, लवकुश यादव, रामनगर विधानसभा अध्यक्ष राजेश वर्मा, महासचिव राजीत राम यादव, लवकुश प्रजापति को सचिव पद का मनोनयन पत्र देकर व माला पहनाकर स्वगत किया। श्री राकेश वर्मा ने आगे कहा कि बिजली की दरो में बेतहाशा वृद्धि से किसानों और आम उपभोगताओं के सामने घोर आर्थिक संकट पैदा हो गया है जबकि साढे तीन साल में भाजपा सरकार के कार्यकाल में एक भी यूनिट बिजली का उत्पादन नहीं हुआ है नोटबन्दी और जीएसटी से उद्योगों की हालत सख्त है लाखो लोगों को नौकरियों से हाथ धोना पड़ा है। जैदपुर विधायक गौरव कुमार रावत ने अपने सम्बोधन में कहां कि नौजवानो का भविष्य अंधेरे में है नए रोजगार तो सृजित हुए नहीं जो काम धंधे चल रहे थे, वे भी बंद हो रहे है डालर के मुकाबले रूपए का मूल्य लगातार नीचे गिरता जा रहा है उत्तर प्रदेश का किसान पूरी तरह से बर्बाद हो गया है भाजपा सरकार के कार्यकाल में। उक्त अवसर पर मुख्य रूप से पूर्व प्रमुख मौलाना असलम, वरिष्ठ नेता गुड्डू हसन, जिला उपाध्यक्ष व जैदपुर प्रभारी कामता प्रसाद यादव, विधायक प्रतिनिधि रिजवान संजय, अकिंत वर्मा बादल, अभिषेक यादव, पंकज यादव, रवि गुप्ता, अनूप यादव, रवि यादव, विक्रम सिंह, कबीर यादव समेत आदि लोग उपस्थित थे।

प्रदेश की जुमलेबाज,नौटंकीबाज सरकार ने प्रदेश के किसानों,कामगारों, व नौजवानों को बना दिया बदहाल-सुरेश यादव

बाराबंकी,संवाददाता। प्रदेश की जुमलेबाज,नौटंकीबाज सरकार ने प्रदेश के किसानों,कामगारों, व नौजवानों को बदहाल बना दिया है प्रदेश का किसान और नौजवान आत्महत्या करने पर विवश है उक्त कथन देवा ब्लॉक की ग्रामसभा शरीफाबाद मजरे कोनागाव,कैमा, व महमूदाबाद में अपनी विधायक निधि से बनी इंटरलॉकिंग सड़कों का लोकार्पण करते हुए सदर विधायक धर्मराज सिंह उर्फ सुरेश यादव ने कहा। विधायक ने कहा कि प्रदेश सरकार ने गरीबों के हक का कोई कार्य नहीं किया सरकारी नौकरियों से आज आरक्षण गायब किया जा रहा है और मै देश नहीं बिकने दूंगा का नारा देकर देश के सभी विभागों का निजीकरण किया जा रहा है। सरकार की मंशा देश और प्रदेश को कंगाल करने की है एक तरफ जहां बिना किसी पूर्व तैयारी के कि गई तालाबंदी से लाखों लोग बेरोजगार हो गए हजारों लोगो को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा लेकिन सरकार बिना कोई ठोस कदम उठाएं लोगो को 5 किलो गेहूं और 5 किलो चावल देकर जनहितैषी होने का नाटक कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकार का विकास सिर्फ कागजों तक सिमट कर रह गया है सरकार का सबका साथ सबका विकास का नारा बेईमानी है कहीं पर कोई विकास कार्य नहीं हो रहे बल्कि पूर्ववर्ती सपा सरकार में पारित हुई विकास कार्यों की परियोजनाओं का नारियल फोड़ कर शुभारम्भ कर सरकार झूठी वाह वाही लूट रही है। योगी सरकार हर मोर्चे पर पूरी तरह विफल रही है सरकार की कथनी और करनी में बड़ा अंतर है। जिसके खिलाफ आम जनमानस में भारी रोष व्याप्त है। इससे पहले विधायक धर्मराज ने पूर्व की भांति गावो के वरिष्ठ नागरिकों के हाथों फीता कटवा कर सड़कों का लोकार्पण किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से रमेश यादव ब्लॉक प्रमुख प्रति देवा,रामगोपाल मिश्रा,जसवंत यादव,रामचंद्र कनौजिया,विकास कश्यप,लवकुश श्रीवास्तव,मो इकराम,मो वसीम,मो जुनैद,महेश रावत,विनोद रावत,रामकिशोर रावत प्रधान,हिमांशु रावत,रघुनाथ यादव,चतुरी गौतम,असगर अली, मान सिंह, शैलेन्द्र यादव छोटे,दीपक गुप्ता, बाबुल मिश्रा,विनय कुमार यादव विधानसभा अध्यक्ष सदर,हिमांशु वर्मा विक्की अध्यक्ष पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ,रंजीत यादव,राकेश यादव,जसवंत यादव,नरेंद्र रावत,वीरेंद्र यादव,मुन्ना यादव,मो युसुफ अब्दुल्ला समेत कई लोग मौजूद रहे।

अयोध्या में ऐसी संतान पैदा नहीं हुई जो उद्धव को घुसने से रोक सके, महाराष्ट्र के सीएम उद्धव के पक्ष में चंपत राय

अयोध्या,संवाददाता। बॉलीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद से उनके पक्ष में बड़ा अभियान चलाने वाली फिल्म अभिनेत्री कंगना रनोट के खिलाफ महाराष्ट्र सरकार ने मोर्चा खोल दिया है। इसी से नाराज अखाड़ा परिषद के साथ तमाम संत भले ही कंगना रनोट के पक्ष में हों, लेकिन अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव तथा विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष चंपत राय बंसल तो खुलकर महाराष्ट्र के सीएम उद्धव ठाकरे के पक्ष में हैं। कंगना रनोट के खिलाफ मुम्बई में कार्रवाई के विरोधा में अयोध्या में तमाम साधु–संतों ने महाराष्ट्र के सीएम उद्धव ठाकरे को अयोध्या में न घुसने देने का एलान किया है। इसके विपरीत श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय से साफ कह दिया है कि उद्धव ठाकरे को अयोधया आने से कोई नहीं रोक सकता है। चंपत राय महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के समर्थन में मैदान में उतरे हैं। चंपत राय ने कहा कि उद्धव ठाकरे को तो अयोध्या आने से कोई रोक नहीं सकता है। अभी किसी में इतना दम नहीं है कि वह उद्धव ठाकरे को तो अयोध्या आने से कोई रोक सके। राम मंदिर तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय इतने पर ही नहीं रुके। चंपत राय ने अयोध्या के संतों का उद्धव के विरोध को बेहद गलत बताया है। उन्होंने यहां तक कह दिया कि अगर किसी में जरा भी दम है तो उद्धव को अयोध्या आने से रोक ले। जिसकी मां ने दूध पिलाया वो उद्धव का सामना करे। बेवजह विवाद को बढ़ाया जा रहा है। कारसेवकपुरम में चंपत राय ने कहा कि राजस्थान में एक गीत है, जिसमें कहा जाता है कि किसकी मां ने जीरा खाया जो गंगा का पानी रोक सके। ठीक उसी तरह से अयोध्या में किसकी मां ने इतना जीरा खाया है कि ऐसी ताकतवर संतान पैदा की है जो कि उद्धव ठाकरे को अयोध्या आने से रोक सके। चंपत राय ने कहा कि किसी में इतना दम नहीं कि वह अयोध्या आने से उद्धव ठाकरे को रोक सके। किसी की मां ने दूध पीया है और पिलाया है अपने बच्चे को, जो उद्धव ठाकरे का सामना करेगा अयोध्या में। राजस्थान के एक गीत का उदाहरण देते हुए चंपत राय बोले किसकी मां ने जीरा खाया है, जो गंगा को रोक सके। तो अयोध्या में ऐसा कौन है जिसकी मां ने इतना जीरा खाया है और उसको ऐसी संतान पैदा हुई है जो कि उद्धव ठाकरे को अयोध्या में घुसने से रोक सके। उद्धव ठाकरे के अयोध्या आने पर होने वाले विरोधा को लेकर उन्होंने कहा कि सब बेकार की बातें हैं सिर्फ एक विवाद खड़ा किया जा रहा है। अयोध्या के संतों ने उद्धव के अयोध्या आने पर विरोध की चेतावनी दी थी। इसके साथ ही अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के संतो–महंतों ने उद्धव के अयोध्या में प्रवेश पर रोक लगा दी है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय का यह बयान अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद ही नहीं बल्कि अयोध्या के संतों को भी नाराज कर सकता है। इसके साथ ही अयोध्या के संतों को दो खेमों में भी बांट सकता है। चंपत राय ने कहा कि कुछ लोगों ने कह दिया कि उद्धव ठाकरे को नहीं आने देंगे, लेकिन हमने कहा कि यह विश्व हिंदू परिषद का अधिकृत बयान नहीं है। सब बेकार की बातें हैं, निरर्थक बातें हैं। ऐसी बात बोलना कतई उचित नहीं है।

अखिलेश सरकार में गांव व गरीब का रहा ख्याल : पवन

अयोध्या,संवाददाता। आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर समाजवादी पार्टी युवाओं को जोड़ने में लगी है। पार्टी नेता व पूर्व मंत्री तेजनारायण पांडेय पवन के ब्लॉक पूराबाजार स्थित कृष्णापुर आवास परिसर में आयोजित कार्यक्रम में क्षेत्रीय लोगों ने पार्टी के प्रति विश्वास जताते हुए सदस्यता ली। पूर्व मंत्री ने पार्टी में शामिल लोगों का स्वागत किया। कहा, कि अखिलेश सरकार में गांव,

गरीब के अलावा सभी का ख्याल रखा गया। यही वजह कि लोगों का रुझान पार्टी की तरफ बढ़ रहा है। सभी वर्गों को जोड़ कर वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा का मुकाबला कर जिले की सभी पांच सीटों पर पार्टी प्रत्याशी जिता प्रदेश में अखिलेश यादव की सरकार बनाना है। पार्टी में शामिल लोग अंजना व मफिया गांव के हैं। कार्यक्रम में विस कमेटी अध्यक्ष शिवबरन यादव व तरजीत गौड़ मौजूद रहे। पार्टी प्रवक्ता बलराम यादव के अनुसार रामप्रसाद, सौरभ पांडेय, कृष्णचंद्र मौर्य, रोहितकुमार, शिखा गौतम, रामतीरथ, श्यामलाल, ओमप्रकाश गौतम, सुनीलकुमार, बसंतकुमार, दुर्गाप्रसाद, संदीपकुमार, रंजीतकुमार, विशालकुमार, बबलू निषाद, सुनीलकुमार, नितेशकुमार, कृष्णकुमार, शिवपूजन आदि पार्टी में शामिल होने वालों में प्रमुख हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम के निर्माण में 5.30 करोड़ का घोटाला

अयोध्या,संवाददाता। डॉ. भीमराव अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय क्रीड़ा संकुल के निर्माण में साढ़े पांच करोड़ रुपये के गबन का मामला सामने आया है। जलनिगम की कंस्ट्रक्शन एंड डिजाइन सर्विसेज (सीएंडडीएस) यूनिट–44 के परियोजना प्रबंधक

डीके श्रीवास्तव की तहरीर पर तीन अभियंताओं के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। तीनों अभियंता सेवानिवृत्त हो चुके हैं। पूराकलंदर थाना क्षेत्र के डाभासेमर में डॉ. भीमराव अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय क्रीड़ा संकुल का निर्माण चल रहा है। स्टेडियम की स्वीकृति वर्ष 2006 में हुई थी। वर्ष 2018 तक इस परियोजना को पूरा हो जाना था, लेकिन निर्माण की सुस्त रफ्तार की वजह से अभी तक परियोजना अधूरी है। हालांकि कुछ इंडोर गेम यहां शुरू हो गए हैं, जहां शहर के लोग अभ्यास के लिए आते हैं। अब इस परियोजना में लगे अभियंताओं की ओर से गोलमाल किए जाने का प्रकरण सामने आया है। परियोजना के कर्मचारियों की मिलीभगत से निर्माण कार्य में आवश्यकता से अधिक सामग्री खरीदी गई और उसका समायोजन तक दस्तावेजों में दर्ज नहीं किया गया। रविवार को परियोजना प्रबंधक ने अपने कर्मचारियों पर 5.30 करोड़ गबन का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया है। परियोजना प्रबंधक ने भी निर्माण के लिए खरीदी गई सामग्री के बारे में जानकारी आरोपियों से मांगी, लेकिन वह जानकारी मुहैया नहीं करा सके। परियोजना प्रबंधक का आरोप है कि यूनिट के जूनियर इंजीनियर एसके शुक्ला, एपी पांडेय, आरके श्रीवास्तव ने मिल कर तीन चरणों में दो करोड़ 50 लाख, दो करोड़ 30 लाख व 47 लाख का सामान खरीदा, जो आवश्यकता से अधिक था। इसका समायोजन आज तक नहीं कराया गया है। जूनियर इंजीनियर एसके शुक्ला, एपी पांडेय, आरके श्रीवास्तव सेवानिवृत्त भी हो चुके हैं। थानाध्यक्ष पूराकलंदर संतोष सिंह ने बताया कि परियोजना प्रबंधक की तहरीर पर तीनों आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन की जा रही है।

हिरण पर हमले से गहराई हिसक जानवर की आशंका

अयोध्या,संवाददाता। पिछले कई दिनों से क्षेत्र में हिसक जानवर की आमद को लेकर खौफ का माहौल है। कोई तेंदुआ होने की बात कह रहा तो कोई अन्य जानवर। इस बीच रविवार की सुबह आचार्य नरेंद्रदेव कृषि विश्वविद्यालय परिसर के हिरणावती छात्रावास के सामने एक हिरण मृत पाया गया। इससे ग्रामीणों के बीच उपजी हिसक जानवर की मौजूदगी की आशंका को बल मिला। हालांकि जांच–पड़ताल के बाद विभाग ने यह दावा किया कि हिरण, फिशिग कैट के हमले का शिकार हुआ। तेंदुआ या अन्य किसी अन्य जंगली जानवर की मौजूदगी नहीं पाई गई। कृषि विवि परिसर में सुबह हिरण का शव पाए जाने से खलबली मच गई। सुरक्षा अधिकारी एसपी सिंह मौके पर पहुंचे। उन्होंने इसकी सूचना वन विभाग को दी। वन क्षेत्राधिकारी एके श्रीवास्तव ने टीम के साथ पहुंच कर जांच पड़ताल शुरू की। दो घंटे बाद उप प्रभागीय वनाधिकारी अरुण कुमार सिंह भी एक्सपर्ट टीम के साथ पहुंचे। छात्रावास के आसपास टीम ने छानबीन शुरू

की। जंगली जानवरों के पदचिन्हों का भी बारीकी से परीक्षण किया। प्रभागीय वनाधिकारी मनोज खरे ने बताया कि मिले पद चिह्न फिशिग कैट के हैं। प्रथम ष्टया हिरण का शिकार इसी जानवर द्वारा ही किया जाना प्रतीत हो रहा है। कारण तेंदुआ अपने शिकार के गर्दन पर वार करता है, जबकि हिरण की स्थिति इस तरह नहीं दिख रही। उधर, दोपहर बाद जोरियम गांव से भी हिसक जानवर आने की सूचना विभाग को मिली। टीम गांव पहुंची, जहां जांच–पड़ताल के बाद वापस लौट आई। हिसक जानवर का खौफ कृषि विश्वविद्यालय में परिसर में आखिर हिरण का शिकार किस जानवर ने किया? यह अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो सका है। इससे ग्रामीणों में भय व्याप्त है। क्षेत्र के लवलेश पांडेय, कर्पूरनाथ तिवारी का कहना है कि क्षेत्र में जिस जानवर को लेकर दहशत है, वन विभाग उसे फिशिग कैट बता रहा है। आम तौर पर यह जानवर तालाब व झील की मछलियों को ही अपना शिकार बनाता है। ऐसे में हिरण का शिकार करने का दावा सही नहीं लग रहा है। जंगली जानवर तेंदुआ या कोई अन्य भी हो सकता है।

नहर में अज्ञात युवक का मिला शव

आजमगढ़,संवाददाता। बिलरियागंज थाना क्षेत्र के खानपुर भगत पट्टी गांव के समीप स्थित नहर में रविवार की सुबह एक अज्ञात युवक का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। ग्रामीणों ने युवक की हत्या कर शव को फेके जाने की आशंका जताई है। पुलिस घटना की जांच पड़ताल कर रही है। खानपुर भगत पट्टी गांव के समीप स्थित शारदा सहायक खंड 32 नहर की ओर रविवार की सुबह लगभग छह बजे ग्रामीण गए हुए थे। वहां नहर के किनारे सरपत के जुट्टे में 35 वर्षीय एक युवक का शव फंसा देख पुलिस को सूचना दिए। शव मिलने की खबर पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने घटना की जांच पड़ताल शुरू कर दी।

घाघरा नदी में विलीन हुआ गरीब का अशियाना

आजमगढ़,संवाददाता। जलस्तर में कमी दर्ज किए जाने के बावजूद घाघरा नदी का कहर जारी है। देवाराखास राजा गांव के बगहवा का पुरवा में मंगरु पुत्र कोमल अनहोनी की आशंका में गृहस्थी के सामान अन्यत्र ले जाने के अलावा व घर को उजाड़ने में कई दिनों से जुटे थे। रविवार को आशंका सच साबित हुई उनका पक्का मकान एवं जानवरों के लिए बनाई गई मड़ई नदी में विलीन हो गई। परिवार के लोग पहले ही सुरक्षित स्थान पर चले गए थे। घाघरा का जलस्तर कम होने पर लोगों ने राहत की सांस ली थी। लेकिन नुकसान का दायरा कम नहीं हो पा रहा है। आए दिन मकान, खेती योग्य जमीन घाघरा नदी में विलीन होती जा रही है। नदी के बहाव का रुख बढ़ने के कारण 17 परिवारों में भय व्याप्त है। उन्हें भी सिर से छत छिन जाने का खतरा सताने लगा है। देवारा खास राजा गांव में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय के सभी कमरे घाघरा नदी में विलीन हो चुके हैं। शौचालय और किचन भी घाघरा नदी मुख्यधारा में समा जाने को आतुर है। उधर घाघरा नदी का जलस्तर मुख्य मापक बदरहुआ गेज पर शनिवार की शाम चार बजे बजे 70.15 मीटर तथा 24 घंटे बाद रविवार की शाम 4 बजे 70. 15 मीटर पर ही दर्ज किया गया । जो जलस्तर के स्थिर होने का संकेतक है। डिघिया गेज पर शनिवार की शाम चार बजे 69.05 मीटर तथा रविवार की शाम चार बजे 69.06 मीटर पर दर्ज किया गया। यहां 24 घंटे में एक सेंटीमीटर घाघरा नदी के जल स्तर में वृद्धि दर्ज की गई।

दीवार गिरने से महिला की दबकर मौत

आजमगढ़,संवाददाता। तरवां थाना क्षेत्र के धरहरा गांव में शनिवार की रात अचानक जर्जर दीवार गिर गई। मकान में सो रही महिला की मलबे में दब जाने से मौत हो गई जबकि उसकी बेटी पुत्री घायल हो गई। उसे लोगों ने अस्पताल में भर्ती कराया है। धरहरा गांव निवासी परम शीला देवी (52) अपनी पुत्री माधुरी (23) के साथ शनिवार की रात को घर में सो रही थी। स्वजनों ने बताया कि आधी रात को उनके जर्जर मकान की दीवार अचानक गिर गई। जिससे मकान में सो रही । परमशीला देवी के साथ उनकी पुत्री माधुरी भी मकान के मलबे में दब गई।

शिक्षकों ने प्रदेश अध्यक्ष के समक्ष रखी समस्याएं

आजमगढ़,संवाददाता। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ ने प्रदेश अध्यक्ष सुशील पांडेय का शिक्षक सदन ब्रह्मस्थान में स्वागत किया। इस दौरान बैठक कर शिक्षकों ने प्रदेश अध्यक्ष के समक्ष अपनी समस्याएं रखी। जिलाध्यक्ष सुरेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि जनपद में शिक्षकों का उत्पीड़न हो रहा है। उन्होंने कहा कि 2018 में स्वेटर 50 फीसद व 2019 में 25 फीसद ड्रेस का धन बकाया है, लेकिन अभी तक संबंधित अधिकारी द्वारा भुगतान नहीं किया गया। उन्होंने अधिकारियों पर आरोप लगाया कि अपने चहेते फार्म से यूनिफार्म का कपड़ा खरीदने के लिए दबाव डाला जा रहा है और सिलाई के लिए मनगढ़ंत आदेश जारी किया जा रहा है। जबकि शासनादेश में वर्णित है कि यूनिफार्म की खरीद विद्यालय प्रबंध समिति को स्वविवेक से करने का अधिकार है। अधिकारी शिक्षकों की समस्याओं को सुलझाने की बजाय और उलझा रहे हैं। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि यूनिफार्म की समस्या केवल बस्ती और आजमगढ़ में पैदा की गई है। इसे बेसिक शिक्षा मंत्री से मिलकर निदान कराया जाएगा। बैठक को प्रांतीय महामंत्री उमाशंकर सिंह, मंजुलता राय, सुनीता सिंह आदि ने संबोधित किया। इसमें रामबचन यादव, प्रमोद लाल श्रीवास्तव, बृजबिहारी सिंह, राजेन्द्र यादव, आयशा खातून, अमित राय, संजय सिंह आदि रहे।

धरातल पर उतर कर व्यापारियों की पीड़ा को समझें और उसका निराकरण कराए पदाधिकारी : रविंद्र त्रिपाठी

सुल्तानपुर।अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के प्रदेश संगठन महामंत्री रविंद्र त्रिपाठी बिरसिंहपुर में संगठन की गठन में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि संगठन में वही व्यापारी पद ले जो व्यापारी हित के लिए संघर्ष कर सकें। अपने निजी स्वार्थ सिद्धि के लिए कदापि पदाधिकारी ना बने और केवल फेसबुक या व्हाट्सएप तक सीमित ना रहे, व्यापारियों से व्यक्तिगत संपर्क करें, उनकी पीड़ा को समझें और उसका निदान कराएं। उन्होंने ने कहा कि मैं संगठन के प्रदेश महामंत्री के पद पर जरूर हूं, लेकिन जनपद सुल्तानपुर के लिए व्यापारियों का सिपाही हूं और उनकी सेवा सदैव उपलब्ध हूं रहूंगा। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित जिला महामंत्री अलीमुद्दीन ने कहा कि अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल प्रत्येक दिन 24 घंटे व्यापारी सेवा में तत्पर है। जिला प्रभारी अनूप श्रीवास्तव ने कहा कि संगठन से बड़ा कोई नहीं होता है जो भी पदाधिकारी संगठन में काम कर रहे हैं, सब अनुशासित रहे और व्यापारी हित में संघर्ष करें। जिला महामंत्री संगठन रमेश अग्रहरि ने संचालन करते हुए नव निर्वाचित पदाधिकारियों को माला पहनाकर तथा मनोनयन पत्र देकर स्वागत करते हुए कहा कि सभी पदाधिकारी अपनी जिम्मेदारियों बोधा करते हुए उसे हमेशा निभाने का प्रयास करें। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ उद्यमी व संगठन के जिला उपाध्यक्ष धनदेव शुक्ला ने किया। इन्होंने सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दी । युवा जिला प्रभारी अजय जयसवाल ने कहा कि हम सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का कर्तव्य है कि आपसी मतभेद भुलाकर व्यापारियों के हित में सदैव संघर्ष करते रहे। सर्वसम्मति से रविंद्र कुमार मोदनवाल को अध्यक्ष, अमरनाथ कनोजिया को महामंत्री, जगन्नाथपुर भुजिया भागीरथी निशा द शंकर शर्मा को उपाध्यक्ष, आशीष मिश्रा जी को सचिव, अनूप मोदनवाल को मीडिया प्रभारी, राकेश दुवे व पंचराम मोदनवाल को संरक्षक तथा सोम प्रकाश गुप्ता को युवा अध्यक्ष, राजकुमार को युवा महामंत्री, संतोष चौरसिया को युवा कोषाध्यक्ष चुना गया। गठन का कार्यक्रम तहसील अध्यक्ष अरविंद गुप्ता की देखरेख में संपन्न हुआ। युवा तहसील अध्यक्ष विनोद मोदनवाल महामंत्री ठाकुर प्रसाद मनोज कुमार अग्रहरी तहसील अध्यक्ष जयसिंहपुर आदि व्यापारी उपस्थित रहे।

कोविड-19 पर नियंत्रण करना ही प्राथमिकता है : रवीश कुमार, जिलाधिकारी

सुल्तानपुर। नवागत जिलाधिकारी रवीश गुप्ता ने पत्रकार वार्ता में कहा कि उनकी प्राथमिकता कोविड–19 पर कंट्रोल पाना है । उन्होंने कहा जनपद सुलतानपुर में इस समय औसतन 40 केस प्रतिदिन आ रहे हैं । जिसको लेकर अधिकारियों के साथ वह मीटिंग करेंगे ।नगर के राम नरेश त्रिपाठी सभागार में उन्होंने आम जनता को आश्वस्त किया कि प्रदेश सरकार की विकास कार्यों को लेकर कोई कोताही नहीं बरती जाएगी । अच्छे में बेहतर रिजल्ट देने की कोशिश होगी । डीएम श्री गुप्ता ने दोहराया कि अभी वह कोई वादा नहीं कर रहे हैं लेकिन आने वाले समय में विकास का खाका मजबूत होगा। उन्होंने कहा कि वह जल्दी ही कोविड केयर सेंटर का दौरा करेंगे ।पत्रकारों के सवाल पर उन्होंने जोड़ा की गौशाला की बेहतरी के लिए भी ठोस उपाय किए जाएंगे ।जिलाधिकारी श्री गुप्ता ने कहा कि गौशाला की व्यवस्था को देखने के लिए देखा जाएगा कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि किसी कर्मचारी दिक्कत आ रही हो और वह ऊपर तक अपनी बात पहुंचा नहीं पा रहा है ,यह देखने की बात है ।नवागत जिलाधिकारी श्री गुप्ता ने सभी पत्रकारों का परिचय जाना और उन्होंने सभागार में मौजूद पत्रकारों से कहा कि वह(पत्रकार) प्रशासनिक व्यवस्था से अलग नहीं है ।बिना आपके सहयोग से जिले के विकास की सच्चाई को परखना मुश्किल है ।उन्होंने पत्रकारों की समस्याओं को दूर करने के लिए भी कहा और आश्वस्त किया कि उनसे मिलने आने वाले किसी भी पत्रकार को इंतजार नही करना पड़ेगा।वहीं सीडीओ अतुल वत्स ने अपने संबोधन में कहा कि टीम वर्क के साथ जनपद में कार्य किया जा रहा है ।कोविड–19 में व्यस्तता रही जिस कारण आप सब से परिचय नही हो पाया।श्री वत्स ने कहा गो– आश्रय केंद्र का और सुधार होगा ।शासन द्वारा योजनाओं को भी मूर्त रूप देने के लिए कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जाएगी ।उन्होंने अंत में कहा कि कोई भी विकास कार्य बिना टीम वर्क के अधूरा है ।जनपद सुल्तानपुर का प्रशासन बेहतर तालमेल के साथ करता रहा है।

अधिवक्ता के निधन पर शोक

सुल्तानपुर। यूपी बार काउंसिल के सदस्य व पूर्व चेयरमैन तथा उत्तर प्रदेश अधिवक्ता महासंघ के प्रांतीय अध्यक्ष अजय कुमार शुक्ला एडवोकेट ने सुलतानपुर अधिवक्ता संघ के वरिष्ठ अधिवक्ता इंदु प्रकाश श्रीवास्तव जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। श्री शुक्ल ने कहा कि स्वर्गीय इंदु प्रकाश श्रीवास्तव बेहद कर्मठ मिलनसार कर्तव्य परायण व्यक्ति थे। उनके निधन से अधिवक्ता समाज की गाड़ी छाती हुई है। उत्तर प्रदेश अधिवक्ता महासंघ के प्रांतीय उपाध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह, सूर्यवंशी, महासचिव नरेंद्र कुमार वर्मा ने भी वरिष्ठ अधिवक्ता स्वर्गीय इंदु प्रकाश श्रीवास्तव जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

कार्यकर्ता स्नेह मिलन व प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

सुल्तानपुर।बीजेपी कार्यकर्ताओं को वैचारिक लड़ाई मजबूती से लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। पार्टी की नीतियों और कार्यक्रमों का प्रचार–प्रसार करने के साथ विपक्ष के कुचक्र और साजिशों का जवाब सकारात्मक कार्यों से दिया जाना चाहिए।रविवार को यह मंत्र मुख्य अतिथि क्षेत्रीय उपाध्यक्ष काशी प्रांत रामचंद्र मिश्रा ने सेक्टर प्रभारी और संयोजकों की प्रशिक्षण कार्यशाला में दिया।कार्यशाला में सेक्टर प्रभारी और संयोजकों के अलावा विधानसभा क्षेत्र स्तरीय पदाधिकारी भी मौजूद थे।इसौली विधानसभा क्षेत्र के श्रीहनुमत इंटर कॉलेज परिसर धम्मौर में कार्यकर्ता स्नेह मिलन एवं सेक्टर प्रभारी और सेक्टर संयोजक के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का संचालन मंडल धम्मौर महामंत्री सुनील पांडे ने किया।इस मौके पर पूर्व जिलामंत्री महेश सिंह,नंदलाल पाल,शिव कुमार यादव, जिला कार्यसमिति सदस्य आरपी मिश्र,मंडल शिवनगर के महामंत्री राजेश दुबे निर्माण,सुरेंद्र प्रकाश दुबे,पूर्व मंडल उपाध्यक्ष राम बहादुर सिंह,पूर्व मंडल अध्यक्ष कुड़वार यज्ञ प्रसाद सिंह, सूर्यभान सिंह, राजेश तिवारी, पवन किशोर कौशल,सुरजीत वर्मा,सुरेश वर्मा,गया प्रसाद यादव,रणजीत सिंह,अशोक सिंह,अनुज दुबे,अभिषेक तिवारी,मनीष शुक्ला, हिमांशु शुक्ला,सौरभ तिवारी अभिषेक शुक्ला व आकाश सिंह सहित कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहे।

वनविभाग के अधिकारियों ने ग्रामीणों के सहयोग से कुएं में गिरी निल गाय को बाहर निकाला

सुल्तानपुर ।बल्दीराय थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम नंदोली मैं एक नीलगाय कुएं में गिर जाने की सूचना ग्रामीणों ने वन विभाग के क्षेत्रीय वन अधिकारी सुल्तानपुर को दी।तत्काल क्षेत्रीय वन अधिकारी द्वारा क्षेत्रीय वन दरोगा बृजेश यादव व बीट प्रभारी राजेंदर प्रसाद गुप्ता को सूचना से अवगत कराने कराते हुए सकुशल कुऐ से बन रोज निकालने का निर्देश दिया गया। मौके पर पहुंची वन विभाग की टीम के द्वारा ग्रामीणों का सहयोग लेते हुए 2 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद कुएं में पानी भरकर नीलगाय को रस्सा बांधकर सकुशल बाहर निकाल लिया गया। वन विभाग की टीम का सहयोग कर रहे हैं मुनीर अहमद, मेराज अहमद, बब्बू आदि ग्राम वासियों को वन विभाग टीम ने सहयोग करने के लिये धन्यवाद दिया। वही ग्रामीणों को टीम ने कहा कि किसी की जान बचाना सबसे बड़ा इस धरती पर पुण्य का कार्य है।

किसानों पर हुए लाठीचार्ज के विरोध में सौंपा ज्ञापन

सुल्तानपुर।अखिल भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिति के नेतृत्व में हरियाणा में किसानों पर हुए लाठीचार्ज के विरोध में ज्ञापन सौंपा गया। किसान विरोधी तीनों अध्यादेशों–मंडी समिति, ए. पी. एम. सी. कानून का अध्यादेश (कृषि वाणिज्य एवं व्यापार संबर्द्धन व सुविधा अध्यादेश),आवश्यक वस्तु कानून 1955 संसोधन अध्यादेश, मूल्य आश्वासन पर (बंदोबस्ती और सुरक्षा समझौता कृषि सेवा अध्यादेश 2020 के खिलाफ प्रदर्शन कर जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन सौंपा गया।इस मौके पर अपनी बात रखते हुए किसान नेता बाबूराम यादव ने कहा कि इस कोरोनाकाल में जब पूरा देश भयानक संकट में है। तब हमारी केंद्र सरकार चोर दरवाजे से किसान विरोधी तीन अध्यादेश ले आयी है।ये अध्यादेश धीरे–धीरे सरकारी मंडियों को खत्म कर देंगे।मंडी कानून में संसोधन डैच(मिनिमम सपोर्ट प्राइज) को खत्म कर देगा।आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 में संशोधन कर सरकार आवश्यक वस्तुओं के भण्डारण काम बंद करनें जा रही है।सब कुछ व्यापारियों के रहमोकरम पर छोड़ दिया जायेगा।ठेका खेती का अध्यादेश किसानों को उनके ही खेत में उन्हें बधुआ मजदूर बना देगा।हम इस प्रदर्शन के माध्यम से इसे वापस लेनें की मांग करते हैं।शारदा पांडेय ने कहा कि सरकार इन्हीं अध्यदेशों के साथ बिजली कानून 2020 भी लायी है,जिसमें बिजली के निजीकरण की वकालत की गयी है।बिजली का निजीकरण किसानों और मजदूरों और आम जनता के लिये बिजली को और अधिक मंहगी कर देगा।हम इसका विरोध करते हैं।संघर्ष समिति के किसान नेता माता प्रसाद सिंह ने कहा कि यह सरकार किसान विरोधी सरकार है।कोरोनाकाल में किसानों की मदद करनें के स्थान पर किसानों के खिलाफ कानून बनाया जा रहा है। किसान नेता रामप्यारे वर्मा ने कहा कि किसानों पर किये गये लाठीचार्ज की की घोर निंदा करते हैं और किसानों पर लगाये गए फर्जी मुकदमों को वापस लेनें की मांग करते हैं।राधेश्याम वर्मा ने कहा कि यह ये अध्यादेश किसानों को आजादी देनें के नाम पर लाये गये हैं लेकिन हकीकत ठीक इसके उलट है ये अध्यादेश व्यापारियों पर लगे प्रतिबंधों से उन्हें आजाद करनें के लिए लाये गये हैं।

कार्यकर्ता स्नेह मिलन व प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

बल्दीराय, सुल्तानपुर।बीजेपी कार्यकर्ताओं को वैचारिक लड़ाई मजबूती से लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। पार्टी की नीतियों और कार्यक्रमों का प्रचार–प्रसार करने के साथ विपक्ष के कुचक्र और साजिशों का जवाब सकारात्मक कार्यों से दिया जाना चाहिए।रविवार को यह मंत्र मुख्य अतिथि क्षेत्रीय उपाध्यक्ष काशी प्रांत रामचंद्र मिश्रा ने सेक्टर प्रभारी और संयोजकों की प्रशिक्षण कार्यशाला में दिया।कार्यशाला में सेक्टर प्रभारी और संयोजकों के अलावा विधानसभा क्षेत्र स्तरीय पदाधिकारी भी मौजूद थे।इसौली विधानसभा क्षेत्र के श्रीहनुमत इंटर कॉलेज परिसर धम्मौर में कार्यकर्ता स्नेह मिलन एवं सेक्टर प्रभारी और सेक्टर संयोजक के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का संचालन मंडल धम्मौर महामंत्री सुनील पांडे ने किया।इस मौके पर पूर्व जिलामंत्री महेश सिंह,नंदलाल पाल,शिव कुमार यादव, जिला कार्यसमिति सदस्य आरपी मिश्र,मंडल शिवनगर के महामंत्री राजेश दुबे निर्माण,सुरेंद्र प्रकाश दुबे,पूर्व मंडल उपाध्यक्ष राम बहादुर सिंह,पूर्व मंडल अध्यक्ष कुड़वार यज्ञ प्रसाद सिंह, सूर्यभान सिंह, राजेश तिवारी, पवन किशोर कौशल,सुरजीत वर्मा,सुरेश वर्मा,गया प्रसाद यादव,रणजीत सिंह,अशोक सिंह,अनुज दुबे,अभिषेक तिवारी,मनीष शुक्ला, हिमांशु शुक्ला,सौरभ तिवारी अभिषेक शुक्ला व आकाश सिंह सहित कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहे।

गर्मसभ में मजदूरों का हक मारकर जे सी बी से करवायज रह है कार्य

सुलतानपुर।प्रवासी मजदूर एवं मनरेगा से काम न कराकर ग्राम सभा में जेशीबी मशीन से काम करवाया जा रहा है। नही मिल रहा मजदूरों को मनरेगा में काम, भुखमरी की कगार पर पहुंचे मजदूर।करौदीकला ग्राम पंचायत कटघरपूरे चौहानपुर की है घटना नही चेत रहे खण्ड विकास अधिकारी फोन ही नही उठाते है । ग्राम प्रधान सचिव की मिली भगत से ग्राम सभा चढ़ रही भ्रष्टाचार की भेट।और भी ग्राम प्रधान के है कई कारनामें धन्ना सेठियो को पट्टे देने से लेकर शौचालय निर्माण सामुदायिक शौचालय, निर्माण में की गयी है अनियमितता ग्रामीणों में है आक्रोश लगा रहे ग्रामीण आरोप।नवागत डीएम रवीश गुप्ता की कब पडेगी ग्राम सभाओं पर नजर ब्लाक करौदीकला की ग्राम सभाये चढ़ रही भ्रष्टाचार की भेंट।

हिंदी दिवस पर वेबिनॉर संगोष्ठी का हुआ आयोजन

! कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान में द्वारा कराया गया आयोजन,हिंदी के समक्ष संभावनायें और चुनौतियाँ विषय पर हुई चर्चा।

! जिले के कई डिग्री कालेज के प्रोफेसर्स समेत तमाम लोगों ने रखे अपने विचार।

सुल्तानपुर।कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान सुलतानपुर में आज यानि 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन शहिंदी के समक्ष संभावनाएँ और चुनौतियाँश विषय पर हिंदी विभाग द्वारा किया गया।संगोष्ठी का शुभारंभ विभागाध्यक्ष, हिंदी डा. प्रतिमा सिंह ने अतिथियों के स्वागत परिचय के साथ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हिंदी केवल भाषा ही नहीं भावों का उमड़ता सैलाब है। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डा. इन्द्रमणि कुमार ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हिंदी हमारे लोक समाज की भाषा है। भारत के सभी आन्दोलनों में इसकी सशक्त भूमिका रही है।

कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता के रूप में मौजूद गनपत सहाय महाविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा डा. नीलम तिवारी ने अपने सम्बोधन में कहा कि हिंदी हमारी संवेदना की भाषा है। संस्कृति, परम्परा, दर्शन और अध्यात्म को जानना है, तो हमें हिंदी को जानना होगा। संगोष्ठी के अन्त में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्राचार्य, के.एन.आई डा. राधेश्याम सिंह ने कहा कि हिंदी को ज्ञान– विज्ञान, तकनीकी और रोजगार की भाषा बनना होगा। इसके प्रसार की गुंजाइश भावना और बुद्धि के समन्वय से ही होगी। इस अवसर पर उप प्राचार्य डा. सुशील कुमार सिंह, डा. वी.पी. सिंह, डा. पी. के. सिंह, डा. डी.के.त्रिपाठी, डा. रामनयन सिंह, पवन कुमार रावत, प्रिया श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

योगी सरकार के भ्रष्टाचार मुक्त का सपना पूरा करने में जुटे कुड़वार सेक्रेटरी

कुड़वार,सुलतानपुर।कोविड–19 कोरोना वायरस जैसी भयानक महामारी में जहां पूरा देश त्रस्त है । महामारी को देख लोगों का रोजगार हो चुका है दो वक्त की रोटी के लिए कड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। लोग जैसे तैसे करके अपने परिवार का भरण पोषण कर रहे हैं। ताजा मामला सुल्तानपुर जिले के कुड़वार विकास खंड का है। जहां सेक्रेटरी साहब लोगों से जन्म प्रमाण पत्र अथवा मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के नाम पर 100 से ध200 तक लिया जा रहा है। कुड़वार सेक्रेटरी काले कारनामों की किसी ने वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। जब ग्रामीणों ने सेक्रेटरी साहब से पूछा कि आप यह पैसा क्यों ले रहे हो तो उन्होंने बताया कि साइन करवाने के लिए आगे भी देना पड़ता है। तब जाकर आगे का काम होता है। भ्रष्टाचार की खेती कहां से शुरू हुई है ये तो अब जांच के बाद ही पता चलेगा। अब देखना यह होगा कि आखिर जिला प्रशासन इन पर क्या कार्रवाई करता है।

'हिंदी दिवस पर वेबिनॉर संगोष्ठी का हुआ आयोजन'

'कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान में द्वारा कराया गया आयोजन'

'हिंदी के समक्ष संभावनायें और चुनौतियाँ' विषय पर हुई चर्चा

'जिले के कई डिग्री कालेज के प्रोफेसर्स समेत तमाम लोगों ने रखे अपने विचार'

सुल्तानपुर। कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान सुलतानपुर में आज यानि 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन शहिंदी के समक्ष संभावनाएँ और चुनौतियाँश विषय पर हिंदी विभाग द्वारा किया गया।संगोष्ठी का शुभारंभ विभागाध्यक्ष, हिंदी डा. प्रतिमा सिंह ने अतिथियों के स्वागत परिचय के साथ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हिंदी केवल भाषा ही नहीं भावों का उमड़ता सैलाब है। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डा. इन्द्रमणि कुमार ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हिंदी हमारे लोक समाज की भाषा है। भारत के सभी आन्दोलनों में इसकी सशक्त भूमिका रही है। कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता के रूप में मौजूद गनपत सहाय महाविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा डा. नीलम तिवारी ने अपने सम्बोधन में कहा कि हिंदी हमारी संवेदना की भाषा है। संस्कृति, परम्परा, दर्शन और अध्यात्म को जानना है, तो हमें हिंदी को जानना होगा। संगोष्ठी के अन्त में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्राचार्य, के.एन.आई डा. राधेश्याम सिंह ने कहा कि हिंदी को ज्ञान– विज्ञान, तकनीकी और रोजगार की भाषा बनना होगा। इसके प्रसार की गुंजाइश भावना और बुद्धि के समन्वय से ही होगी। इस अवसर पर उप प्राचार्य डा. सुशील कुमार सिंह, डा. वी.पी. सिंह, डा. पी.के. सिंह, डा. डी.के.त्रिपाठी, डा. रामनयन सिंह, पवन कुमार रावत, प्रिया श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

ट्रक ने साइकिल सवार को मारी टक्कर,मौत

जयसिंहपुर, गोशाईंगंज,सुल्तानपुर। बाजार के निकट हयातनगर कारगिल गेट के सामने ट्रक ने साइकिल सवार को मारी भीषण टक्कर जिसमें साइकिल सवार की मौके पर ही मौत हो गयी।जिसकी पहचान दीप नरायन सुत रामभजन ,नयापुरवा माधौपुरछतौना के रूप में हुई।गाडी का नं नच,44ज 2916 है।शव को पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमाट्म के लिए भेज दिया।

समाजवादी पार्टी के फ्रंटल संगठनों ने किया प्रदर्शन

सुलतानपुर।समाजवादी पार्टी के चारो फ्रंटल संगघठनो ने राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के आवाहन पर अपनी मागों को लेकर प्रदर्शन किया। बेरोजगारी व प्रवासी मजदूरों को रोजगार देने की मांग उठाते हुए समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं पदाधिकारियों का प्रदर्शन हुआ। सुपर मार्केट स्थित समाजवादी पार्टी कार्यालय पर नगर कोतवाल ओमवीर सिंह पहुंचे। सपाइयों ने ज्ञापन देकर कानून व्यवस्था दुरुस्त करने की मांग उठाई। सपा नेता परमात्मा यादव की मौजूदगी में योगी सरकार के खिलाफ नारेबाजी– प्रदर्शन सम्पन्न हुआ।

ऑपरेशन इंद्रधनुष के तहत जनपद की सावन पर चलाया चेकिंग अभियान

सुल्तानपुर। पुलिस अधीक्षक द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे ऑपरेशन इन्द्रधनुष के अन्तर्गत जनपद की समस्त सीमाओं को सील कर व्यापक चेकिंग अभियान चलाया गया। जनपद सुलतानपुर के समस्त प्र0नि0ध्थानाध्यक्ष द्वारा अपने–अपने क्षेत्रों के अन्तर्गत बैंको की चेकिंग कर बैंक के अंदर तथा एटीएम के आसपास खड़े संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ की गई तथा आने–जाने वाले संदिग्ध व्यक्तियों ध वाहनों को चेक कर कडाई से पूछताछ की गई । आम लोगों से कोरोना संक्रमण से बचाव हेतु मास्क लगाने व सोशल डिस्टेंसिंग के पालन के बारे में बताया गया ।

पुलिस का सराहनीय कार्य,वांछित के9 किया गिरफ्तार

थाना–गोसाईगंज,सुल्तानपुर।पुलिस अधीक्षक द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे ऑपरेशन इन्द्रधनुष के तहत थाना गोसांईगंज पुलिस द्वारा मु0अ0सं0–475/20 धारा 376/452/504/506 IPC से सम्बन्धित अभियुक्त ओमप्रकाश सिंह पुत्र किशुन सिंह निवासी ग्राम वैदहा थाना गोसाईगंज जनपद सुल्तानपुर को प्र0नि0 हरीराम यादव व कां0 अनिल रंजन, कां0 सचिन ढाका द्वारा गिरफ्तार कर जेल भेजा गया ।

'क्षेत्र के युवा नेता ने प्रदेश सचिव से मुलाकात कर कि कई अहम मुद्दों पर वार्ता'

'बल्दीराय/सुलतानपुर' तहसील क्षेत्र के कस्बा माफियात निवासी युवा कांग्रेसी नेता मो सैफ व बल्दीराय ब्लाक अध्यक्ष के प्रबल दावेदार इमरान (मोनू) ने आज प्रदेश सचिव प्रदीप कोरी से उनके आवास पर मुलाकात करने पहुंचे। जिला कांग्रेस कमेटी को मजबूती प्रदान करने के लिए युवाओं की ओर ध्यान अग्रेषित करने पर जोर दिया। युवा कांग्रेसी नेता मो सैफ ने कहा कि जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा एक युवा व तेजतर्रार नेता है और क्षेत्र के लोग चाहते हैं कि आगामी आने वाले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी को मजबूती प्रदान करने के लिए जिले के युवाओं पर अधिक से अधिक ध्यान देने की जरूरत है। जिससे 2022 कांग्रेस पार्टी मजबूती के साथ खड़ी हो सके। श्री सैफ ने कहा कि मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि बल्दीराय ब्लाक अध्यक्ष की बागडोर इमरान उर्फ मोनू के हाथों में सौंपी जाने के बाद कांग्रेस पार्टी को अधिक से अधिक मजबूती प्रदान होगी। जिससे क्षेत्र की युवा पीढ़ी को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। इमरान (मोनू) ने कहा कि मैं पिछले कई वर्षों से कांग्रेस पार्टी के लिए काम कर रहा हूं अगर पार्टी मुझे बल्दीराय ब्लाक अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपेगी तो मैं उसे पूरी निष्ठा व ईमानदारी से पार्टी को और आगे ले जाने का कार्य करूंगा।

अखिल भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिति के नेतृत्व में हरियाणा में किसानों पर हुए लाठीचार्ज

सुल्तानपुर।अखिल भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिति के नेतृत्व में हरियाणा में किसानों पर हुए लाठीचार्ज और किसान विरोधी तीनों अध्यादेशों–मंडी समिति, ए. पी. एम. सी. कानून का अध्यादेश (कृषि वाणिज्य एवं व्यापार संबर्द्धन व सुविधा अध्यादेश),आवश्यक वस्तु कानून 1955 संसोधन अध्यादेश, मूल्य आश्वासन पर (बंदोबस्ती और सुरक्षा समझौता कृषि सेवा अध्यादेश 2020 के खिलाफ प्रदर्शन कर जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन सौंपा गया।इस मौके पर अपनी बात रखते हुए किसान नेता बाबूराम यादव ने कहा कि इस कोरोनाकाल में जब पूरा देश भयानक संकट में है तब हमारी केंद्र सरकार चोर दरवाजे से किसान विरोधी तीन अध्यादेश ले आयी है।ये अध्यादेश धीरे–धीरे सरकारी मंडियों को खत्म कर देंगे।मंडी कानून में संसोधन डैच(मिनिमम सपोर्ट प्राइज) को खत्म कर देगा।आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 में संशोधन कर सरकार आवश्यक वस्तुओं के भण्डारण काम बंद करनें जा रही है।सब कुछ व्यापारियों के रहमोकरम पर छोड़ दिया जायेगा।ठेका खेती का अध्यादेश किसानों को उनके ही खेत में उन्हें बधुआ मजदूर बना देगा।हम इस प्रदर्शन के माध्यम से इसे वापस लेनें की मांग करते हैं।शारदा पांडेय ने कहा कि सरकार इन्हीं अध्यदेशों के साथ बिजली कानून 2020 भी लायी है,जिसमें बिजली के निजीकरण की वकालत की गयी है।बिजली का निजीकरण किसानों और मजदूरों और आम जनता के लिये बिजली को और अधिक मंहगी कर देगा।हम इसका विरोध करते हैं।संघर्ष समिति के किसान नेता माता प्रसाद सिंह ने कहा कि यह सरकार किसान विरोधी सरकार है।कोरोनाकाल में किसानों की मदद करनें के स्थान पर किसानों के खिलाफ कानून बनाया जा रहा है। किसान नेता रामप्यारे वर्मा ने कहा कि किसानों पर किये गये लाठीचार्ज की की घोर निंदा करते हैं और किसानों पर लगाये गए फर्जी मुकदमों को वापस लेनें की मांग करते हैं।राधेश्याम वर्मा ने कहा कि यह ये अध्यादेश किसानों को आजादी देनें के नाम पर लाये गये हैं लेकिन हकीकत ठीक इसके उलट है ये अध्यादेश व्यापारियों पर लगे प्रतिबंधों से उन्हें आजाद करनें के लिए लाये गये हैं।

जरूरतमंदों को लाभान्वित करके विकास को देंगी गति : डीएम

संवाददाता,संत कबीरनगर । नवागत डीएम दिव्या मित्तल रविवार को रात पौने आठ बजे कलेक्ट्रेट के कोषागार में पहुंचकर कार्यभार ग्रहण किया। ये वर्ष 2013 बैच की आइएएस अफसर हैं। डीएम के रूप में यह इनकी पहली पोस्टिंग है। उन्होंने कहा कि कल्याणकारी योजनाओं से जरूरतमंदों को लाभान्वित करके वह गांव और जिले के विकास को गति देने की कोशिश करेंगी। लोगों की समस्याओं का निस्तारण समय से हो, इस पर वह ज्यादा ध्यान देंगी।

बाइक सवार बदमाशों ने व्यवसायी को मारी गोली

संवाददाता,संत कबीरनगर । बाइक सवार बदमाशों ने व्यवसायी को गोली मार दी।संयोग अच्छा रहा कि इनका बेटा बाल–बाल बच गया। इस घटना के बाद अफरातफरी मच गई। लोगों में भय कायम हो गया। फायरिंग के बाद बदमाश घटनास्थल से भाग निकले। घ्मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल व्यवसायी को जिला अस्पताल में उपचार के लिए दाखिल कराया। कोतवाली खलीलाबाद थानाक्षेत्र के बिधियानी गांव के निवासी 50 वर्षीय शाबिर अली पुत्र नवाब अली की बिधियानी मोहल्ले में ही इलेक्ट्रिक की दुकान हैं। ये अपने 28 वर्षीय बेटे शहनवाज के साथ शाम के करीब साढ़े सात बजे दुकान बंद करके घर जाने की तैयारी कर रहे थे। इसी दरम्यान एक बाइक पर सवार दो लोग आए। अचानक असलहे से दो राउंड फायर कर दी। इसके बाद दोनों बदमाश घटनास्थल से भाग निकले। इस घटना में व्यवसायी शाबिर अली के दायें पैर के जांघ में गोली लग गई। संयोग अच्छा रहा कि इनके बगल में खड़े बेटे शहनवाज को गोली नहीं लगी और वह बाल–बाल बच गए। इससे आसपास के लोगों में भय कायम हो गया। सूचना पर पहुंची कोतवाली खलीलाबाद पुलिस ने घायल व्यवसायी को जिला अस्पताल में उपचार के लिए पहुंचाया। कोतवाली खलीलाबाद के प्रभारी रवींद्र कुमार ने कहा कि मामले की जांच की जा रही है।

सील गन हाउस के 21 असलहे थाने पर रखवाए गए

संवाददाता,संत कबीरनगर । तहसील प्रशासन ने रविवार को खलीलाबाद शहर के एक सील गन हाउस का ताला खुलवाकर इसमें रखे 21 असलहों को कोतवाली खलीलाबाद थाने पर जमा करवा दिया है। इसमें एक नाली बंदूक 11, दो नाली बंदूक सात तथा तीन रिवाल्वर शामिल हैं। शासन स्तर से कुछ वर्ष पूर्व इस गन हाउस का लाइसेंस निलंबित कर दिया गया था। एसडीएम–खलीलाबाद राज नारायण त्रिपाठी ने बताया कि शासन के निर्देश पर यह कार्रवाई की गई है।

कोरोना काल में कार्यकर्ताओं ने अच्छी सेवा : आनंद

संवाददाता,संत कबीरनगर । खलीलाबाद विधानसभा के भाजपा सेक्टर प्रमुख व प्रभारियों का रविवार को वर्चुअल प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सूबे के राज्य मंत्री आनंद स्वरूप शुक्ल रहे। खलीलाबाद के विधायक दिग्विजय नारायण चतुर्वेदी उर्फ जय चौबे ने भी संबोधित किया। मुख्य अतिथि ने इस कार्यक्रम में भाजपा सरकार की उपलब्धियों को गिनाया। कोरोना काल में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा अभियान चलाकर नर–नारायण सेवा कार्य की सराहना की। खलीलाबाद के विधायक की सराहना करते हुए कहा कि जनता की समस्याओं के निस्तारण के लिए ये सदैव तत्पर रहते हैं। भाजपा के जिला अध्यक्ष बद्री प्रसाद यादव, जिला महामंत्री अनिरुद्ध निषाद, सुनीता अग्रहरि, प्रभूनाथ ओझा, शिवाजी शुक्ल, राकेश मिश्र, नीतू सिंह आदि मौजूद रहे। वहीं मेंहदावल विधानसभा में सूबे के मंत्री उपेन्द्रनाथ तिवारी और मेंहदावल के विधायक राकेश सिंह बघेल ने मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर महामंत्री विनोद पांडेय, अरुण सिंह, मनीराम यादव, अर्जुन चौधरी, इंद्रसेन सेन सिंह, नीतू सिंह, उदयराज यादव, सचिन राय, बुलबुल सिंह, श्रवण निषाद सहित अन्य लोगों ने वर्चुअल प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

विश्व के सबसे बड़े शब्दकोष वाली भाषा है हिंदी : एडीएम

संवाददाता,संत कबीरनगर । हिंदी विश्व के सभी भाषाओं में सबसे बड़ी शब्दकोष वाली भाषा है। यह हृदय के आंतरिक भाग से निकलने वाली अभिव्यक्ति का सटीक माध्यम है। सरलता के मामले में भी इसका कोई जोड़ नहीं है। जिले के अपर जिलाधिकारी संजय कुमार पांडेय ने यह बातें कही। उन्होंने कहा कि मैने लॉ और लोक प्रशासन की परीक्षा भी हिंदी माध्यम से ही दी। ज्यादा से ज्यादा कार्य हिंदी में ही करते हैं। हिंदी की विशेषता है कि बिना दोहराव के ही विशिष्टता से अपनी बातों को कहा जा सकता है। देश में सर्वाधिक लोग इस भाषा का उपयोग करते हैं। दुनिया के अनेक देशों में लोग इसे अपनाने लगे हैं। अमेरिका, आस्ट्रेलिया, मॉरीशश, फिजी, फ्रेंच गुयाना, दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड समेत अनेक देशों के विश्वविद्यालयों में इसे पढ़ाया जा रहा है। हमें गर्व है कि हम हिंदी भाषी हैं। उन्होंने कहा कि सरकारी कार्यों को भी हिंदी में किए जाने पर वह लगातार जोर देते हैं। हिंदी भाषा संस्कारों और संस्कृति की संरक्षक है। अलंकार, शब्दों की सरसता, विभिन्नता आदि जो हिंदी में है वह कहीं नहीं है। हिंदी देश की एकता और अखंडता को मजबूत करने का भी एक सशक्त माध्यम है।

एक सप्ताह में आधा दर्जन से अधिक पशुओं की मौत

संवाददाता,संत कबीरनगर । पौली ब्लाक में बाढ़ की समस्या दूर होने के बाद अब पशुओं की बीमारी का दौर शुरू हो गया है। एक सप्ताह में आधा दर्जन से अधिक पशुओं की मौत हो चुकी है। बीते शनिवार को नकही गांव के निवासी राजेश नायक की गाय मर गई। रविवार को राम प्रसाद गौड़ की गाय भी अज्ञात बीमारी से मर गई। शिवशंकर, संतोष, रामप्रकाश, सीताराम,जगदीश, धर्मवीर समेत दर्जनों पशुपालकों का कहना है कि पशु बीमार होकर एक दो दिन में दम तोड़ दे रहे हैं। अभी तक पशुपालन विभाग के स्तर से टीकाकरण का कार्य नहीं शुरू किया गया है। पौली के पशु चिकित्सा अधिकारी डा.शिवेंद्र मणि झा ने कहा कि पशुओं के मरने का मामला संज्ञान में नहीं है। जानकारी प्राप्त कर उचित कार्रवाई की जाएगी।

सड़क पर जलजमाव को लेकर ग्रामीणो ने किया प्रदर्शन

संवाददाता,संत कबीरनगर । बस्ती–मेंहदावल–कैंपियरगंज–तमकुहीराज मार्ग (बीएमसीटी) के किनारे स्थित दुधारा चौराहे से दुधारा गांव की तरफ जाने वाले मार्ग पर जलजमाव के कारण चलना कठिन है। इसको लेकर रविवार को गांव के लोगों ने प्रदर्शन कर विरोध जताया। प्रदर्शन के दौरान ग्राम निवासी शमशेर अहमद उर्फ बबलू ने कहा कि मुख्य सड़क के किनारे बने नाले पर मनबढ़ों ने कब्जा कर लिया है।

संक्रमण के साथ ही तेजी से स्वस्थ हो रहे लोग, गोरखपुर मंडल में 17.5 हजार ने जीत ली जंग

गोरखपुर,संवाददाता। कोरोना संक्रमण के मामले जहां बढ़ रहे हैं। वहीं राहत की बात यह है कि ठीक होने वालों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। गोरखपुर मंडल के चार जिलों में अभी तक 17, 508 लोगों ने कोरोना से जंग जीत ली है। समाज को शीघ्र संक्रमण मुक्त करने के लिए जांच की गति बढ़ा दी गई है। स्वास्थ्य विभाग ने संक्रमितों को ढूढ़ने का काम तेज कर दिया है। शुरुआत में जहां प्रतिदिन गोरखपुर, देवरिया, महराजगंज व कुशीनगर की मिलाकर कुल लगभग 80 जांच हो पाती थी। वहीं अब रोज लगभग पांच हजार नमूनों की जांच हो रही है। जगह–जगह कैंप लगाकर अधिक से अधिक लोगों की जांच की जा रही है। इस वजह से संक्रमितों की संख्या बढ़ रही है। लेकिन उसी हिसाब से लोग स्वस्थ भी हो रहे हैं। जांच की संख्या हम जितना अधिक बढ़ा लेंगे, उतनी जल्दी समाज को संक्रमण मुक्त किया जा सकता है। इस दिशा में तेजी से प्रयास किए जा रहे हैं। – डॉ. श्रीकांत तिवारी, सीएमओ गोरखपुर के जिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचना अधिकारी केएन बरनवाल ने बताया कि कोरोना की शुरुआत बहुत भयावह थी। प्रवासियों के आने का सिलसिला शुरू हुआ तो उनके साथ महाराष्ट्र, दिल्ली व गुजरात से संक्रमण के आने की आशंका भी प्रबल हो गई। उनकी स्कैनिंग के लिए जगह–जगह हेल्थ पोस्ट बनाए गए। नौसढ़ से लेकर मगहर तक पांच हेल्थ पोस्ट थे, जिसके नोडल अधिकारी की जिम्मेदारी मुझे दी गई। उस समय यह अफवाह उड़ी थी कि कोरोना लाइलाज बीमारी है। ऐसे में भीतर डर तो था लेकिन समाज व राष्ट्र के प्रति मेरी जिम्मेदारियों ने प्रेरित किया। मैं बिना अवकाश लिए लगातार 20 मार्च से 30 अप्रैल तक हेल्थ पोस्ट पर खड़ा होकर बाहर से आ रहे लोगों की स्कैनिंग करवाता रहा। इसके बाद गीडा स्थित पूर्वांचल डेंटल कॉलेज को क्वारंटाइन सेंटर बनाया गया। मुझे वहां के नोडल का चार्ज दे दिया गया। संदिग्धों को वहां क्वारंटाइन कराया जाता था। उनकी सैंपलिंग करवाना, हालचाल पूछना, रोज स्वास्थ्य संबंधी जानकारी लेना, पॉजिटिव आने पर उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाना आदि कार्य मुझे करने पड़ते थे। यदि किसी संक्रमित का शव आ गया तो उसका अंतिम संस्कार भी मुझे ही करवाना पड़ता था। वहां क्वारंटाइन सेंटर खत्म होने के बाद जुलाई से शहर में सैंपलिंग के लिए लग रहे कैंपों व मेडिकल मोबाइल यूनिट के प्रभारी की जिम्मेदारी मुझे दे दी गई। तभी से घर–घर जाकर लोगों की सैंपलिंग करवा रहे हैं। कैंपों की निगरानी करनी पड़ती है। खुद भी बैठकर लोगों का रजिस्ट्रेशन करना होता है। सुबह नौ बजे से लेकर रात के नौ बजे तक ड्यूटी पर रहता हूं। यह नहीं पता होता कि किसमें संक्रमण है और किसमें नहीं। लेकिन सुरक्षा उपायों को अपनाने के चलते आज तक संक्रमण मुझ तक पहुंच नहीं पाया।

नेपाल के पानी ने भारत के इस जिले में मचाई तबाही, सैकड़ों एकड़ फसल डूबी

गोरखपुर,संवाददाता। नेपाल में हुई बारिश के चलते महाव नाले का जलस्तर रविवार को अचानक बढ़ गया। पानी का दबाव बढ़ने से नौतनवा विकास खंड के अमहवा गांव के सामने रविवार की शाम नाले का पश्चिमी तटबंध इस्लाम के खेत में करीब 25 फीट टूट गया। देखते ही देखते सैकड़ों

एकड़ फसल जलमग्न हो गई। रविवार की भोर में नेपाल की पहाड़ियों पर हुई मूसलाधार बारिश के बाद दोपहर होते– होते महाव नाला उफान पर आ गया। नाले का रौद्र रूप देख इसके समीप बसे गांवों के किसान बांध टूटने की आशंका से सहम उठे। पानी के बढ़ते दबाव को न झेल पाने के कारण नाले का रेत से बना बांध बरगदवा क्षेत्र के अमहवा गांव के सामने टूट गया। इस वर्ष बीते 14 जुलाई को भी तटबंध दो स्थानों पर टूटा था। बांध टूटने की सूचना पर उपजिलाधिकारी प्रमोद कुमार ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने सिंचाई विभाग के अधिकारियों से अविलंब कटान स्थल को भरने के लिए निर्देशित किया है। सिंचाई खंड दो के अधिशासी अभियंता धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि शीघ्र ही बंधे की मरम्मत करा दी जाएगी। नेपाली नदियों में उफान का असर हर साल महरजागंज और कुशीनगर जिले पर पड़ता है। नेपाल में भारी बारिश होने पर नेपाली नदियों से होकर यह पानी भारत के क्षेत्र में आता है और यहां नदियां उफान पर आ जाती हैं। पिछले वर्ष भी महाराजगंज में नेपाली पानी से काफी तबाही हुई थी।

गोरखपुर में नहीं होगी ऑक्सीजन की कमी, गीडा में बढ़ेगा उत्पादन

गोरखपुर,संवाददाता। कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या जैसे–जैसे बढ़ रही है, ऑक्सीजन की मांग भी बढ़ने लगी है। ऑक्सीजन की खपत बढ़ने के कारण आपूर्ति दे पाने वाली फर्मों पर दबाव बढ़ा है। जिस गति से ऑक्सीजन की खपत हो रही है, उसकी किल्लत की आशंका पैदा हो गई है। ऑक्सीजन की कमी के कारण किसी का दम न घुटे, इसके लिए प्रशासन युद्ध स्तर पर तैयारियां कर रहा है। फिलहाल मेडिकल कॉलेज में ऑक्सीजन का बैकअप होने का दावा किया जा रहा है लेकिन इसे और बढ़ाने के तरीकों पर लगातार विचार चल रहा है। कई दौर की बैठकें हो चुकी हैं। लिक्विड ऑक्सीजन आपूर्ति बनाए रखने के लिए कंपनियों से बात चल रही है। मेडिकल कॉलेज के साथ ही अन्य चिकित्सालयों में भी आपूर्ति की समस्या होने की आशंका व्यक्त की जा रही है। आपूर्ति सामान्य रहे, इसके लिए गीडा में उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। मेडिकल कॉलेज में 300 बेड का कोविड अस्पताल शुरू हो गया है। यहां लिक्विड ऑक्सीजन का प्लांट लगाया गया है। जिसकी क्षमता 20 हजार किलोलीटर है। इसके अतिरिक्त पहले से नेहरू चिकित्सालय में भी लिक्विड ऑक्सीजन प्लांट है। लिक्विड ऑक्सीजन की बेडों तक आपूर्ति पाइप लाइन के जरिए होती है, इसलिए जिन बेडों पर पाइप लाइन नहीं है, वहां सिलेंडर के जरिए आपूर्ति होती है। मेडिकल कॉलेज में इन दिनों 500 जंबो सिलेंडर की मांग प्रतिदिन है। जबकि पहले यह ढाई सौ से तीन सौ के करीब थी। जिलाधिकारी के. विजयेंद्र पांडियन ने शनिवार को मेडिकल कॉलेज में बैठक कर ऑक्सीजन की आपूर्ति को बेहतर बनाने पर मंथन किया। वहां जंबो सिलेंडर का बैकअप 622 सिलेंडर से बढ़ाकर 1200 करने की तैयारी है। कॉलेज में बने नए कोविड वार्ड में लगे ऑक्सीजन प्लांट में ऑक्सीजन की खपत अधिक है, प्रतिघंटे करीब 60 लीटर ऑक्सीजन की खपत होती है। आमतौर पर जो कंपनी लिक्विड ऑक्सीजन का प्लांट लगाती है, उसकी आपूर्ति की जिम्मेदारी उसी की होती है। निर्बाध आपूर्ति की कोशिश भी होती है लेकिन जिस तरह से पूरे देश में ऑक्सीजन की किल्लत हो रही है, उसे देखते हुए दूसरे राज्यों से अडंगा लग सकता है। यहां दूसरे राज्यों से ही लिक्विड ऑक्सीजन की आपूर्ति होती है। शहर के करीब छह सरकारी एवं निजी चिकित्सालयों में कोविड मरीजों का इलाज चल रहा है। यहां प्रतिदिन करीब 300 ऑक्सीजन सिलेंडर की मांग है। पहले यह मांग 100 सिलेंडर तक थी। भविष्य में मांग और बढ़ सकती है। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की मानें तो ऑक्सीजन की आपूर्ति करने वाली फर्म ने भविष्य में वैकल्पिक व्यवस्था के लिए सभी को चेता दिया है। इसके अतिरिक्त छोटे सिलेंडरों की मांग भी प्रतिदिन 70 सिलेंडर तक पहुंच गई है। घर पर भी लोग सिलेंडर ले जा रहे हैं। प्रशासन की ओर से गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण (गीडा) क्षेत्र में आने वाले कुछ दिनों में करीब 2500 ऑक्सीजन सिलेंडर का उत्पादन और बढ़ाने की कोशिश शुरू की गई है। गीडा में ऑक्सीजन का प्लांट संचालित करने वाले प्रवीण मोदी के यहां फिलहाल 800 सिलेंडर का उत्पादन रोज होता है, लेकिन रोज इतनी खपत भी हो जाती है। उनकी ओर से प्लांट का विस्तार किया जा रहा है, जिसके लिए जिलाधिकारी के प्रयास से लाइसेंस मिल गया है। लिक्विड ऑक्सीजन की व्यवस्था भी कराई जा रही है। विस्तार के बाद 500 सिलेंडर प्रतिदिन और तैयार हो सकेगा। इसके साथ ही सेक्टर 15 में लखनऊ की फर्म की ओर से आरके ऑक्सीजन के नाम से प्लांट लगाया जा रहा है। गीडा सीईओ के प्रयास से सारी औपचारिकताएं लगभग पूरी हो चुकी हैं और 22 से 25 सितंबर के बाद यहां से करीब 500 सिलेंडर का उत्पादन शुरू हो जाएगा। कुछ दिन में इस क्षमता को 1200 सिलेंडर तक बढ़ाया जाएगा। कंपनी के पार्टनर के अनुसार सीईओ की ओर से व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास कर इसे जल्द शुरू कराया जा रहा है, अन्यथा कम से कम तीन महीने लगते। इसके अतिरिक्त गीडा में ही करीब पांच वर्ष से बंद पड़े एक अन्य प्लांट को चालू कराने के प्रयास में जिलाधिकारी लगे हैं। इस प्लांट को चलाने की जिम्मेदारी किसी अन्य को मिल सकती है। सभी की लाइसेंस से जुड़ी समस्या को दूर किया जा रहा है। नए आवंटित 68 भूखंडों में से एक प्रस्ताव ऑक्सीजन उत्पादन का भी है, जल्द ही उस फैक्ट्री को स्थापित करने की कोशिश हो रही है।

मेंटीनेंस के चलते सुबह से गुल रही कई मुहल्लों की बिजली

संवाददाता,फीरोजाबाद। रविवार को लाइनों पर फॉल्ट व मेंटीनेंस कार्य के चलते शहर के कई मुहल्लों में बिजली का संकट रहा। गर्मी में घंटों बिजली गुल होने के कारण लोगों का हाल–बेहाल हो गया। गर्मी के मौसम में शहर में बिजली का संकट लगातार गहराता जा रहा है। हर रोज घंटों बिजली गुल होने के कारण लोगों के पसीने छूट रहे हैं। विद्युत विभाग द्वारा रविवार को गांधीपार्क विद्युत सबस्टेशन के अंतर्गत जलेसर रोड पर 11 केवी का जर्जर पोल बदलने का कार्य कराया गया। इससे जलेसर रोड, बर्फखाना चौराहा, मोहन नगर, शिवनगर, आर्चिड मॉल सहित आसपास के मुहल्लों में सुबह दस बजे से दोपहर दो बजे तक बिजली नहीं आई। सुबह से कूलर, पंखे बंद होने के कारण गर्मी लोगों का हाल–बेहाल हो गया। दोपहर दो बजे के बाद विद्युत आपूर्ति सुचारू होने पर राहत मिल सकी। 11 केवी लाइन पर फॉल्ट होने के कारण सुहाग नगर, भीमनगर, करबला, देवनगर, पुरुषोत्तम नगर क्षेत्र में शाम तक बिजली का संकट रहा। हिमायूंपुर, रहना, नगला भाऊ, मथुरा नगर, रसूलपुर, रामनगर, संतनगर क्षेत्र में दिन में कई बार बिजली की आवाजाही चलती रही, जिससे लोग परेशान रहे। जेई देवेंद्र बघेल ने बताया कि जलेसर रोड पर जर्जर पोल बदलने का कार्य कराया गया था, जिससे सप्लाई दोपहर तक बंद रही।

रोकती रही जनता और जेसीबी ने खोद डाली पूरी सड़क

संवाददाता,फीरोजाबाद। नगर निगम की लापरवाही देव नगर के लोगों पर भारी पड़ रही है। कनेक्शन जोड़ने के लिए जबरन टीम ने एमजी कॉलेज के सामने देव नगर तक सड़क खोद दी। लोग यह कहकर रोकते रहे कि यहां पर पाइप लाइन नहीं है, लेकिन निगम कर्मी नहीं माने। इसके बाद खोदी सड़क पर मिट्टी डालकर टीम चली गई। गर्मी के मौसम में मुहल्ला देवनगर नगर में कई दिनों से पेयजल का संकट बना हुआ है। क्षेत्रीय लोगों की शिकायत पर जलकल विभाग द्वारा 250 मीटर पाइप लाइन डालने का कार्य शुरू कराया था, लेकिन ठेकेदार ने आधी लाइन डालकर काम बंद कर दिया। पूर्व सभासद सुनील राठौर के साथ क्षेत्रीय लोगों ने शनिवार को सुबह नगर निगम पहुंचकर विरोध प्रदर्शन किया। जलकल विभाग के एई शिवराज वर्मा ने देवनगर में छह इंच की पाइप लाइन से कनेक्शन जुड़वाने के

लिए रात में जेसीबी से सड़क की खोदाई शुरू कराई थी। यह काम दोपहर तक चलता रहा, लेकिन सड़क के नीचे कहीं पाइप लाइन नहीं मिली। क्षेत्रीय लोग मना करते रहे कि यहां छह इंच की कोई पाइप लाइन नहीं है, लेकिन निगम कर्मी नहीं माने। पाइप लाइन न मिलने पर ठेकेदार ने दोपहर में गड्ढा बंद करना शुरू कर दिया। इधर सड़क खोदाई से आवागमन भी पूरी तरह बाधित होने से लोगों की मुश्किल बढ़ गई। पूर्व सभासद का कहना है कि जलकल विभाग की लापरवाही के कारण क्षेत्र में पानी का संकट दूर नहीं हो सका। दस दिन से लोग पानी को तरस रहे हैं।

खेत की रखवाली करते किसान को मैक्स ने रौंदा, मौत

शिकोहाबाद। नसीरपुर के गांव ब्रह्माबाद निवासी किसान को शनिवार देर शाम खेत की रखवाली करते समय मैक्स ने रौंद दिया। परिवारीजन गंभीर घायल किसान को शिकोहाबाद अस्पताल ले जा रहे थे, रास्ते में मौत हो गई। सागर कुमार (42) गांव के पास सड़क किनारे स्थित खेत की रखवाली के लिए गए हुए थे। वह खेत के किनारे सड़क पर बैठे हुए थे। इस बीच नसीरपुर से शिकोहाबाद की तरफ जा रही । अनियंत्रित मैक्स ने उन्हें रौंद दिया। सूचना मिलने पर स्वजन भी यहां पहुंच गए।

सीवर लाइन के लिए खोद डाली दो साल पहले बनी 50 लाख की सड़क, घरों में कैद हुए दो दर्ज मोहल्लों के निवासी

गोरखपुर,संवाददाता। नंदानगर क्षेत्र के छावनी रेलवे स्ष्टेशन से नीना थापा जाने वाले मार्ग पर सीवर लाइन डालने के लिए खोदी गई सड़क दो साल पहले ही बनाई गई थी। नगर निगम के बोर्ड फंड से बनाई गई सड़क के निर्माण पर 50 लाख रुपये खर्च किए गए थे। दो साल में सड़क की खोदाई पर झरना टोला की पार्षद ने आपत्ति जताई है। पार्षद का कहना है कि ज्यादातर इलाकों में खोदाई के लिए जलनिगम ने नगर निगम से अनापत्ति प्रमाण पत्र भी नहीं लिया है। सीवर लाइन बिछने के बाद सड़क बनवाने में फिर मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। नीना थापा क्रॉसिंग और झरना टोला पुलिस चौकी के बीच सड़क की खोदाई होने से 12 से ज्यादा कॉलोनियों के नागरिकों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। जल निगम के अफसरों का कहना है कि खोदाई के तत्काल बाद सीवर लाइन डालकर उस पर मिट्टी डाल दी जा रही है ताकि नागरिकों को आने–जाने में दिक्कतों का सामना न करना पड़े। इसके बाद भी कई जगह नागरिकों को परेशानी हो रही है सीवर लाइन बिछाने के लिए सड़क की खोदाई होने से कई कॉलोनियों के नागरिकों ने अपने चार पहिया वाहन दूसरी कॉलोनियों में खड़े किए हैं। टीचर्स कॉलोनी निवासी आलोक कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि उनकी कार सूर्यबली विहार कॉलोनी में खड़ी है। सड़क खोदाई के कारण आने–जाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। प्रत्ध्युष यादव ने बताया कि अचानक सीवर लाइन डालने का काम शुरू करा दिया गया है। नागरिकों को वैकल्पिक व्यवस्ध्था का मौका भी नहीं मिला।

रेलवे कॉलोनी में चोरों का आतंक, चार मकानों के ताले तोड़े

संवाददाता,फीरोजाबाद। बीती रात चोर रेलकर्मी के घर के ताले तोड़कर हजारों की नकदी व आभूषण चोरी कर ले गए। चोरों ने तीन और घरों के ताले चटकाए, लेकिन जगार होने के कारण वह अपने मंसूबों में पूरे नहीं हो सके। पीड़ित ने घटना की तहरीर दी है। रेलवे की रेस्टकैंप कॉलोनी निवासी मोहनलाल मीणा रेलवे में सीआईटी के पद पर तैनात है। शनिवार रात घर का ताला लगाकर ड्यूटी पर गए थे, इसी दौरान चोर ताले तोड़कर 7300 रुपये की नकदी, एक सोने की अंगूठी, एक जोड़ी पाजेब एवं अन्य सामान चोरी कर ले गए। घटना की जानकारी सुबह पड़ोसियों को होने पर उन्होंने मोहनलाल को फोन किया। चोरों ने निकट ही स्थित सोबरन सिंह मीणा व रामअवतार यादव सहित एक घर के ताले चटकाए, लेकिन जगार होने के कारण वह चोरी की घटना को अंजाम नहीं दे सके। पुलिस ने मौके पर जाकर घटना की जानकारी ली। नगला सिघी के गांव टीकरी में भी चोरों ने मकान की दीवार काटकर चोरी की घटना को अंजाम दिया। चोर राजेश कुमार के घर से कमरे में रखी एक सोने की चेन, चार अंगूठी, सिलाई मशीन व तीस हजार की नकदी चोरी कर ले गए।